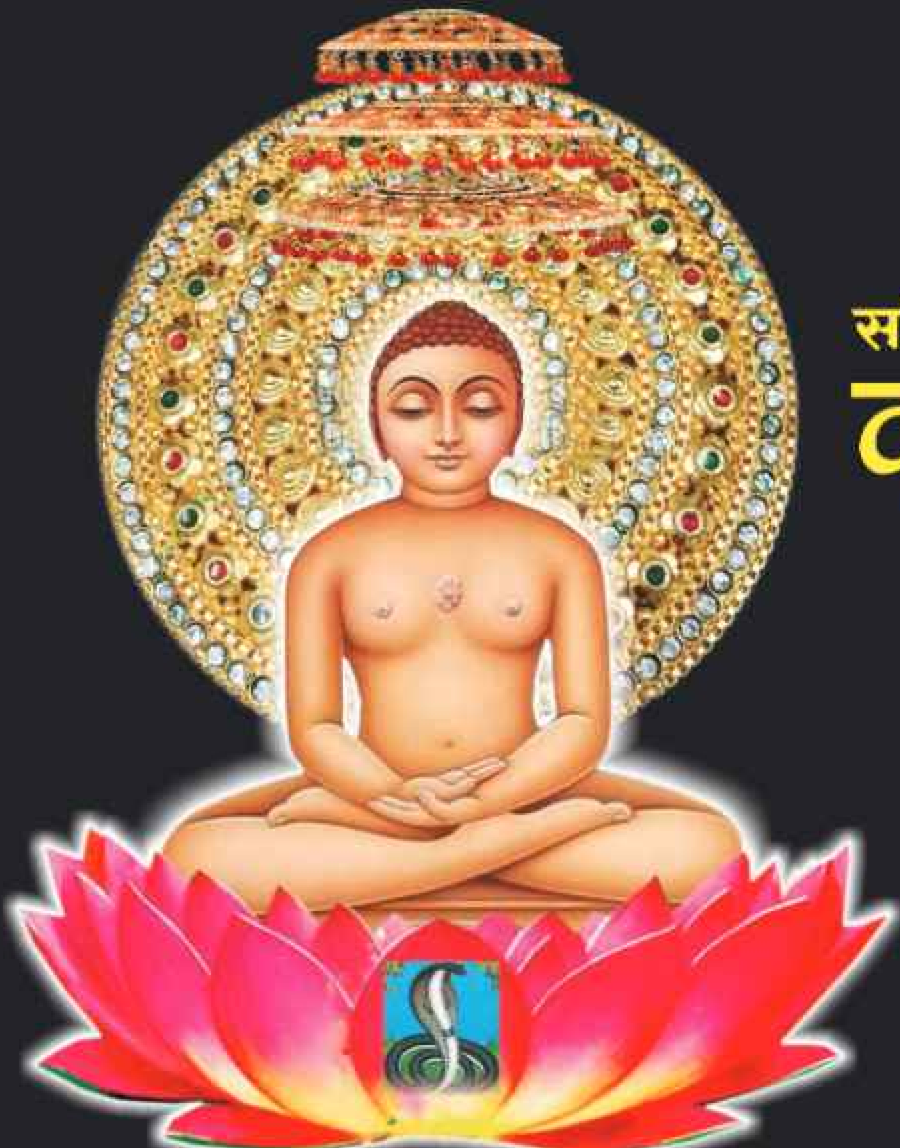

उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक,
राहु-केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी
श्रीमद्देवेन्द्र कीर्ति प्रणीत

सचित्र

कल्याण मंदिर स्तोत्र

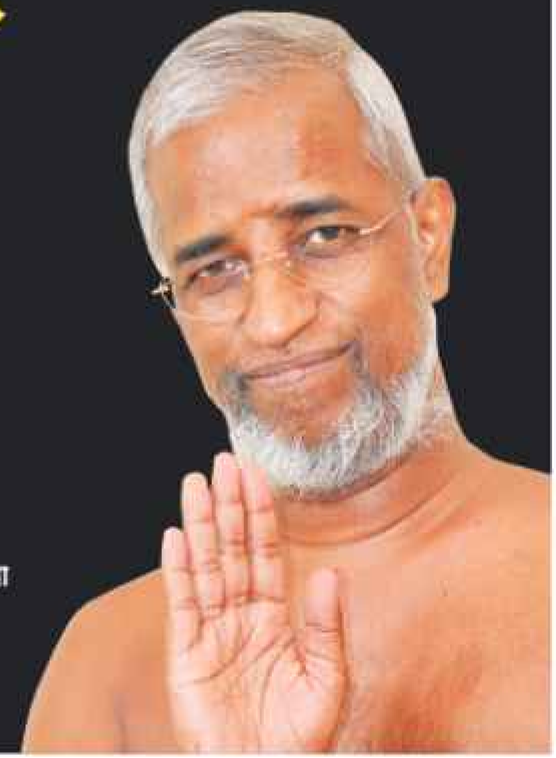

प्रवाचक :
जीवन है पानी की बूँद भजन के 3500 छंदों के रचयिता व प्रणेता
उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

2

उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक, राहु-केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी

श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति प्रणीत

सचित्र

कल्याण मंदिर स्तोत्र

प्रवाचक

जीवन है पानी की बूँद भजन के 3500 छंदों के रचयिता व प्रणेता

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कृति– उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक, राहु–केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी

श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति प्रणीत

सचित्र

कल्याण मंदिर स्तोत्र

मूल रचयिता	–	श्रीमद्देवेन्द्र कीर्ति (आचार्य कुमुदचन्द्र)
शुभाशीष	–	प.पू. सूरिगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज
प्रवाचक/पद्यानुवाद	–	उच्चारणाचार्य विनम्रसागर
प्राकृत पद्यानुवाद	–	श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी
पावन प्रसंग	–	उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज के दसवें आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में
प्रथमावृत्ति	–	5000, आगरा (उ.प्र.) सन् 2020
प्राप्ति स्थान	–	⁕ धर्म प्रभावना (ट्रस्ट) न्यास, भिण्ड (म.प्र.) मो. 09826801542 ⁕ समता तीर्थ धाम, सीपुर (राज.) मो. 09828613614 ⁕ देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 07580223344 ⁕ निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति, भिण्ड (म.प्र.) 09425127061

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर
मो. 8290526049, 8619727900 jyotigraphics84@gmail.com

ज्ञानदान न्यौछावर राशि
200/– मात्र

Follow us
विनम्र देशना चैनल
You Tube
Subscribe
जरूर करें...
बेल आईकन पर भी क्लिक करें...
Shankar Bhaiya
Vinamra Deshna Parivar
M.: 7999877637, 9414426947
जिनवाणी
विनम्रवाणी

परिचय के गवाक्ष में गुरुवर गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

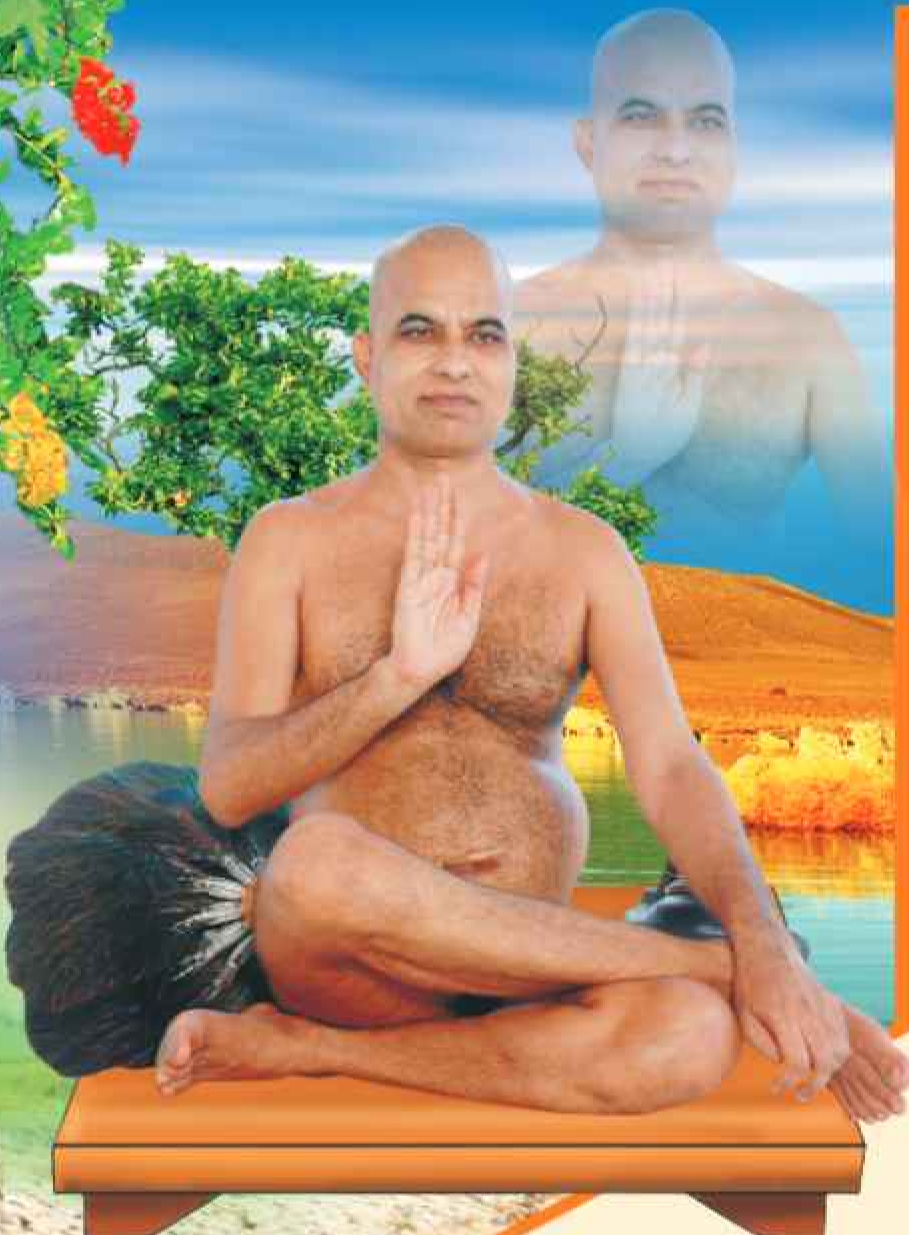

पूर्व नाम	–	अरविन्द जैन (टिन्नू)
जन्म स्थान	–	पथरिया (म.प्र.)
जन्म तिथि	–	2 मई, 1963, गुरुवर (वैशाख सुदी 9 वि.सं. 2020)
माता–पिता	–	श्रीमती श्यामादेवी जैन (समाधिस्थ आर्यिका विशांतश्री माताजी) श्रीमान् कपूरचन्द्र जी जैन (संघस्थ पू. क्षुल्लक विश्ववंद्यसागर जी)
बहिन	–	श्रीमती मीना जैन, श्रीमती विमला जैन
भाई	–	श्री विजय कुमार, श्री सुरेन्द्र कुमार, बा.ब्र. श्री नरेन्द्र भैयाजी
लौकिक शिक्षा	–	इण्टर, मध्यमा (पथरिया, श्री शांति निकेतन दि. जैन संस्कृत विद्यालय, कटनी (म.प्र.)
क्षुल्लक दीक्षा	–	20 फरवरी, 1980 (फाल्गुन शु. 5 सं. 2036 बुधवार, शहडोल (म.प्र.)
नामकरण	–	पूज्य क्षुल्लक श्री 105 पूर्णसागर जी महाराज
क्षु. दीक्षा गुरु	–	प.पू. तपस्वी सम्राट आचार्य श्री सन्मतिसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा	–	9 दिसम्बर, 1983 (मगसर शु. 5, वि.सं. 2040, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
नामकरण	–	प.पू. मुनि श्री 108 विरागसागर जी महाराज
मुनि दीक्षा गुरु	–	प.पू. निमित्तज्ञानी, वात्सल्य रत्नाकर, आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	8 नवम्बर, 1992 (कार्तिक शु. 13, 13 वि.सं. 2049) रविवार, द्रोणगिरि
संयम सृजन	–	आचार्य 8, गणिनी 4, मुनि 60, आर्यिका 53, ऐलक 6, क्षुल्लक 32, क्षुल्लिका 19 तथा ब्रह्मचारी भाई–बहिनें एवं कुल 182, प्रशिष्य 90
चातुर्मास	–	1980 से 2019 तक क्रमश:
साहित्य सृजन	–	बारसाणुपेक्खा ग्रंथ पर 1100 पृष्ठीय ''सर्वोदया'' संस्कृत टीका, 2. रयणसार ग्रंथ पर 1000 पृष्ठीय ''रत्नत्रय वर्धिनी'' संस्कृत टीका, 3 पाहुडद्वय (लिंगसीलपाहुड) पर ''श्रमणप्रबोधिनी'' संस्कृत टीका लिख रहे हैं। 4. अनेक शोधात्मक, चिन्तनीय, बालकोपयोगी कथा, अनुवाद, गद्य, संपादित साहित्य, जीवन एवं प्रवचन साहित्य 150 से अधिक पुस्तकें।
विशेष त्याग	–	कूलर, पंखा, लेपटॉप, मोबाईल, हीटर, नेलकटर सन् 1985 से, थूकने का त्याग सन् 1983 से।
पंचकल्याणक	–	लघु वृहद् मिलाकर 55
उपाधि	–	डाक्ट्रेट सहित 35 उपाधियाँ

गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

आशीर्वाद

ॐ

कल्याणमंदिर स्तोत्र - प.पू. आचार्य श्री कुमुदचन्द्र देव द्वारा लिखित गई. यह स्तोत्र जिसमें भगवान पार्श्वनाथ स्तुति है जो सुगम सरल और अर्थपूर्ण होने पर भी अनेकों मंत्र-तंत्र एवं यंत्रों से युक्त अतिशयों से युक्त है।

अति रम्य आह्लाद शक्ति है फिर जब यह ऋद्धि नाम व गुणों से जुड़ गयी है तब यह अवश्य ही कष्टहारी एवं सुख-प्रदायी हो गयी है।

श्रमणाचार्य श्री विनम्रसागर जी ने उक्त स्तोत्र का पद्यानुवाद - अनुवाद तथा आंग्ल भाषा में प्रस्तुति दी है। यह निश्चित ही वर्तमान युग में सुभावों के लिये चमत्कार होगी। मेरा उन्हें तथा उनके इस कार्य के लिये शुभाशीष।

ॐ नमः
7/1/12/2545
[illegible]

प्रवाचक की कलम से

भक्ति की अभिव्यक्ति में सर्वशक्तियाँ समाहित हैं, विनम्रता की सीढ़ी पर ज्ञान के ठोस कदमों की चाप से मंजिल के रास्ते को भक्ति ही सहजता व सरलता से तय करती है। सैद्धांतिक व आध्यात्मिक ज्ञान, नय व न्याययुक्त भी हो और शुद्धचर्या से युक्त भी होने पर यदि सच्ची हार्दिक भक्ति नहीं होगी तो ऐसा शुद्ध ज्ञान और चारित्र भी मोक्ष के द्वार के कपाट नहीं खोल सकता है यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ज्ञान व चारित्र में भक्ति की श्रेष्ठता सर्वोत्तम है। यह सच्ची भक्ति ही सम्यक्त्व का मुख्य कारण है इस भक्ति में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान् करना, आत्मानुभव करना, दर्शन मोहनीय का उपशम-क्षय-क्षयोपशम, कषायों पर उपशमन, अहंकार का विनाश, विनम्रता का होना, ये सभी गर्भित हैं। भक्ति सर्वांगीण है। यह स्तोत्र भक्ति के चरमोत्कर्ष विचारों को उत्पन्न करने में श्रेष्ठ स्थान रखता है। भक्ति का रसायनमयी अमृत जिसने पिया है वह स्व-रुप होने के साथ प्रशस्त रहते हुए स्वयं के स्वभाव में अलमस्त भी रहेगा।

हम अपने जीवन में राहु-केतु ग्रहों से दु:खी रहते हैं जिसे अन्य लोग कालसर्प योग कहते हैं, हमेशा बीमारियों से पीड़ित हैं, दुर्घटनाओं से व्यथित हैं, असफलताओं के कारण हताश हैं, परिवार में बहुत ही त्रसित हैं, कई संकटों से घिरे हुए हैं तो आप यह कल्याण मंदिर स्तोत्र का प्रतिदिन शुद्ध उच्चारण में मंत्रोच्चार सहित पाठ दीप जलाकर करिये एवं 108 दिन तक संकल्पपूर्वक विधान करिये जिसमें लोंग व फल चढ़ाइये जिससे आपको शीघ्र ही इन परेशानियों से मुक्ति मिलना-संभव है।

ऋद्धिमंत्रों से सहित भक्ति सरोवर इस कल्याण मंदिर स्तोत्र की शुद्धतापूर्वक सचित्र प्रस्तुति ज्ञानसरोवर के राजहंस, भव्यजनों की श्रद्धा के हिमालय मम हृदय कमल सम्राट सूरिगच्छाचार्य परम पूज्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी महामुनिराज के परम आशीर्वाद से पूर्ण हुई है उनके द्वय चरणों में त्रयभक्तियुत् विनम्र नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

–आचार्य विनम्रसागर

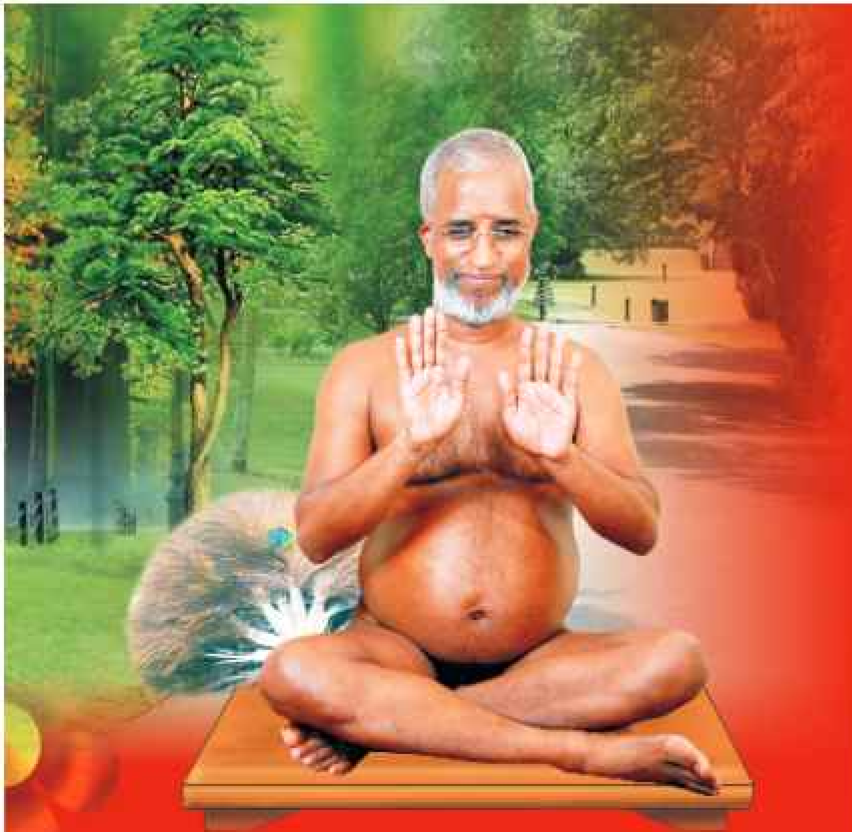

परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

नाम	: रतनस्वरूप जैन (नवरत्न)
पिता का नाम	: पं. श्री मेरचन्द जी जैन (समाधिस्थ मुनि 108 विश्वकीर्तिसागर जी)
माता का नाम	: श्रीमती चमेलीदेवी जैन
जन्म तिथि	: 01 अक्टूबर 1963, भिण्ड
शिक्षा	: एम.कॉम. (डिस्ट्रिक टॉप) 8 वर्ष सर्विस
ऐलक दीक्षा	: 09/08/1992, द्रोणगिरि
मुनि दीक्षा	: 08/06/2003, ललितपुर
आचार्य पदारोहण	: 12/12/2010, बाँसवाड़ा (राज.)
रुचि	: काव्य रचना, वैज्ञानिक, सैद्धान्तिक, मनोवैज्ञानिक खोज चिंतन, लेखन व गहन तर्कशलीलता
दीक्षा गुरु	: गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव

जीवन के झरोखे से गुरुवर

बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि के धारक एम.कॉम की परीक्षा जिले में प्रथम स्थान विशेष योग्यता के साथ प्राप्त की। आठ वर्ष तक शिक्षक पद पर रहे, प्रोफेसर बनना तय हो गया था। ICSI और CA एवं PSC की तैयारी हो चुकी थी तभी आचार्य विरागसागर जी महाराज को पाकर वैराग्य हो गया। आपके मामाजी कलेक्टर, प्रोफेसर, जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली, चाचाजी बैंक मैनेजर, डॉक्टर हैं। भिण्ड जिले से लगभग 50 लोग मुनि हुए हैं उनमें सबसे ज्यादा लौकिक शिक्षा में आप ही पारंगत हुए। गुरुवर श्री में हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत और ज्योतिष, हस्तरेखा आदि का ज्ञान समाविष्ट है।

आचार्य श्री ने आचार्य श्री से धवल जी, जयधवल जी, महाधवल जी, सिद्धांत, आगम-अध्यात्म, न्याय, नय, संस्कृत व प्राकृत व्याकरण एवं चारों अनुयोगों का विशेष अध्ययन किया है। शब्द विज्ञान के धनी व काव्य रचना में महाकवि हैं, जिन्होंने ''जीवन है पानी की बूंद'' पर 3500 छंद लिखे हैं जो सारे भारत में गूंज रहे हैं, ''कितना प्यारा तेरा दुआरा'', ''धीरे-धीरे चलो जी मंदिर'', ''चेतन पिंजरे वाली ना'', ''कर ले आतम ध्यान बाबा'', ''मेरा जीवन कोरा कागज'' एवं कई देश भक्ति के गीतों को धर्ममय बना दिया। आचार्यश्री ने लगभग 1000 कविताएँ, 500 भजन, 350 गजलें (उर्दू में) 2000 मुक्तक, 1500 पहेलियाँ, 2000 Engligh Quotation लिखे हैं तथा भक्तामर स्तोत्र को दस तरह से एवं कई स्तोत्रों का पद्यानुवाद करके अपने चिंतनों की पराकाष्ठा, विलक्षण काव्यशैली और अध्यात्म की उच्चतम संवेदना की अभिव्यक्ति का परिचय दिया है।

लगभग 40 पुस्तकों की रचना करके जन-जन को कई तरीकों से धर्मज्ञान को सामने रखा है। English में Philosophy of Karma, Moral Science for children Part I,II,III, What is truth, Know your future एवं What is Life ये पुस्तकें आज की युवा पीढ़ी के लिये उपयोगी सिद्ध हैं। णमोकार महामंत्र व उसकी महिमा को अंग्रेजी में इस ढंग से सरल भाषा में लिखा है जिसे णमोकार मंत्र की तरह गा भी सकते हैं और अर्थ भी बहुत सरल है। ऐसा णमोकार मंत्र जैन जगत में पहली बार लिखा गया है।

आचार्य श्री तेरापंथ और बीसपंथ के विवादित झंझटों से दूर सिर्फ निर्ग्रन्थता के पोषक हैं। प्रवचन शैली सबसे निराली, आवाज में गीत-संगीत है, सिद्धांत और आध्यात्मिक बात को न्यायिक ढंग से स्पष्ट करने में माहिर, कभी भी विरोधाभास-आलोचनात्मक वचनों को नहीं बोलना, सरलता-सौम्यता, विद्वत्ता, विनम्रता से युक्त आगमानुकूल चर्या एवं सभी रूढ़िवादिताओं व हठाग्रह से दूर, तर्क में ओशो से भी गंभीर तेज और इतना होते हुए भी महाकवि-हर छंद पर कविताएँ, गजल एवं भजनादि लिखने व गाने की क्षमतायें सभी एक साथ एक व्यक्ति में होना आश्चर्य ही नहीं बहुत बड़ा चमत्कार है।

ऐसे सूरज, चाँद की तरह ज्योतिर्मय गुरुवर श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज के चरणों में श्रद्धा सहित विनम्र नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

वर्षायोग समिति-2018, भिण्ड

परमार्थ यात्रा दर्पण

मुनि श्री विरागसागर जी जब भिण्ड नगर में चातुर्मास रत थे, तब उनके दर्शन कर वैराग्य, निस्पृहता एवं चुम्बकीय व्यक्तित्व से आकर्षित हो हम उग्र वैरागी के दर्शन कर मन में वैराग्य के अंकुर फूट पड़े।

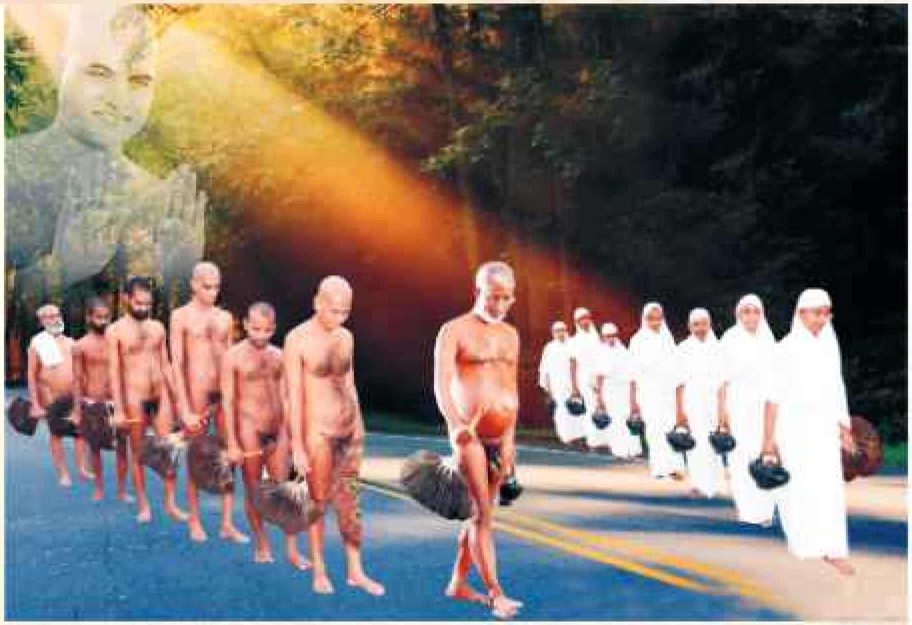

ब्रह्मचर्य व्रत – जनवरी 1988 में आचार्य विशुद्धसागर जी के साथ आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लावन गाँव में ग्रहण किया।

सप्तम प्रतिमा – जून 1991 में पन्ना में पूज्य गुरुदेव से सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किए।

दशम् प्रतिमा – 21 नवम्बर 1991 को श्रेयांसगिरि अतिशय क्षेत्र पर दशम प्रतिमा के व्रत धारण कर वर्णीजी कहलाए।

ऐलक दीक्षा– वैराग्य अँगड़ाइयाँ लेने लगा और कर दिया गुरु चरणों में स्वयं को समर्पित, गुरुदेव ने भी भव्यात्मा जानकर श्रावण शुक्ला एकादशी, वीर संवत् 2048 को 9 अगस्त, 1992 द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पर ऐलक दीक्षा प्रदान की और नाम पाया ''ऐलक विनम्रसागर जी''।

मुनि दीक्षा – 11 वर्ष ऐलक अवस्था में रहकर आत्म साधक ने महती धर्म प्रभावना करते सहस्रो स्वाध्यायी व भक्त पुजारी तैयार किए हुए ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी संवत् 2060, 8 जून 2003 को ललितपुर के तुवन मैदान में 50,000 के विशाल जनसमूह की साक्षी में 21 दीक्षार्थियों में प्रथम मुनि पद पाया और नाम पाया ''मुनि श्री विनम्रसागर जी''।

आचार्य पद घोषित– मुनि धर्म का पालन करते हुए अपनी चर्या से भव्य जीवों को मोक्षमार्गी बनने की प्रेरणा दी तब आचार्य भगवन् गुरुवर श्री विरागसागर जी ने 13 फरवरी 2005 को कुन्थुगिरि में गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य 200 पिच्छियों के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार – मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी संवत् 2067 रविवार, 12 दिसम्बर 2010 को बाँसवाड़ा (राजस्थान) में स्वगुरु आचार्य श्री विरागसागर जी के वरदहस्त द्वारा आचार्य पद संस्कार किए गये और नाम पाया ''आचार्य विनम्रसागर जी''।

तीर्थ यात्रा

गौरवमयी गिरनार यात्रा– आचार्य पदारोहण के पश्चात् पूज्य गुरुवर का आशीर्वाद लेकर सिद्धक्षेत्र गिरनार की यात्रा की।

ऐतिहासिक सम्मेदशिखर यात्रा– पंच आर्यिका दीक्षा देकर 11-12-2013 को अतिशय क्षेत्र सीपुर से 13 पिच्छियों के साथ (13 साधुओं) को लेकर ऐतिहासिक सम्मेदशिखर की यात्रा पर पहुँचे वहाँ विभिन्न संघों के 25 साधुओं सहित 1515 वंदना कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। यात्रा में 108 शांति विधान हुए एवं प्रत्येक टोंक पर विधान व संघ के साधुओं ने 108-108 परिक्रमा की पश्चात् पंच पहाड़ी की यात्रा की।

संयम सृजन – बाँसवाड़ा 2011 में तीन दीक्षाएँ मुनि, ऐलक, क्षुल्लक 4-12-2011 को प्रदान की।

बाँसवाड़ा 13-8-2013 को पंच आर्यिका दीक्षाएँ प्रदान की।

बाँसवाड़ा 2013 में 2 क्षुल्लिका दीक्षाएँ प्रदान की।

सम्मेद शिखर 03-02-2015 को दो मुनि दीक्षा प्रदान की।

फिरोजाबाद 2016 में दो क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की।

ग्वालियर 1-10-2017 को छह दीक्षाएँ प्रदान की। 1 मुनि, 1 ऐलक, 2 आर्यिका, 1 क्षुल्लक, 1 क्षुल्लिका।

सोनागिर 2018 को 1 मुनि दीक्षा।

भिण्ड 14-8-2018 को एक क्षुल्लिका दीक्षा।

सल्लेखना समाधि

क्षुल्लक विश्वबुद्धसागर	गुना (म.प्र.)	1997
मुनि विश्वकीर्तिकसागर	बीना (म.प्र.)	2002
आर्यिका विदेहश्री	बाँसवाड़ा (राज.)	2013
क्षुल्लिका दिव्यश्री	बाँसवाड़ा (राज.)	2013
क्षुल्लक विजितेन्द्रसागर	झुमरी तलैया (बिहार)	2014
क्षुल्लक विश्वजयसागर	हस्तिनापुर	2016
आर्यिका विकुलश्री	ग्वालियर	2017
मुनि विश्वशांतसागर	सोनागिर (म.प्र.)	2018
क्षुल्लिका वियोगिनीश्री	भिण्ड (म.प्र.)	2018
आर्यिका विश्वश्री	अलवर (राज.)	2019
क्षुल्लिका श्री विश्रांति श्री	अलवर (राज.)	2019

आर्यिका विश्वश्री माताजी की अलवर में समाधि कराते हुए गुरुदेव

आराधक से आराध्य बनने का उपक्रम, आनन्दोत्सव
ऐतिहासिक श्रीमज्जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण शिविर

1994	सागर	2000	महरौनी	2008	देवली
1995	टीकमगढ़	2000	चंदेरी	2009	उदयपुर
1995	देवरी	2000	बामौर कला	2010	पारसोला
1996	भोपाल	2001	अम्बाह	2011	बाँसवाड़ा
1997	गुना	2002	बीना	2012	लोहारिया
1998	आरौन	2003	चंदेरी	2013	तलवाड़ा
1998	बबीना	2004	केकड़ी	2015	आगरा
1999	ललितपुर	2005	भीलवाड़ा	2016	फिरोजाबाद
1999	खानियाँधाना	2006	अजमेर	2016	इटावा
2000	टीकमगढ़	2007	निवाई	2018	भिण्ड
				2019	अलवर (राज.)

संस्कार यात्रा दर्पण

पंचकल्याणक व वेदी प्रतिष्ठा

1998	पावागिर सिद्धक्षेत्र	2013	कोहाला, बाँसवाड़ा	2016	उदी (भिण्ड)
1994	सागर मंगलागिरि	2006	भीलवाड़ा	2017	झाँसी
2004	देवपुरा, बूँदी	2014	गोहद, भिण्ड	2017	सोनागिर
2005	बड़गाँव, अजमेर	2006	नसीराबाद	2018	भिण्ड
2012	वीरपुरा, उदयपुर	2015	सम्मेदशिखर		
2000	गिरार जी अतिशय क्षेत्र	2017	इटावा		

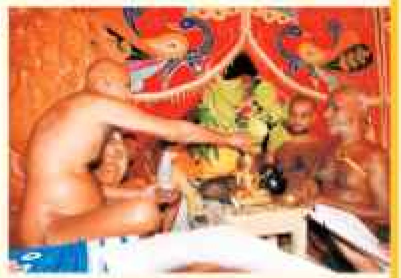

अद्‌भुत ऋद्धि, सिद्धि महामृत्युञ्जयी भक्तामर प्रशिक्षण शिविर

1994	बीना	2003	चंदेरी	2015	इटावा
1994	सागर	2004	केकड़ी	2015	आगरा
1995	टीकमगढ़	2005	भीलवाड़ा	2016	अलवर
1996	भोपाल	2006	अजमेर	2016	फिरोजाबाद
1996	बंड़ा	2007	निवाई	2016	फिरोजाबाद में 48 दिन भक्तामर विधान
1997	गुना	2008	देवली	2017	झाँसी
1998	बबीना, आरौन	2009	उदयपुर	2017	ग्वालियर
1999	ललितपुर	2010	पारसोला	2017	ग्वालियर में 48 दिन भक्तामर विधान
2000	टीकमगढ़	2011	बाँसवाड़ा	2018	भिण्ड में 48 दिन भक्तामर विधान
2001	अम्बाह	2012	सीपुर में 48 दिन भक्तामर विधान	2019	अलवर में 48 दिन भक्तामर विधान
2002	बीना	2013	बाँसवाड़ा		

साहित्य यात्रा दर्पण

काव्य — बहुचर्चित भजन – ''जीवन है पानी की बूंद'' जिसके 3500 से अधिक छन्द देशभर में गूँज रहे।

बहुचर्चित भजन – ''मेरा जीवन कोरा कागज''

बहुचर्चित भेजन – चेतन पिंजरे वाली ना

बहुचर्चित भजन – ''कितना प्यारा तेरा दुआरा''

बहुचर्चित भजन – धीरे–धीरे चलो जी मंदिर

बहुचर्चित भजन – कल भी तू अकेला था

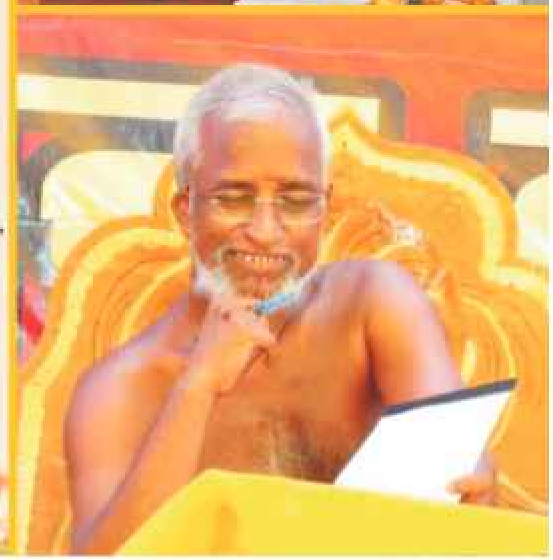

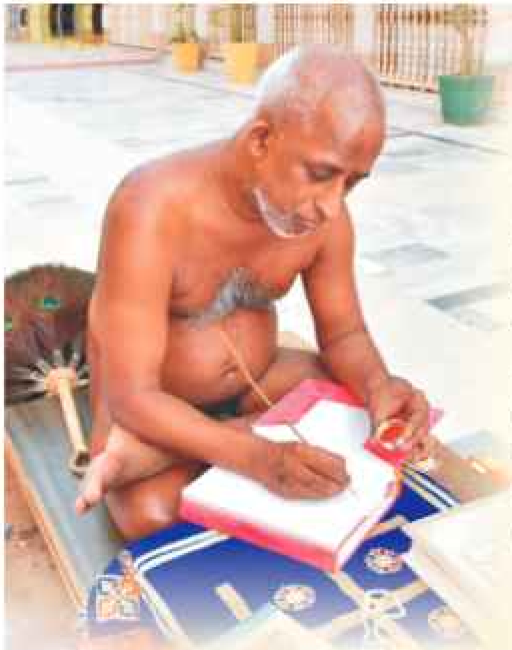

बहुचर्चित पुस्तक सचित्र भक्तामर स्तोत्र एवं सचित्र कल्याण मन्दिर स्तोत्र

1.	होनी अनहोनी	16.	शांतिनाथ विधान	30.	जिन्दगी क्या है?
2.	जीवन है पानी की बूंद	17.	खजाने के मोती	31.	सच क्या है?
3.	बूंद-बूंद में सागर	18.	तासीर के मंजर	32.	स्वर्ग यहाँ नरक यहाँ
4.	अंतस् का पराग	19.	गा लो गुरु गुणगान	33.	जब मिल जाये रे
5.	समंदर की लहरें	20.	गुनगुनाता संदेश	34.	हकीकत का पैगाम
6.	भक्ति की छलक	21.	अनुभूतियों के भँवर	35.	जमाने का सच
7.	आस्था के स्वर	22.	गजब की लाइनें	36.	अपना भविष्य जानो
8.	भक्तामर	23.	असरदार लाइनें	37.	जानिए सम्यक् दीपावली
9.	तन्मयता की बेला	24.	जिनसहस्रनाम स्तोत्र	38.	दैनिक कर्त्तव्य
10.	श्रावक ज्ञान मंजरी	25.	Philosophy of Karma	39.	बोलती कविताएँ
11.	कल्याण मंदिर	26.	Moral Science for children-I	40.	English Quotation
12.	सामायिक पाठ	27.	Moral Science for children-II	41.	What is truth
13.	विराग सुमन	28.	Moral Science for children-III	42.	Know your future
14.	विराग वंदना (विरागशतक)	29.	ऐसा क्यों?	43.	What is life
15.	रत्नत्रय विधान				

नोट - सर्वोदया टीका English में व भक्तामर English में चल रहा है।

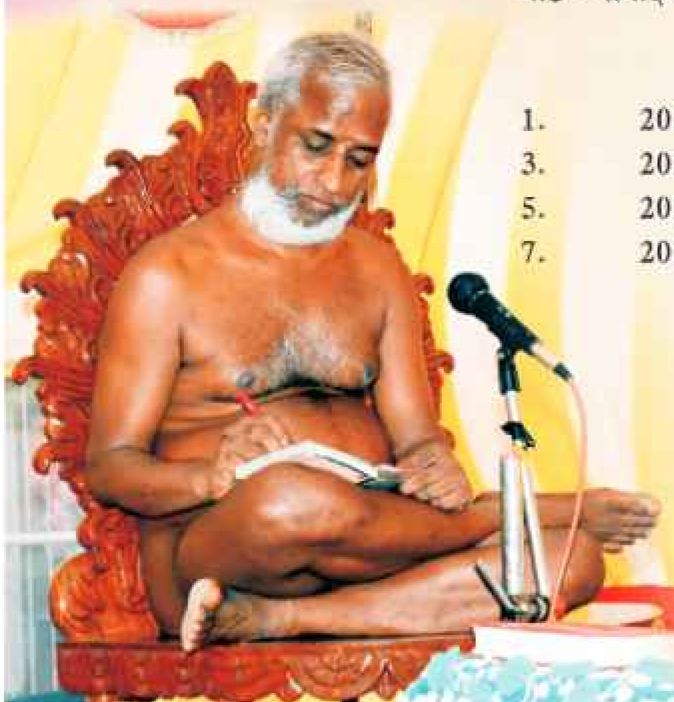

विद्वत संगोष्ठी

1.	2010	पारसोला	पूजन	2.	2013	बाँसवाड़ा	पूजन
3.	2014	सम्मेद शिखर	समयसार	4.	2014	सम्मेद शिखर	पुरुषार्थ सिद्धिउपाय
5.	2015	आगरा	कर्मकाण्ड	6.	2016	फिरोजाबाद	कर्मकाण्ड
7.	2018	भिण्ड	कर्मकाण्ड	8.	2019	अलवर	जीवकाण्ड

प्रेरणा से प्रकाशन-विरागाभिनंदन

स्मारिका-जन्मभूमि महोत्सव, 2018

प्रेरणा से स्थापन-

पद्यानुवाद

1.	भक्तामर स्तोत्र	11 पद्यानुवाद	2.	कल्याण मंदिर	4 पद्यानुवाद
3.	सामायिक पाठ	2 पद्यानुवाद	4.	महावीराष्टक	2 पद्यानुवाद
5.	एकीभाव स्तोत्र	2 पद्यानुवाद	6.	लघु स्वयंभू स्तोत्र	2 पद्यानुवाद
7.	महावीराष्टक स्तोत्र	2 पद्यानुवाद	8.	रत्नकरण्ड श्रावकाचार	1 पद्यानुवाद
9.	इष्टोपदेश				

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलम्।

I bow to all Arihantas.
I bow to all Siddhas.
I bow to all Acharyas.
I bow to all Upadhyayas.
I bow to all Saints in the world.
This Namokar Mantra, about to distroy all sins.
and the first is auspicious in the all auspicious.

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलीपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

The four auspicious are in the world.
All Arihantas are auspicious.
All Siddhas are auspicious.
All Saints are auspicious.
Said by god are auspicious.

The four are the best in the world.
All Arihantas are the best.
All Siddhas are the best.
All Saints are the best.
Said by god are the best.

The four shelter are in the world.
I go to shelter of all Arihantas
I go to shelter of all Siddhas.
I go to shelter of all Saints.
I go to shelter of said by God.

- Acharya Vinamra Sagar

कल्याणमंदिर शुद्ध पढ़ने के लिये आवश्यक जानकारी

कल्याणमंदिर संस्कृत के बसंत तिलका छंद में लिखा गया है इस छंद के मधु माधवी, सिंहोन्मता व उद्धर्षिणी नाम भी हैं। इस छंद में 4 पंक्ति होती हैं एक पंक्ति में 14 अक्षर व 21 मात्रायें होती हैं प्रत्येक पंक्ति में 14 अक्षरों में 7 ह्रस्व और 7 दीर्घ होते हैं। एक काव्य में 56 अक्षर और 84 मात्रायें होती हैं इस स्तोत्र में कुल 44 काव्य है जिनमें तैतालीस छन्द वसंततलिका एवं अंतिम काव्य आर्या छन्द में 43 काव्यों में 2408 अक्षर व 3612 मात्राएँ हुईं व आर्या छंद में 35 अक्षर 57 मात्राएँ अत: पूर्ण स्तोत्र में कुल 2443 अक्षर व 3669 मात्राएँ होती हैं।

छंद में मात्राओं की रचना–(ह्रस्व= I, दीर्घ = S)

14 अक्षर– S S I S I I I S I I S I S S = 21

14 अक्षर– क ल्या ण मं दि र मु दा र म व द्य भे दि = 21

14 अक्षर– भी ता भ य प्र द म निं दि त मां घ्रि प द्मं = 21

14 अक्षर– सं सा र सा ग र नि म ज्ज द शे ष जं तु = 21

14 अक्षर– पो ता य मा न म भि न म्य जि ने श्व र स्य = 21

* जो अक्षर वर्णमाला में नहीं है और दो व्यंजन और एक स्वर से मिलकर बनते हैं वे संयुक्त अक्षर कहलाते हैं जैसे–क्ष, त्र, ज्ञ, क्र, प्र, म्र, भ्र, म्य, क्य आदि।

* स्वराघात विधि– संयुक्त अक्षर के पूर्व यदि ह्रस्व स्वर (अ,इ,उ,ऋ,लृ) आ जावे तो संयुक्त अक्षर के पूर्व स्वर पर जोर देते हुए संयुक्त अक्षर को दो बार उच्चारण जैसा बोलते हैं यही स्वराघात है। दीर्घ स्वर, अनुस्वार व विसर्ग आने पर स्वराघात नहीं होता है।

* ए ऐ ओ औ, ये दीर्घ हैं लेकिन संध्यक्षर भी हैं। ये दोनों दो स्वरों से मिलकर बने हैं। अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, अ+ओ=औ। इन सभी में दो स्वर हैं इसलिए ये हमेशा दीर्घ ही होते हैं।

* वर्णमाला में 14 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं। 14 स्वर में 5 ह्रस्व और 9 दीर्घ होते हैं 33 व्यंजन में 20 घोष होते हैं और (कख, चछ, तथ, टठ, पफ, श,ष,स) ये तेरह अघोष होते हैं जो अक्षर मुँह से बाहर आते हैं वे स्वर सहित व जो मुँह के अन्दर ध्वनित होते हैं उन्हें हलन्त अक्षर या व्यंजन कहते हैं।

* ए और ओ के बाद कहीं–कहीं (S) चिह्न लगा होता है इसका मतलब 'अ' है किसी भी अक्षर के ऊपर अनुस्वार लगा हो तो उसे ङ् ञ् ण् न् म् इनमें से कोई एक अक्षर में उच्चारित करते हैं।

पाँच वर्ग होते हैं–कण्ठोच्चारित–कवर्ग–क ख ग घ ङ

मूर्धोच्चारित – ट वर्ग – ट ठ ड ढ ण

ओष्ठोच्चारित – प वर्ग – प फ ब भ म

तालव्योच्चारित – च वर्ग – च छ ज झ ञ

दन्त्युच्चारित – त वर्ग – त थ द ध न

अन्योच्चारित – य र ल व श ष ह संयुक्त अक्षर क्ष त्र ज्ञ

* किसी भी शब्द के अनुस्वार के बाद जिस वर्ग का अक्षर आता है तो अनुस्वार, उसी वर्ग का अंतिम अक्षर हो जाता है। जैसे–गंगा, इसमें अनुस्वार को ङ् बोलेंगे यदि झंडा हो तो झण्डा, पंथ= पन्थ, पंप–पम्प, गंजा–गञ्जा आदि।

* गंगा में अनुस्वर के बाद गा है और गा क वर्ग का है इसलिये अनुस्वार ङ् होगा, झंडा में डा है ड ट वर्ग का है ट वर्ग का अन्तिम अक्षर ण है अत: ण् होगा आदि।

* शब्द के अन्तिम अक्षर पर अनुस्वार हो तो म् पढ़ा जाता है जैसे ज्ञानं, ध्यानं, मानं।

* स के पूर्व अनुस्वार को न, श य के पूर्व ञ्, ह के पूर्व ङ् और ष के पूर्व ण् पढ़ते हैं।

* श ष स तीनों का उच्चारण अलग–अलग है जब जीभ मूर्धा से घिसटते हुए ड की तरह आती है तब ष होता है, जब जीभ की नोंक ऊपर के दाँत की जड़ के ऊपर लगती है तब श होता है और जब जीभ को ऊपर के दाँत के पिछले हिस्से से लगाकर बोला जाये तो स होता है। विसर्ग का उच्चारण हलन्त ह् की तरह होता है।

❊ समावेशन ❊

कल्याणमन्दिर स्तोत्र की उत्पत्ति की पीठिका भी एक ऐसी चमत्कारिक घटना है जिसे निम्न कहानी में परिलक्षित किया है। यद्यपि इस कहानी से कल्याणमन्दिर के कर्त्ता के सम्पूर्ण जीवन पर प्रकाश नहीं पड़ता तथापि उनके एकदेश जीवन का सम्बन्ध इस कथानक से भलीभाँति प्रकट होता है।

ब्रह्ममुहूर्त की बेला है, शिवालयों में शंखनाद और घण्टानाद आरम्भ हो गये हैं। जो कसौटी पर कसे हुए भक्त हैं वही केवल इस शीत में उत्तरीय वस्त्र ओढ़े और अपनी लम्बी चोटी में गाँठ लगाये तेजी से नर्मदा तट की ओर बढ़ रहे हैं। इन्हीं भक्तों में से एक वह है जो नित्यप्रति 'गायत्री' का पाठ करता हुआ आज भी अपनी निराली पगडंडी पर पग बढ़ाये चला जा रहा है।...

"अरे, जरा, दूर से चलो : क्या दिखता नहीं है, कि मैं ब्राह्मण हूँ?" परन्तु वे तो आचार्य वृद्धवादी जो थे, जो इस कट्टर ब्राह्मण की श्रद्धा की परीक्षा का ही नाम सुन कर निकले थे, अतएव जानबूझकर पुन: घुटनी का धक्का मार ही तो दिया। फिर क्या था? विवाद प्रारम्भ हो गया, जैसा कि आचार्य वृद्धवादी जी चाहते ही थे। वह कट्टर ब्राह्मण वेद पारंगत एवं कूट तार्किक था। 'एको ब्रह्म' से लेकर सहस्रों श्लोक उसकी जिह्वा पर नाच उठे। आचार्य जी ने भी व्यवहार धर्म का स्वरूप कहा। निदान एक ग्वाला वहाँ से निकला और वहीं मध्यस्थ ठहराया गया इस अनसुलझे विवाद के लिए।

"ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या...।" आदि कह कर ब्राह्मण ने संस्कृत की अपनी पूर्ण विद्वत्ता सामने उड़ेल दी।

"देखा भाई जैसे आपकी ये गायें हैं, यदि ये कहीं चली जावें तो आपका क्या गया? यदि आप उन्हें अपनी मानते ही नहीं" आदि कह कर वृद्धवादी ने ग्वाले की बुद्धि के अनुसार ही व्यावहारिक बात करके अपना पक्ष प्रकट किया।

ग्वाले की बुद्धि में संस्कृत श्लोकों की तुलना में अपने ही ऊपर कुछ घटाये व्यावहारिक दृष्टान्तों के कारण शीघ्र सब कुछ समझ में आ गया। इस भांति उसने वृद्धवादी जी का ही समर्थन किया। तथापि ब्राह्मण संतुष्ट नहीं हुआ। होते–होते राजा के पास दोनों पहुँचे और उन्होंने भी आचार्य जी की व्यावहारिकता के कारण उनके ही पक्ष में निर्णय दिया...।

निदान ब्राह्मण को उनका शिष्यपना स्वीकार करना ही पड़ा और समयानुसार ये 'कुमुदचन्द्र' नाम से सुसंस्कृत किये गये। ऐसे ही श्रद्धावान्, विद्वान् पुरुष की खोज में तो वृद्धवादी जी निकले ही थे।

आत्मशक्ति का तेज छिपाये छिपता नहीं। यही कारण है उज्जयनि नगरी में रहते हुए यद्यपि इन्हें अधिक समय नहीं हुआ तथापि ख्याति वैभव इनके चरणों में लोटने लगी और एक दिन वह आया कि वे विक्रमादित्य नरेश के राज्य दरबार में ऐतिहासिक नवरत्नों में से 'क्षपणक' नामक उज्ज्वल रत्न बन बैठे। कैसे? इसका भी एक रहस्य...।

पीछे–2 प्रजा का विशाल जनसमूह तथा सबसे आगे राजा विक्रमादित्य एक विभूषित मातंग पर आरूढ़ होकर चले जा रहे थे और दूसरी ओर से अपने में लीन, राजकीय आतंक से निर्भीक एक निस्पृह साधु। राजा शिवभक्त होकर भी सर्वधर्म समभावी था ही, परीक्षा के हेतु मन ही मन नमस्कार कर लिया। बस क्या था? आत्मा का बेतार के तार का करंट पवित्र आत्मा का पहुँच गया और 'धर्मवृद्धिरस्तु' का आशीर्वाद अनायास ही उनके मुख से जोर से निकल पड़ा।

राजकीय कार्य से कुमुदचन्द्र जी का चित्तौड़गढ़ जाना पड़ा, मार्ग में श्री पार्श्वनाथ जी का जैन मन्दिर देख कर ज्यों ही वे दर्शनार्थ प्रवेश किया कि एक स्तम्भ पर उनकी दृष्टि पड़ी। स्तम्भ एक ओर से खुलता भी था। इन्होंने उसे खोलने का उद्योग किया किन्तु सफलता में विलम्ब लगा। निदान उस पर लिखित गुप्त संकेतानुसार उन्होंने कुछ औषधियों के सहारे उसे खोल दिया तथा उसमें रखे हुए अटूट चमत्कारी शास्त्र देखे। एक पृष्ठ पढ़ने के पश्चात् ज्यों ही वे दूसरा पृष्ठ पढ़ने लगे त्यों ही अदृश्य वाणी हुई कि दूसरा पृष्ठ तुम्हारे भाग्य में नहीं है और स्तम्भ कपाट पुन: पूर्ववत् बन्द हो गया...। अस्तु जितना मिला उतना ही क्या कम था, जो आगे जाकर कल्याण मन्दिर की भक्तिरस पूर्ण चमत्कार सिद्धि में कारण बना। यह घटना एक ऐसी घटना थी जो अक्सर आत्मस्थैर्य के समय उनकी आँखों में चित्रपट के समान अंकित हो जाया करती थी।

महाकालेश्वर का विशाल प्रांगण–जहाँ करोड़ों की संख्या में आज शैव और शाक्त बैठे हैं, नाना प्रकार के वैदिक यौगिक चमत्कारों का जिन्हें गर्व है। वे देखना चाहते हैं कि यह क्षपणक हम से बढ़िया ऐसा कौन सा चमत्कार दिखलाने का दावा कर रहा है, तथा कथित आठों रत्न इसलिये प्रस्तुत हैं कि आज उन्हें उनके अपने ही द्वारा पाली हुई ईर्ष्या का साकाररूप देखने का सुयोग प्राप्त हो रहा है। उज्जयनि नरेश विवेकी और परीक्षाप्रधानी थे। प्रभाविक शक्तियाँ ही उन्हें अपने वश में कर सकती थी तो दैदीप्यमान चेहरा अपनी ओर बढ़ता देख मानों शिवमूर्ति निस्तेज पड़ने लगी थी। राजा का संकेत पाकर कपिल द्विज बोला–''तो क्षपणक जी करिये न नमस्कार शिवजी को देखें आपका आत्मवैभव''।

श्रद्धा वास्तव में बलवती होती है, उसके आगे सोचने का विचारने का कोई मूल्य नहीं। बस आचार्य श्री की आँखों से वही चित्तौड़गढ़ का भव्य जिनमन्दिर, उसमें विराजमान वही सौम्यमूर्ति पार्श्वनाथ जी का बिम्ब, वही स्तम्भ और वही चमत्कारी पृष्ठ उस शिवमूर्ति के स्थान में दिखाई देने लगे। एकाएक उनके मुँह से भक्ति के आवेश में निम्न श्लोक निकल पड़ा–

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षतोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जनबान्धव । दु:खपात्रं, यस्मात्क्रिया: प्रतिफलन्ति न भावशून्या:।।

(कल्याणमन्दिर श्लोक नं 38)

इन भक्तिरस पूर्ण पंक्तियों में कहिये अथवा आचार्य श्री के उस पौद्गलिक वाणी में कहिये, कौन से ऐसे तत्त्व भरे थे, जिन्होंने उस समस्त विशाल जनसमूह को एक बार में ही मन्त्रमुग्ध कर लिया। सब के नेत्र उसी एक व्यक्ति पर ही गड़े थे। उसके मूर्ति की ओर कोई नहीं देखता था, जिसका कि एक–एक परमाणु वीतराग मुद्रा में परिणत होने लग गया था। हाँ, समुदाय के चर्मचक्षु तो उस समय उस ओर मुड़े जबकि सर्वांगपूर्ण मुद्रा के प्रकाश पुञ्ज की तेज रश्मियाँ उनके पलकों से जा भिड़ीं और फिर दाँतों तले अँगुली दबाने के सिवाय उन्हें रह ही क्या गया था जो कि वास्तव में दयनीय था।

परिणाम यह हुआ कि राजा सहित उपस्थित जनता तत्काल समीचीन जैन–धर्म की अनुयायिनी हो गई। ओंकारेश्वर का विशाल महाकालेश्वर का मन्दिर इसका ज्वलन्त प्रतीक है।

समयानुसार राजा की प्रेरणा पाकर श्री कुमुदचन्द्रचार्य जी ने भक्तिरस से ओतप्रोत इस कलापूर्ण अद्वितीय चमत्कारी कल्याणमन्दिर स्तोत्र की रचना कर जन साधारण का महान कल्याण किया। और उसी स्तोत्र को पूज्य गुरुदेव उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज ने चित्र–भावार्थ–मंत्र–यंत्र–प्राकृत–अंग्रेजी व तीन तरह के पद्यानुवाद सहित आप सभी की भक्ति रूपी थाल में परोसा हैं जो जन–जन के लिए हितकारी बनेगा जिसका रसपान करके भव्य जीवों को कल्याणकारी होगा। ऐसे अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी गुरुदेव के चरणों में त्रयभक्तियुत कोटिश: नमोऽस्तु–3

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

कालसर्प योग का प्रभाव

-श्रमण मुनि विज्ञसागर

जब राहु-केतु के बीच में सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प योग बनता है। वैसे राहु का जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ, जिसका देवता काल है और केतु का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में हुआ, जिसका देवता सर्प है, अत: इन दोनों देवताओं के मिलने से जिसकी कुण्डली में कालसर्प योग होता है उसे अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है, इच्छित और प्राप्त होने वाली प्रगति में रुकावटें आती हैं, बहुत विलम्ब से यश प्राप्त होता है। मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और व्यापारिक दृष्टि से व्यक्ति परेशान रहता है क्योंकि जातक के भाग्य को राहु-केतु अवरुद्ध करते हैं, जिसके कारण जातक की उन्नति नहीं होती है। उसे अपनी जीवन चर्या चलाना मुश्किल हो जाता है और अनेक प्रकार के दु:ख भोगने पड़ते हैं।

कालसर्प योग के प्रकार

1. **अनंत कालसर्प योग**-लग्न में व सातवें भाव में राहु हो तो यह योग होता है। इस योग में जन्मा हुआ बालक आगे गृहस्थ सुख एवं शरीर सुख नहीं भोग सकता।
2. **कुलिक कालसर्प योग**-दूसरे एवम् आठवें घर में राहु-केतु ग्रह हो तो यह योग होता है। इस योग में जन्मा हुआ बालक धनहीन होगा, आयु कम रहेगी एवम् शरीर से निर्बल रहता है।
3. **वासुकी कालसर्प योग**-तीसरे व नौवें भाव में राहु-केतु ग्रह हो बंधुओं से निराशा रहती है, मुकद्दमे-केस लड़ने पड़ते हैं।
4. **शंखपाल कालसर्प योग**-चौथे व दसवें भाव में राहु-केतु ग्रह हो तो यह योग बनता है। इस योग से वाहन हानि, धनहानि, विदेश योग में रुकावट, मन दु:खी रहता है।
5. **पद्म कालसर्प योग**-पांचवें व ग्यारहवें भाव में राहु-केतु ग्रह होने से यह योग बनता है। इस योग से पढ़ाई में रुकावट आती है, संतान से दु:खी रहते है, खर्च ज्यादा, लाभ कम होता है।
6. **नाभकालसर्प योग**- सातवें से लग्न तक सारे ग्रह होने से यह योग बनता है। इस योग से स्वयं का वैवाहिक जीवन बिगड़ जाता है। वनवास भोगना पड़ता है।
7. **कर्कोटक कालसर्प योग**-आठवें से दूसरे तक सारे ग्रह होने से बनता है। इस योग से शरीर में बीमारी होती है, सूखी पीड़ा रहती है, पैसे की कमी आती है, कर्जा बढ़ जाता है।
8. **शंखनाद कालसर्प योग**-नौवें से तीसरे भाव तक सारे ग्रह होने से योग बनता है। इस योग से दरिद्री जीवन निभाना पड़ता है। जगह-जगह अपमान होता रहता है, पद त्याग करना पड़ता है।
9. **पातक कालसर्प योग**-दसवें से चौथे भाव तक सारे ग्रह आने से यह योग बनता है। धर्म छोड़कर पैसा कमाता रहता है। कलंकित जीवन भोगना पड़ता है।
10. **विषाक्त कालसर्प योग**-ग्यारहवें से पाँचवें भाव तक सारे ग्रह आ जाने से पति-पत्नी में तनाव रहता है, घर से निकल जाने के भाव होते है और सरकार से दण्डित होना पड़ता है।

कालसर्प योग निवारण करने का उपाय

कालसर्प योग निवारण के लिए अनेक धर्मों के ग्रंथों में कई प्रकार की किंवदंतियाँ मिलती हैं। परंतु विचार किया जाये तो उन सब में सत्यता एवं समीचीनता कम मिलती है। अधिकतर टोने-टोटके, अंधविश्वास जैसे ही लगते हैं। कोई कहता है कि लोहे का सर्प शिव पर चढ़ाना है या तांबे का सर्प चढ़ाना सोने-चाँदी के सर्प चढ़ाना अथवा ब्राह्मण को दान करना बताते हैं। कोई नदी में सर्प-सर्पिणी को जोड़ा प्रवाहित करना बताते हैं तो कोई राहु-केतु का जाप या शिवमंत्र का जाप करना आदि-आदि बताते हैं। संसारी प्राणी इन से संत्रस्त होकर कर्म चपेट में आकर इतना घबरा जाता है और अज्ञानवश उस दु:ख से छूटने के लिए ऐसी-ऐसी जगह भटकता है कि जिससे मिथ्यात्व से भ्रमित हो जाता है। इस मिथ्यात्व से दूर होने हेतु भक्तामर स्तोत्र के समान यह 'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' जो कि कल्याण का ही मंदिर है, जो इसकी शरण जायेगा, आराधना करेगा, वह निश्चित ही शाश्वत सुख को पायेगा।

दैविक अतिशय एवं फल प्राप्ति की अपेक्षा से भी कल्याण मंदिर स्तोत्र-पूजा अन्य प्रसिद्ध प्रचलित स्तोत्रों की तुलना में कितना अधिक चमत्कारपूर्ण है, इसको इतिहास की वह घटना ही स्पष्ट कर देती है कि जिसके द्वारा इस स्तोत्र के सम्मानीय रचयिता श्री कुमुदचन्द्राचार्य श्री जी ने ओंकारेश्वर के शिवलिंग से भी 1008 भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का सौम्य प्रतिबिम्ब अपार जनता के समक्ष प्रकट कर विक्रमादित्य जैसे कट्टर शैव सम्राट् का मस्तक नम्रीभूत कर दिया एवं जैन धर्म की अपूर्व प्रभावना की। अत: इस स्तोत्र-पूजा-विधान का एक ही सार है, संसार के असह्य कष्टों का निवारण। विविध उपद्रवों का नाश करने वाला, पापनाशक एवं दु:खनाशक है। बस इसके लिए आपकी अटूट श्रद्धा-भक्ति चाहिये। जो भक्ति करेगा वह शाश्वत् सुख पायेगा।

साभार - कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजा
श्री सिद्धान्त तीर्थ क्षेत्र, शिकोहपुर, गुरुग्राम)

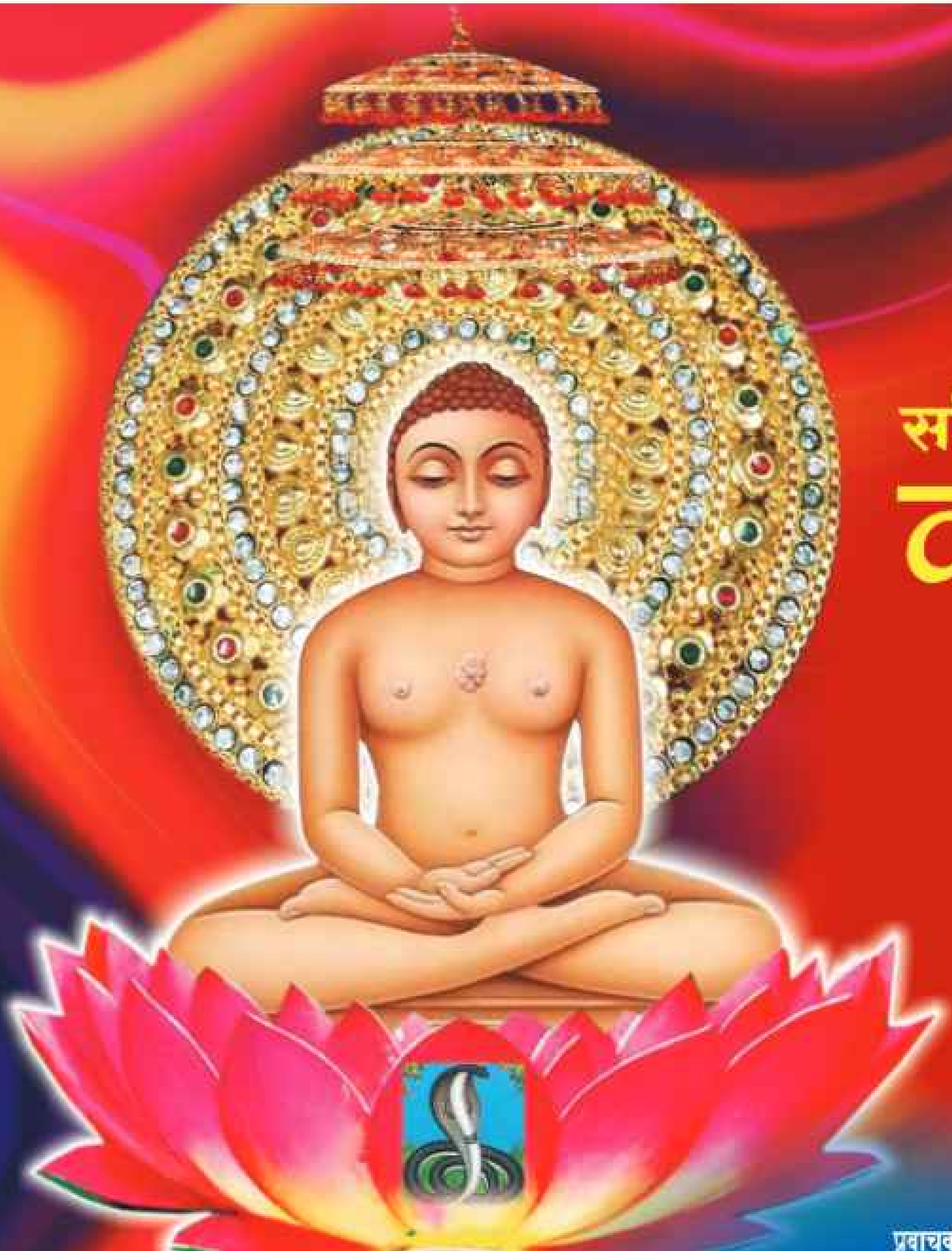

उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक,
राहु-केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी
श्रीमद्देवेन्द्र कीर्ति प्रणीत

सचित्र

कल्याण मंदिर स्तोत्र

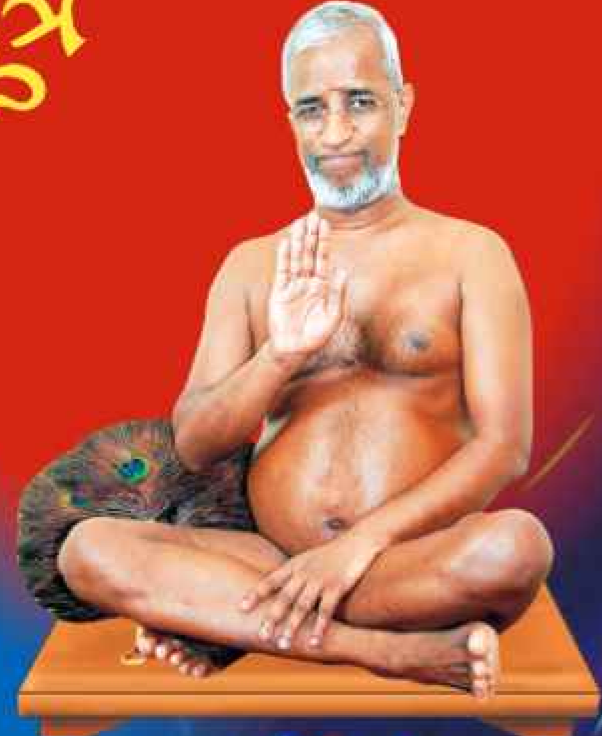

प्रवाचक :
जीवन है पानी की बूँद भजन के 3500 छंदों के रचयिता व प्रणेता

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

नाना सुख प्रदाता
पाप विनाशक
शत इन्द्रों से वंदनीय
भयभीत प्राणियों को अभयदाता
प्रभु भक्ति की नाव

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमंदिर – मुदार – मवद्यभेदि,
भीताभय प्रद – मनिंदित – मंघ्रि पद्मम्।
संसार सागर निमज्ज – दशेषजन्तु,
पोतायमान–मभिनम्य जिनेश्वरस्य।।1।।

अन्वयार्थ

कल्याणमंदिरं=कल्याणों का मन्दिर (स्थान), उदारं= नाना सुखों के प्रदाता, अवद्यभेदि= अवद्यों (पापों) का भेदन करने वाले, अनिन्दितं=प्रशंसनीय, भीताभयप्रदं= संसार व दुःखों से भयभीत प्राणियों को अभयदान (जीवनदान) देने वाले, संसार सागर निमज्जदशेष जन्तु पोतायमानं= चारों गतियों में भ्रमण रूप संसारसमुद्र में डूबे हुए सब प्राणियों को निकालने के लिए नौका के समान, जिनेश्वरस्य= जिनेन्द्र भगवान के, अंघ्रिपद्मं= चरणाविंद को, अभिनम्य= नमस्कार करके (स्तुति करूँगा)

भावार्थ

हे भगवन्! सर्वसुखदाता, पाप विनाशक, इन्द्रों से प्रशंसनीय, पूज्य अभयप्रदाता संसार में डूबे प्राणियों को जो सहारे हैं उन पार्श्व प्रभु को नमन हमारे हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठकज्जसिद्धि पराणं जिणाणं

(इष्ट कार्य सिद्धि प्रदाता जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

कल्लाण मंदिर उदार मवज्ज भेदी,
भीदा भयप्पद उनिन्दिद अंघ्रि पोम्मम्।
संसार सायर णिमज्ज असेस जन्तु,
पोतायमाण अहिणम्म जिणेसरस्स।।1।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Provider of all kinds of pleasured, revered by indras, giver of fearlessness, who is anchor of the drowing people in the worldly sea, i bow down before you Parshavnathji!

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

इस मंत्र के प्रभाव से श्री पार्श्वनाथ स्वामी के प्रसाद से लक्ष्मी (धन) एवं मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है।

पद्यानुवाद

कल्याणों का धाम यही, स्तोत्र बताएँ रे ऽऽ
पार्श्व प्रभू को हो–3, हम शीश झुकाएँ रे ऽऽऽ
कल्याणों के मंदिर हैं, दर्शन ज्ञान समंदर हैं
पापों को जो खंजर हैंऽऽऽ
भवसागर में डूब रहे–उनको जहाज प्रभुवर हैं
पारस प्रभु नमकर हो–3, जयकार लगाओ रे–ऽ

कल्याणों के महान मंदिर, करते सारे पाप विनष्ट,
अभय शुभम् पद दे भव्यों को, भव भय दूर करें सब कष्ट।
भवि जीवों को पोत समा हैं, जिनवर के द्वय चरण कमल,
अति आसक्त भक्ति में होकर, नमूं करूँ परिणाम विमल।

कल्याणों के धाम है पार्श्वनाथ भगवान।
उन प्रभुवर को मैं सदा, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।
उपसर्गों को जीतकर, पाया केवलज्ञान।
पार्श्वनाथ जिनदेव को, लाखों बार प्रणाम।।

नाना सुख के दाता हो तुम, अभय प्रदाता त्राता हो तुम।
हो उदार सब पाप विनाशक, भव्यजनों को साता हो तुम।।
जो भव सागर डूबने वाले, उनको पार लगाने वाले।
हैं कल्याण के मंदिर धाम, पार्श्व प्रभु को करूँ प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ णमो भगवओ रिसहस्स तस्स पडिणिमित्तेण चरण पण्णत्ति इंदेण भणामइ यमेण उप्पाडिया जीहा कंठोट्ठ मुहतालुआ खीलिया जो मं भसइ जो मं हसइ दुट्ठदिट्ठीए वज्जसिखलाए (3 देवदत्तस्स) मणं हिययं कोह जीहा खीलिया सेलखियाए ल ल ल ल ठःठःठः स्वाहा

विधि

श्रद्धापूर्वक उक्त मंत्र को 108 बार जपने से प्रतिवादी से वाद–विवाद करने पर जप करने वाले की विजय होती है। निश्चयपूर्वक प्रतिवादी का मुखबंद हो जाता है और उसकी पराजय होती है।

ॐ ह्रीं सर्वपीड़ा निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरु - गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मति र्न विभु र्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ - स्मय-धूमकेतोस्-
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये।।2।।

अन्वयार्थ

गरिमाम्बुराशेः = गौरव के समुद्र, यस्य = जिन पार्श्वनाथ की, स्तोत्रं = स्तुति, विधातुं = करने के लिए, स्वयं = खुद, सुविस्तृतमतिः = विस्तृत (विशाल) बुद्धि वाले, सुरगुरुः = बृहस्पति भी, विभु = समर्थ, न = नहीं हैं, कमठस्मय = कमठ के जीव, धूमकेतोः = (शंबरनामक ज्योतिषी देव) के मान को भस्म करने के लिए अग्नि स्वरूप, तस्य तीर्थेश्वरस्य = उन पार्श्वनाथ तीर्थंकर का, किल = निश्चय से, एष अहं = यह मैं, संस्तवनं = स्तवनं, करिष्ये = करूँगा।

भावार्थ

जिनकी स्तुति करने में विशाल बुद्धि वाले सुरगुरु भी समर्थ नहीं हैं, कमठ के मान को भस्म करने वाले उन पार्श्वनाथ भगवान् का मैं स्तवन करूँगा।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दव्वकराणं ओहि जिणाणं।

(द्रव्यकारण अवधिज्ञानी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जस्सस्सयं सुरगुरू गरिमम्बुरासिं,
थोदं सु वित्थिद उती न विभू विहातुम।
तित्थेसरस्स कमठंमय धूमकेतू,
तस्साह एस किल संस्थवणं करिस्से।।2।।

यंत्र

अंग्रेजी

Even the great intellectuals find themselves incapable in praising you, O Lord Parshavanath! Who calcined the pride of Kamath. I' ll eulogize such a great Lord.

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

इस मंत्र के प्रभाव से श्री पार्श्वनाथ स्वामी के प्रसाद से लक्ष्मी (धन) एवं मनोवांछित कार्य सिद्ध होता है।

पद्यानुवाद

सुरगुरु ने भी गाया है- फिर भी पार न पाया है-2
गुण समुद्र सी काया हैऽऽऽ
मान कमठ का चूर किया, अग्नि समा प्रभु छाया है-2
ऐसे प्रभु पारस हो-3, की स्तुति गायें रे-ऽऽ

महागुणी प्रभु! गरिमा सागर! चिन्मय पार्श्वनाथ भगवान्,
मान कमठ का भस्म करन को, अग्नि समां है जिनका ध्यान।
सुरुगुरु जिनकी थुति गाने में सक्षम नहीं, करे बहुमान,
अचरज है हम अल्पबुद्धि से, करते हैं उनके गुणगान।।

जिनकी बुद्धि विशाल बताई, सुरगुरु नाम जगत में भाई,
नहिं समर्थ तव गुणगाने में, बात ये गुरुवर ने बतलाई।
मान कमठ का दूर किया था, निज को गुण से पूर्ण किया था,
उन प्रभु का गुणगान करूँगा, जिनका पारस नाम लिया था।

विशेष मंत्र

ॐ णमो भगवओ रिसहस्स तस्स पडिणिमित्तेण चरण पण्णत्ति इंदेण भणामइ बमेण उप्पाडिया जीहा कंठोट्ठ मुहतालुआ खीलिया जो मं भसइ जो मं हसइ दुट्ठदिट्ठीए वज्जसिंखलाए (देवदत्तस्स) मणं हिययं कोह जीहा खीलिया सेलखियाए ल ल ल ल ठःठःठः स्वाहा

विधि

श्रद्धापूर्वक उक्त मंत्र को 108 बार जपने से प्रतिवादी से वाद-विवाद करने पर जप करने वाले की विजय होती है। निश्चयपूर्वक प्रतिवादी का मुखबंद हो जाता है और उसकी पराजय होती है।

ॐ ह्रीं सर्वपीड़ा निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

जल भय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशः कथ-मधीश! भवन्त्यधीशाः?
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?॥3॥

अन्वयार्थ

अधीश! = हे स्वामिन्!, सामान्यतः = सामान्य (साधारण) रीत से, अपि तव = भी तुम्हारे, स्वरूपं = स्वरूप का (वास्तविक गुणपर्यायों का), वर्णयितुं = कथन करने के लिए, अस्मादृशः = हमारे जैसे अज्ञप्राणी, कथं अधीशाः = कैसे समर्थ, भवन्ति = हो सकते हैं? अल्प बुद्धि नहीं हो सकते, यदि वा = अथवा यह कहना ठीक ही है, किल घर्मरश्मेः रूपं = निश्चय से सूर्य के स्वरूप का, दिवान्धः = दिन में अन्धा रहने वाला अर्थात् जिनको सूर्य के प्रकाश में दिखता नहीं है ऐसा, कौशिक शिशुः = उल्लू का बच्चा, धृष्टोऽपि = धीठ होता हुआ भी, किं = क्या, प्ररूपयति = प्ररूपण कर सकता है अर्थात् नहीं कर सकता है।

भावार्थ

हे भगवन्! ज्ञानहीन, ज्ञान का विवेचन कैसे कर सकते हैं? वैसे ही दिन में अंधा उल्लू, सूरज का विवेचन कैसे कर सकता है? नहीं कर सकता।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्दभय सामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।
(समुद्रभय नाश के लिए परमावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

सामण्णदावि तव वण्णइदुं सरूवं,
अह्मादिसो कदअधीस! भवन्ति अधीसो।
चिट्ठोवि कोसिक सिसू जदि वा दिवन्धो,
रूवं परूवयदि किं किल घम्मरस्सिं॥3॥

यंत्र

अंग्रेजी

O God! How can an ignorant discriminate knowledge? Likewise how a blind owl can discriminate the Sun? Not possible.

मंत्र

ॐ भगवत्यै पद्म निवासिन्यै नमः स्वाहा।

गुण

इसके प्रभाव तथा श्री पार्श्वनाथ स्वामी के प्रसाद से पानी का भय नहीं रहता और न दरिया में डगमगाता हुआ जहाज डूबता है।

पद्यानुवाद

उल्लू रवि को बतलाए, दिन में अंधा हो जाए-2
जाने बिन क्या समझाए-ऽऽऽ
वैसे ही अज्ञानी मैं, कैसे तव स्वरूप गावें-2
भक्ति से अंधा हो-3, आँखें पा जाये रे-ऽऽऽ

हे स्वामिन्! तुम गुण वारिधि हो, कैसे हम कह सकते गुण,
अल्पबुद्धि है मुझमें जब वह, बृहस्पति कहने नहीं निपुण।
जैसे उल्लू सूर्य किरण का, वर्णन करे, कहे विद्वान्,
वैसे धृष्ट हुआ थुति करने, पूर्ण न कर सकता गुणगान॥

मैं हूँ मंदबुद्धि का धारक, तुम प्रभु सतभयों के नाशक।
कैसे हम गावें गुणगान? तुम महान हो परम विधायक॥
वह उलूक का बच्चा आये, सबको सूरज गुण बतलाए।
यह उसका मूरखपन भाई, वह कैसे वर्णन कर पाये॥

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं हर क्लीं बगलामुखी देवी नित्ये! भिन्ने! मद्द्रवे! मदनातुरे वषट् स्वाहा।

विधि

पुष्य नक्षत्र के योग में इस महामंत्र को 21 दिन तक 12000 जाप पूरा करने से तीनों लोक वशीभूत होते हैं।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्याधीशाय नमः।

मोह विनाशक अनंत सुख
अंतराय रहित अनंत शक्ति
ज्ञानावरण नाशक अनंतज्ञान
दर्शनावरण से विमुक्त अनंत दर्शन

असमय निधन निवारक

मोह क्षया - दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः?॥4॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, मोहक्षयात् = मोहनीय कर्म का क्षय हो जाने से, अनुभवत् न अपि = आपके गुणों का अनुभव न करता हुआ भी, मर्त्यः = मानव (मनुष्य), नूनं तव = निश्चय से तेरे, गुणान् = गुणों को, गणयितुं = गिनने के लिए, न क्षमेत = समर्थ नहीं है यस्मात् = क्योंकि, कल्पान्तवान्त पयसः = प्रलयकाल के समय बाहर कर दिया जाता है जल जिसको ऐसे, जलनिधेः = समुद्र की, प्रकटः = प्रकट हुई रत्नराशिः अपि = रत्नों की राशि भी, ननु केन = किसी पुरुष के द्वारा, मीयेत = गिनी जा सकती है? अर्थात् किसी के द्वारा नहीं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे समुद्र में दृष्टिगोचर रत्नों को गिनना संभव नहीं है वैसे ही आपके अनंतगुणों को मोही मानव द्वारा गिनना संभव नहीं है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकालमिच्चुवारयाणं सव्वोहि जिणाणं।
(अकाल मृत्यु निवारण के लिए सर्वावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

मोहक्खयात् अनुभवं अवि णाह! मिच्चुं,
णूणं गुणा गणइदुं ण तवक्खमेद।
कप्पन्त वन्त पयसो पगदो विजम्हा,
मीयेद् केण जलधिं णणु रण्ण रासिं॥4॥

यंत्र

अंग्रेजी

Hey God! As it is impossible to count the visible gems in the sea (ocean), similarly, it is impossible for human beings to count your eternal infinite qualities.

मंत्र

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

गुण

इस प्रकार मंत्र प्रभाव तथा श्री पार्श्वनाथ स्वामी के प्रसाद से असमय में गर्भपात व अकालमरण नहीं होता और संतान चिरजीव होती है।

पद्यानुवाद

सागर में बहु रत्न भरे, गिनती उनकी कौन करे-2
कोई नहीं समर्थ दिखे-ऽऽऽ
वैसे प्रभु के अनंत गुण, गिन नहिं सके महान निपुण-2
ऐसे प्रभु के गुण हो-3, गाये गुण पाये रे-ऽऽऽ

मिथ्यामल क्षय होने पर भी, कौन आप गिन सकता गुण,
नहीं समर्थ मनुष है कोई, निश्चय से नहिं कोइ निपुण।
प्रलयकाल में पानी के बिन, सागर में रह जाते रत्न,
कोइ नहीं गिन सकता उनको, चाहे कितने करे प्रयत्न॥

जिसने मोह मिटाया सारा, निज अनुभव पाया निज प्यारा।
उनने भी नहिं गुण गिन पाये, हे प्रभु तुम गुणमय भण्डारा॥
प्रलयकाल मरु जब चल जाये, पानी निकल सभी बह जाये।
सागर में तव रत्न दिखें पर, कोई उनको गिन नहिं पाये॥

मोहनीय कर्मादि का, नष्ट कर दिया नाम।
उन प्रभु पार्श्व जिनेश को, करूँ **"विनम्र"** प्रणाम॥

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को 9 वर्ष तक हर वर्ष लगातार 20 रविवार को 1000 बार जपने से गर्भपात और अकालमरण नहीं होता।

ॐ ह्रीं सर्व पीड़ा निवारकाय श्री जिनाय नमः।

अनंत ज्ञान
अनंत शक्ति
अनंत दर्शन
अनंत सुख
स्वयंभू
विश्वनाथ
अर्द्धनारीश्वर
अगुरुलघुत्व
अव्याबाधत्व
त्रिजगत्पति

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लस-दसंख्य गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः?।।5।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, जडाशयः = जड़बुद्धि वाला अज्ञानी (मैं), अपि = भी, लसदसंख्यगुणाकरस्य = शोभित उत्तम असंख्यात गुणों की खानि स्वरूप, तव स्तवं = तुम्हारा स्तवन, कर्तुं = करने के लिए, अभ्युद्यतोऽस्मि = तत्पर हुआ हूँ। ठीक ही है।, बाल:अपि = बालक भी, स्वधिया = अपनी बुद्धि के अनुसार, निजबाहुयुगं = अपने दोनों हाथों को, वितत्य = फैलाकर, अम्बुराशेः = समुद्र की, विस्तीर्णतां = विस्तार को, किं = क्या, न कथयति = नहीं कहता है? अर्थात् कहता है।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे बालक अपनी बुद्धि से हाथों को फैलाकर समुद्र का विस्तार बताता है। वैसे ही अज्ञानी मैं आपके गुणों का अल्पबुद्धि से विस्तार कर रहा हूँ।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण बुड्ढिकराणं अणंतोहि जिणाणं।

(गोधन वृद्धि हेतु अनंतावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

अब्भुज्जदोसि तव णाह! जडासयोवि,
कत्तुं थवं लसदसंख गुणाकरस्य।
बालोवि किं ण णिय बाहु जुगं वितत्त,
वित्थिण्णतं कहयदि सहिअम्बु रासिं।।5।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Like a child spreading his hands with his innocent intellect to tell the expanse of the sea, in the same manner, I, the ignorant, am expanding your properties with a littele bit of my intellect.

मंत्र

ॐ पद्मिने नमः।

गुण

इस प्रकार इस मंत्र के प्रभाव से तथा पार्श्वनाथ स्वामी के प्रसाद से चोरी गया हुआ और जमीन में गड़ा हुआ धन एवं गुमा हुआ गोधन प्राप्त होता है।

पद्यानुवाद

हाथों को जो फैलाए, सागर सीमा बतलाए-2
बालक बुद्धू कहलाए-ऽऽऽ
वैसे ही मैं मूर्ख यहाँ, गुण गाने तैयार यहाँ-2
ऐसे ही भाव-हो-3, निज ज्ञान बढ़ाएँ रे-ऽऽ

मंदबुद्धि होकर भी तेरे, गुण अनंत मैं बता रहा,
हे स्वामिन्! भक्ती वश तेरी, थुति हो तत्पर, जता रहा।
क्या लघु बालक अल्पबुद्धि से करता नहीं जलधि विस्तार,
द्वय हाथों को विस्तृत करके, शक्ति बिना कहता आकाश।।

फैलाकर द्वय हाथ दिखाये, शिशु समुद्र विस्तार बताए।
शक्तिहीन फिर भी बतलाए, यह अबोधना ही कहलाए।।
वैसे ही प्रभु गुण के सागर! गुण अनंत के प्रभुवर गागर।
मैं अल्पज्ञ कहूँ गुण कैसे? उद्यत हूँ मैं कहने आकर।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः।

विधि

प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक 108 बार ऋद्धि और मंत्र की जाप जपने से गुमी हुई मवेशी, लक्ष्मी तथा धन का लाभ होता है।
ॐ ह्रीं सुख विधायकाय श्री पार्श्वनाथाय नमः।

सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाश:।
जाता तदेव - मसमीक्षित कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि।।6।।

अन्वयार्थ

ईश! = हे स्वामिन् तव= आपके, ये गुणा: = जो गुण हैं वे, योगिनां अपि = योगिश्वरों को भी, वक्तुं न यान्ति = कथन में नहीं आते हैं, तेषु मम = उन गुणों के कथन में मेरी, अवकाश: कथं = सामर्थ्यता कैसे, भवति = हो सकती है, अर्थात् मैं उन्हें कैसे वर्णन कर सकता हूँ, तत् एव = इसलिए ही हे देव! इस प्रकार, इयं = यह मेरी स्तुति करने की प्रवृत्ति, असमीक्षितकारिता जाता = बिना विचारे काम करता हुआ, जाता वा = हुई है अथवा, ननु = निश्चय से, पक्षिण: अपि = पक्षीगण भी, निजगिरा = स्वकीय वाणी से, जल्पन्ति = बोलते हैं। उसी प्रकार मैं भी बोलता हूँ।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे पक्षीगण बिना विचारे अपनी वाणी से कुछ भी बोलते रहते हैं वैसे ही मैं बिना विचारे उन जिनदेव का कथन कर रहा हूँ जिनका कथन करने में बड़े-बड़े योगीजन भी समर्थ नहीं है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुत्तइत्थि कराणं कोट्ठ बुद्धीणं।
(पुत्र स्त्री प्राप्ति हेतु कोष्ठ बुद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जे जोगिणं अवि ण जंति गुणातवेस,
वत्तुं कहं भवदि तेसु ममावकासो।
जाता तदेव असमिक्खिद कारितेअं,
जप्पन्ति वा णिय गिरा णणु पक्खिणोवि।।6।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Like the birds go on chirping out of their pleasure with their own voices, in the same manner out of my internal pleasure i keep on speaking without giving any thought, even the yogis are not capable speaking in that manner.

मंत्र

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्रां क्रीं क्षां क्षीं प्रीं ह्रीं नम: (स्वाहा)

गुण

संतति और संपत्ति की प्राप्ति होती है।

पद्यानुवाद

बिना विचारे बोले जो, पक्षी सा अज्ञानी हो-2
कैसे प्रभु गुण गाये वो-ऽऽऽ
योगी गुण नहिं गा पायें, हम कैसे गा सकते वो
फिर भी गुण गाये-हो-3, धर्मी बतलाएँ रे-ऽऽ

बड़े-बड़े ऋषि और तपस्वी, सक्षम नहिं गाने गुणगान,
हे प्रभु! हम कैसे गा सकते, कितना तुझमें दर्शन ज्ञान।
मेरे द्वारा किया गया यह तव स्तवन सुख का आधार,
परिणति अपनी दरशाई है, लेकिन लगती बिना विचार।।

गुण अनंत की प्रभुवर खान, कोइ न कर पाये गुणगान।
योगीश्वर भी थक-थक हारे, पा न सके वे भी विश्राम।।
भूल गया मैं अपनी शक्ति, प्रकट कर रहा फिर भी भक्ति।
बिना विचारे थुति की मैंने, पुण्य दायिनी मेरी प्रवृत्ति।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति अम्बिके! अम्बालिके! यक्षीदेवि यूँ यौं ब्लें हम्ल्कीं ब्लें ह् सौं र: र: र: रां रां दृष्टि प्रत्यक्षं मम देवदत्तस्य वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

इस मंत्र से 21 बार दातोन मंत्रित कर उसी से दाँत साफ करें पश्चात् 21 बार श्रद्धापूर्वक मंत्र का जाप जपने से इच्छित मनुष्य वश में होता है।

ॐ ह्रीं अव्यक्तगुणाय श्री जिनाय नम:।

अभीप्सित जनाकर्षक

आस्ता-मचिन्त्य महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत पान्थ - जनान्निदाघे-
प्रीणाति पद्म सरसः स रसोऽनिलोऽपि।।7।।

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर देव!, अचिन्त्यमहिमा ते = अचिन्त्य महिमा वाले आपका, संस्तवः = स्तोत्र तो आस्तां=दूर रहे, भवतः नामापि = आपके नाम का उच्चारण भी, जगन्ति भवतः = संसारी प्राणियों को संसार से, पाति = रक्षा करता है अर्थात् संसार दुःखों से बचाता है क्योंकि, निदाघे = ग्रीष्मकाल में, पद्मसरसः = कमलों से व्याप्त तालाब की, स रसः = जलकणों से युक्त, अनिलः अपि = वायु भी, तीव्रातपोपहत पांथजनान् = तीव्रआतप से व्याकुल राहगीरों को, प्रीणाति = संतुष्ट करती है उनके तीव्रताप को दूर कर सुखी करती है।

भावार्थ

हे प्रभु! कमलों से भरे तालाब की सुगंधित हवा संताप हरती है वैसे ही अचिन्त्य महिमायुक्त आपका स्तोत्र तो दूर आपका नाम ही सबका संताप हरता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिट्ठसाधयाणं बीजबुद्धीणं।
(अभीष्ट प्राप्ति हेतु बीज बुद्धि धारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

आत्थं अचिंत महिमा जिण संथवो ते,
णामावि पादि भवदो भवदो जगन्ति।
तिव्वा तपोवहदपंथ जणाणि दाहे,
पीणेदि पोम्मसरसो सरसोनिलोवि।।7।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Like the cold wind blowing over the pound filled with lotus flowers gives pleasure, likewise the eulogizing you is a way to give pleasure to the creatures.

मंत्र

ॐ नमो भगवते शुभाशुभं कथयित्रे स्वाहा।

गुण

परदेश गये हुए पति अथवा स्वजन संबंधी की 27 दिन के भीतर खबर मिलती है। यंत्र को पास रखने से साधक जिसकी इच्छा करता है उसका आकर्षण साधक के प्रति होता है।

पद्यानुवाद

करते पथ में पथिक गमन, गर्मी में हो तीव्र तपन-2
तुष्ट कराए शीत पवन-SSS
छोड़ो थुति जब नाम यहाँ, कर देता भवशाम यहाँ-2
पारस की महिमा-हो-3, अद्भुत बतलाएँ रे-SS

हे प्रभु! दूर रहे थुति तेरी, नाश करे दुख केवलनाम,
महिमा भक्ति अचिन्त्य तुम्हारी, शीतलता देना, यह काम।
ग्रीष्मऋतु में कमल युक्त सर, सुखदायी जो पीड़ित धाम,
पर उनकी शीतल वायु भी, देती मनु को सुख स्नान।।

ग्रीष्मकाल में आग बरसती, राहगीर को पीड़ा करती।
पद्माकर ही नहिं सुखदायी, ठंडी लहरें सुखमय लगतीं।।
वैसे ही प्रभु दुःख विनाशक, पावन गुणमय हैं शिवदायक।
बहुत दूर है थुति की बात, नाम तुम्हारा है सुखदायक।।

विशेष मंत्र

ॐ णमो भगवओ अरिट्ठणेमिस्स बंधेण बंधामि रक्खसाणं, भूयाणं खेयराणं, चोराणं, दाढाण साईणीणं, महोरगाणं अण्णेजेवि (दुट्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणं मुहं गइं दिट्ठी बधामि धणु धणु महाधणु जः जः (जः?) ठः ठः ठः हूं फट् (स्वाहा)।

विधि

गहन वन के कठिन मार्ग पर चलते हुए भय उत्पन्न होने पर इस मंत्र द्वारा कुछ कंकरों को मंत्रित कर चारों दिशाओं में फेकने से चोर सिंह सर्पादि का भय दूर होता है।

ॐ ह्रीं भवाटवीनिवारकाय श्री जिनाय नमः।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ज्ञानावरण
दर्शनावरण
मोहनीय
अंतराय
वेदनीय
नाम
गोत्र
आयु

कुपितोपदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म बन्धाः।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य भाग-
मभ्यागते वन-शिखंडिनि चन्दनस्य॥8॥

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्!, त्वयि=तेरे, हृद्वर्तिनि = हृदय में आ जाने पर, जन्तोः = प्राणियों के, निबिडा = सघन कठोर, अपि = भी, कर्मबन्धाः = कर्मबन्धन, क्षणेन = क्षण भर में, शिथिलीभवन्ति = शिथिल हो जाते हैं, इव = जैसे, वनशिखण्डिनि = मयूर के, चन्दनस्य = चन्दन के, मध्यभागं = मध्यभाग में, अभ्यागते = आ जाने पर, भुजंगममया = सर्पों की कुण्डलियाँ, सद्यः = शीघ्र ही शिथिल हो जाती हैं।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे चंदन के पेड़ पर लिपटे साँप के बंधन मयूर आते ही ढीले पड़ जाते हैं वैसे ही आपके हृदय में आते ही कर्मबंधन ढीले पड़ जाते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हगदहारीणं पदाणुसारीणं।
(भुजंग भय नाश हेतु पदानुसारी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

हीवत्तिणि तुइ विभू! सिडिली भवन्ति,
जन्तुं खणेण निबिडा अवि कम्म बंधा।
सज्जो भुजंगम मए इव मज्झभागं,
अब्भागदे वण सिहण्डिणि चंदणस्स॥8॥

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Like snakes coiling round the sandalwood trees lose their grip on coming of peacocks, in the way karmas get diminished as soon as you enthrone in our hearts.

मंत्र

ॐ नमो भगवते मम सर्वांगपीड़ा शांतिं कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

18 प्रकार का उपदंश, पित्तज्वर तथा सर्वप्रकार की ऊष्णता शांत होती है।

पद्यानुवाद

मोर जहाँ पर आते हैं-साँप वहाँ घबराते हैं-2
बंधन खुद खुल जाते हैं-ऽऽऽ
प्रभु जब हृदय समाते हैं-कर्मबंध मिट जाते हैं-2
प्रभु को जो ध्याये-हो-3, चिंतामणि पाये रे-ऽ

हे जिन! जिसके उर तुम रहते, वह पावन हो निर्बन्धन,
क्षणभर में सब सघनकर्म के, तोड़े वह अपने बंधन।
चंदन तरु पर, कुण्डल के सम, लिपटे सर्प महाविकराल,
मिलती जब आवाज गरुड़ की, बंधन ढीले दिखता काल॥

हे प्रभु! तुम जिस उर में आये, उसके उर में रत्न दिखाए।
कर्मबंध ढीले पड़ जाते, क्षण में यह घटना घट जाए॥
चंदन तरु को अहि लिपटाए, कोई जिसको हटा न पाए।
लेकिन मोर अगर आ जाए, तो बंधन ढीले पड़ जाएँ॥

उर से ध्याया नाम लें, पार्श्वनाथ भगवान्।
कर्मबंध ढीले पड़ें, करूँ "विनम्र" प्रणाम॥

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथ तीर्थंकराय हंसः महाहंसः पद्महंसः शिवहंसः कोपहंसः उरगेशहंसः पक्षि महाविषभक्षि हूँ फट् (स्वाहा)।

विधि

इस मंत्र को प्रतिदिन 108 बार जाप कर सिद्ध करें। पश्चात् सर्प डसे आदमी पर प्रयोग करे। अर्थात् मंत्र पढ़ते हुए झाड़ा देने से जहर दूर होता है।

ॐ ह्रीं कर्महिबंध मोचनाय श्री जिनाय नमः।

उपद्रव
रोग
विकल्प
व्याधि
विकार
आर्त
रौद्र

सर्प वृश्चिक विषनाशक

मुच्यन्त एव मनुजा: सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशव: प्रपलायमानै:।।9।।

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र! = हे जिनेन्द्रदेव!, इव = जैसे, स्फुरित तेजसि = प्रकट है तेज जिसका ऐसे पराक्रमी, गोस्वामिनि = गायों के मालिक के (राजा के), दृष्टमात्रे = दिखते ही, प्रपलायमानै: चौरै: = भागते हुए चोरों के द्वारा, पशव: = पशु, आशु= शीघ्र ही, मुच्यन्त: = छूट जाते हैं, इव=उसी प्रकार हे भगवन्, त्वयि = आपको, वीक्षिते = देख लेने पर, अपि=भी, मनुजा: = मानवों के, रौद्रै: उपद्रव शतै: = भयंकर सैकड़ों उपद्रवों के द्वारा, सहसा = शीघ्र, मुच्यन्त: = छूट जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे मालिक को देखकर चोर भाग जाते हैं, गाय मुक्त हो जाती हैं उसी प्रकार आपको देखते ही आर्त्तरौद्र सभी उपद्रवों से आत्मा मुक्त हो जाती है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विसहरविसविणासयाणं संभिण्ण सोदाराणं।
(विषधर विष विनाशन हेतु संभिन्न सोतृ ऋद्धि धारक जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

मुच्चन्त एव मणुजा सहसा जिणिन्द!
रोद्दं उवद्दव सतं तुइ विक्खिदेवि।
गोसामिणिं फुरति तेजसि दिट्ठि मत्ते,
चोरं इवासु पसवो पपलायमाणं।।9।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! As, on seeing the householder, the thief runs away the cows free, in the same way seeing you the soul gets free from all the worldly nuisancces.

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन हूं स्वाहा।

गुण

सर्प, गोह, बिच्छु और छिपकली आदि विषैले जंतुओं के विष का असर नहीं करता। विषैले जंतुओं के सताये जाने पर ऋद्धि मंत्र को बोलते हुए 108 बार झाड़ना चाहिए।

पद्यानुवाद

मालिक ज्यों ही नजराए-चोर स्वयं ही घबराए-2
गाय छोड़कर भग जाए-ऽऽऽ
वैसे ही प्रभु दर्शन से-सभी उपद्रव मिट जाए-2
जिनवर का दर्शन हो-3, सब ही दिखलाए रे-ऽऽ

तेजस्वी नृप देख चोर सब, माल छोड़ भग जाते हैं,
हे प्रभु! हाहाकार मचाते, अपने प्राण बचाते हैं।
वैसे भवि जो दर्शन करते, सभी उपद्रव हों निष्प्राण,
तेरा दर्शन महा शक्तिमय, अघ रक्षा करते निज प्राण।।

शतक उपद्रव कण फैलाए, मानव देखे घबरा जाएँ।
ज्यों ही प्रभु का दर्शन होता, दु:ख से खुद मानव बच जाएँ।।
चोर चुराकर गायें लाए, मालिक चोर पकड़ने आए।
लेकिन यह मालिक दिख जाए, चोर छोड़ गायें भग जाए।।

विशेष मंत्र

ॐ इंदसेणा महाविज्जा देवलोगाओ आगया दिट्ठिबंधणं करिस्सामि भड़ाणं भूआणं अहिणं दाढ़ीणं सिंगीणं चोराणं चारियाणं जोहाणं वग्घाणं सिहाणं भूयाणं गंधव्वाणं महोरगाणं अन्नेसिं (अण्णं वि?) दुट्ठसत्ताणं दिट्ठिबंधण मुह बंधणं करेमि ॐ इंदनरिंदे स्वाहा।

विधि

दीवाली के दिन निराहार रहकर 108 बार इस मंत्र का जाप करें। पश्चात् मार्ग में चलते हुए इस मंत्र को 21 बार बोलने से सब प्रकार का भय तथा उपद्रवों का नाश होता है।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव हरणाय श्रीजिनाय नम:।

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्-जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः।।10।।

अन्वयार्थ

जिन!= हे जिनेन्द्र देव, त्वं =आप, भविनां तारकः = संसारी प्राणियों को तारने वाले, कथं= कैसे हो सकते हो, यत्=क्योंकि, ते एव = वे संसारी प्राणी ही, त्वां हृदयेन = आपको हृदय में, उद्वहन्ति = धारण करते हुए, उत्तरन्तः=संसार समुद्र से पार हो जाते हैं, यद्वा = संसारी प्राणी ही तुमको तिराकर जाते हैं ठीक है, यत् =जो, दृति जलं = चर्म पात्र जल में, तरति = तिरता है, किल = सत्य, वास्तव में, नूनं सः एषः = निश्चय से वह यह, तस्यः अन्तर्गतस्य = उस मशक के अन्दर, मरुतः अनुभावः = वायु का ही प्रभाव है।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे मशक में हवा के प्रभाव से लोग पानी में तैरकर पार हो जाते हैं वैसे ही हृदय में आपके प्रभाव से लोग संसार से पार हो जाते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खर भय पणासयाणं उजुमदीणं।
(तस्कर भय नाशन के लिए ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

तुं तारगो जिण! कहं भविणं त एव,
तुं उव्वहन्ति हियएण जंउत्तरन्तो।
जं वा दिती तरति जंजल एस णूणं,
अन्तग्गतस्स मरुदो स किलाणु भावो।।10।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! As the people swim across the water using waterskin owing to the air filled in it, likewise having you in the heart, people get through this world.

मंत्र

ॐ ह्रीं भगवत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।

गुण

चोर, ठग वगैरह के भय का नाश होता है।

पद्यानुवाद

मसक न पार कराती है-हवा पार करवाती है-2
बात समझ ये आती है-ऽऽऽ
पार कराते प्रभू हमें-या हम पार कराते हैं-2
दिल में प्रभु बैठे-हो-3, भव पार कराएँ रे-ऽऽ

मशक भरी वायु तो वह भी, डूब न सागर पाती है,
सागर में रह करके भाई, बारिधि से तिर जाती है।
हे प्रभु आप भरे जिस उर में, वह भव डूब न पाता है,
तारन हारे तुम हो लेकिन मनु भव में तिर जाता है।।

जो भवि तुमको उर में धरता, वह ही प्राणी भव में तिरता।
तेरा ही प्रभाव है भगवन, शिव रमणी वह प्राणी वरता।।
मशक पानी से भरी हुई है, पानी में वह पड़ी हुई है।
तिरती जाती नहीं डूबती, यह प्रभाव वायु का ही है।।

विशेष मंत्र

ॐ चक्रेश्वरी चक्रधारिणी जल जलनिहि पार उतारणि जलं थंभय दुष्टान् दैत्यान् दारय दारय असिवोसमं कुरु कुरु ॐ ठः ठः (ठः?) स्वाहा।

विधि

गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र का योग पड़ने पर इस मंत्र को शुद्ध हृदय से 108 बार जप कर सिद्ध करें। पश्चात् कार्य पड़ने पर 21 बार मंत्र का आराधन करने से हर तरह के पानी का भय नष्ट होता है।

ॐ ह्रीं भवोदधि तारकाय श्रीजिनाय नमः।

कामदेव विजय मुनिराज

जलाग्नि भयविनाशक

यस्मिन् हर - प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावा:,
सोऽपि त्वया रति-पति: क्षपित: क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुज: पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्द्धर-वाडवेन?।।11।।

अन्वयार्थ

यस्मिन् = जिस कामदेव के विषय में, हरप्रभृतय: अपि = शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि भी, हतप्रभावा:= प्रभाव रहित हो गये अर्थात् काम के अधीन हो गये, स:=वह, रतिपति: अपि त्वया = कामदेव भी तुम्हारे द्वारा, क्षणेन = एक क्षणभर में, क्षपित: = नष्ट कर दिया गया, सो अथ = ठीक ही है क्योंकि, येन पयसा हुतभुज: = जिस पानी के द्वारा अग्नि, विध्यापित: = बुझाई जाती है , किं तत् अपि= क्या वह जल भी, दुर्द्धर वाडवेन न = दुर्द्धर बड़्वानल के द्वारा नहीं, पीतं = पिया जाता है? अग्नि क्या पानी का शोषण नहीं करती है? अपितु करती ही है।

भावार्थ

हे भगवन्! जो पानी अग्नि बुझाता है उसी पानी को बड़्वानल की आग भस्म कर देती है वैसे ही जिस कामदेव ने तीनों लोक जीत लिया उसी को आपने क्षण में ही भस्म कर दिया।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारियालण बुद्धीणं विउलमदीणं।
(अग्निभय नाश के लिए विपुलमति मन:पर्यय ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जस्सिं हरप्पभितयोवि हतप्पहावा,
सोवि तुए रतिपदि खवितो खणेण।।
विज्झापिता हुत भुजो पयसाथ जेण।
पीदं ण किं तदवि दुद्धर वाडवेण।।11।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh God! The water that generally blows out the fire, but the same water is incinerated by the fire in the ocean (Badvanala). Similarly, the same cupid who won the three-folk, is incinerated by you in a moment.

मंत्र

ॐ सरस्वत्यै गुणवत्यै नम: स्वाहा।

गुण

यंत्र पास रखने में साधक पानी में नहीं डूबता है। जैन शासन की रक्षिका देवी आराधक की अथाह जल से रक्षा करती है तथा कुदेवादिकों का भय नष्ट होता है।

पद्यानुवाद

जल, अग्नि को नाश करे, बड़्वानल जल नाश करे-2
जल के दो दो काम अरे-ऽऽऽ
काम मिटाए रागी को, मिटता गर वैरागी हो-2
प्रभुवर ने क्षण में हो-3, सब काम मिटाए रे-ऽऽ

हरि-हर ब्रह्मा आदि सभी जन, हार गए जब आया काम,
हे प्रभु! तुमने ब्रह्मशक्ति से, किया काम का काम तमाम।
जिस जल ने विंध्याचल गिरि की, अग्नि बुझाई सच ये बात,
बड़्वानल की आग बुझाने, उस जल में क्या शक्ति बिसात।।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर हारे, ऐसे सुभट काम के मारे।
तुमने कामदेव वह जीता, जिसने सब पर पाँव पसारे।।
जिस पानी से आग बुझाते, वह ही बड़्वानल पी जाते।
दोनों शक्ति हमारे अन्दर, जिसको प्रकट करें कर जाते।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति अग्निस्तंभिनि! पंचदिव्योत्तरणि! श्रेयस्करि! प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्वल सर्वकामार्थ साधनि! ॐ अनलपिङ्गोर्ध्वकेशिनि! महाधिव्याधि पतये स्वाहा।

विधि

इस महामंत्र को भोज पत्र पर केशर अथवा हरताल से लिखकर उसे बढ़ती हुई अग्नि में डालने से तज्जन्य उपद्रव शांत हो जाता है।

ॐ ह्रीं हुतभुग्भय निवारकाय श्रीजिनाय नम:। श्री फलवर्द्धि पार्श्व (नाथ) स्वामिने नम:।

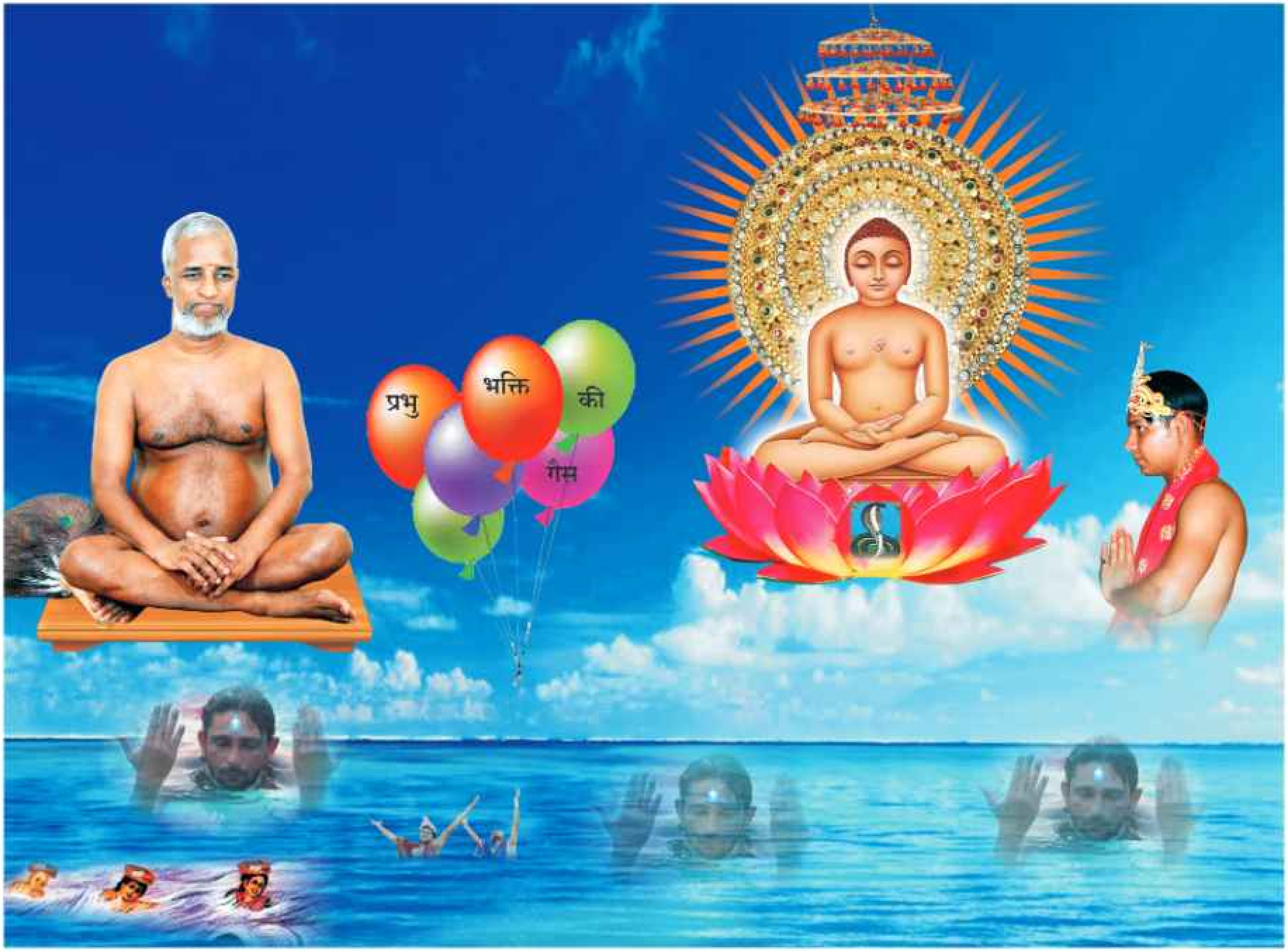
प्रभु
भक्ति
की
गैस

अग्निभय विनाशक

स्वामिन्–ननल्प गरिमाण–मपि प्रपन्नास्,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः।।12।।

अन्वयार्थ

स्वामिन् = हे जिनेन्द्र भगवन्!, अहो = आश्चर्य है कि, अनल्पगरिमाणं = अत्यधिक गौरव से युक्त विरोध पक्ष में वजनदार, त्वां प्रपन्नाः = तुमको प्राप्त, हृदये = हृदय में, दधानाः = धारण करने वाले, जन्तवः = संसारी प्राणी, जन्मोदधिं = संसार समुद्र को, अपि = भी, अतिलाघवेन = अति लघुता हल्केपन से, कथं = कैसे, लघु = शीघ्र ही, तरन्ति = तिर जाते हैं, यदि वा = अथवा, हंत = हर्ष है कि, महतां = महापुरुषों का, प्रभावः = प्रभाव, चिन्त्यः न = चिंतवन करने योग्य नहीं है, अर्थात् अचिंत्य है।

भावार्थ

हे भगवन्! अनंतगुणों के भार से युक्त आपको हृदय में पाकर संसारी प्राणी हल्कापन महसूस करता हुआ शीघ्र ही तिर जाता है सो ठीक है महापुरुषों का प्रभाव अचिन्तनीय है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणलभय वज्जयाणं दसपुव्वीणं।
(अग्निभयनाशन हेतु दसपूर्वधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

सामिं न अप्प गरिमाण अविप्प पण्णं,
तुं जन्तवो कहमहो हियए दहाणा।
जम्मोदहिं लघु तरन्ति तु लाहवेण,
चिंते ण हंत महदं जदि वा पहावो।।12।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Having you, the holder or infinite virtues, in his heart, the worldly creature feeling light attain emancipation, it is right. The influence of the great men is unknowable.

मंत्र

ॐ नमो (भगवत्यै) चण्डिकायै नमः स्वाहा।

गुण

हर प्रकार का अग्निभय नष्ट होता है। चुल्लू पानी उक्त मंत्र से मंत्रित कर अग्नि पर डालने से वह शांत हो जाती है और मंत्र का आराधक उस अग्नि पर चल सकता है तो भी जलता नहीं है।

पद्यानुवाद

दर्श ज्ञान से भारी हैं, हृदय धरें संसारी हैं–2
प्रभु सबको उपकारी हैं–ऽऽऽ
तुम्हें हृदय धर जाते जो, कैसे झट तिर जाते वो–2
प्रभुवर की महिमा हो–3, नहिं चिंत्य बताएँ रे–ऽऽ

जिनका था गौरव अति जग में, वो भी हुए समर्पित आप,
हे प्रभु! अचरज भारी, तुमको, उर में धरे, तजे वह पाप।
महापुरुष भी चिंतन करते, तुम्हें नहीं उर पाते हैं,
चिंतन से भी दूर प्रभु तुम, महिमा ऋषि बताते हैं।।

जिसने तुम्हें हृदय में ध्याया, गुण–गौरव को उसने पाया।
इतना हल्का वह हो जाता, तिरने वाली उसकी काया।।
अचरज की यह बात बताई, महाज्ञानियों में यह पाई।
ध्याते वो कैसे तिर जाते? चिंतन कर सकते नहिं भाई।।

जिनका ध्यान अचिन्त्य है, निर्विकल्प विश्राम।
ऐसे पार्श्व जिनेश को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा वांछित मे कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस महामंत्र का 125000 सवालाख जाप करने से समस्त मनोवांछित कार्यों की सिद्धि होती है।

कषाय
लोभ
मोह
कर्म
कर्म
अज्ञान

जल मिष्ट कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी?।।13।।

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्, यदि त्वया =आपके द्वारा, क्रोधः प्रथमं = क्रोध को पहले ही, निरस्तः = नष्ट कर दिया जाता, तदा= तो फिर, वद = कहिये कि आपने, कर्मचौराः = कर्म रूपी चोरों को, कथं ध्वस्ताः = कैसे नाश किया?, किल = यह मुझे आश्चर्य हो रहा है, यदि वा = अथवा ठीक ही है, अमुत्र लोके = इस लोक में, शिशिरा अपि = ठण्डी होने पर भी, हिमानी किं = बर्फ क्या, नीलद्रुमाणि = नीले वृक्ष वाले, विपिनानि = वन को, न = नहीं, प्लोषति = जलाती है? अर्थात् जलाती है।

भावार्थ

हे प्रभु! लू से ही पेड़ नहीं जलते ठंडी ओस (पाला) पड़ने से भी नीले फूल जल जाते हैं वैसे ही क्रोध से ही कर्म नहीं कटते। ठंडे क्रोध (क्षमा) से भी कर्मों का नाश किया जाता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिक्खभय वज्जयाणं चोद्दसपुव्वीणं।
(चौदह पूर्वधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

कोहो तुए जदि विभू! पढमं णिरट्ठो,
णट्ठो तदा वद कहं किल कम्म चोरा।
लोसेदितत्थजदि वा सिसिरावि लोए,
नीलद्दुमाणि विवणाणि ण किं हिमाणी।13।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh Lord! Not the sunstroke only burns the trees, but cold waves also burn the blue flowers. Karmas are do away not only with anger, but with cold forgiveness also.

मंत्र

ॐ नमो भगवत्यै चामुण्डायै नमः स्वाहा।

गुण

सात दिन तक प्रतिदिन झारी भर पानी उक्त मंत्र से 108 बार मंत्रित करके खारे जल के कुएँ बावड़ी आदि में डालने से पानी अमृत तुल्य हो जाता है।

पद्यानुवाद

क्रोध खत्म कर, मारा है, कर्मों को निरवारा है-2
बिना क्रोध फटकारा है-ऽऽ
बर्फ यहाँ पड़ जाती है-हरियाली जल जाती है
ठंडी अग्नि से हो-3, जंगल जल जाए रे-ऽऽऽ

हे भगवन्! तुम क्रोध रहित थे, कैसे पाई अरि पर जय,
क्रोध बिना इस भव में प्राणी, कैसे पाता कभी विजय।
बर्फ पड़े जब भारी तब तक, हरे भरे जल जाते हैं,
वैसे क्षमा ठंड सी अग्नि, कर्म सभी मिट जाते हैं।।

अगर पूर्व में क्रोध मिटाया, तो फिर कैसे कर्म नशाया।
अचरज यह हमको लगता है, हे प्रभु! यह कैसे हो पाया।।
तरु को केवल आग जलाती, बात नहीं यह समझ में आती
शीत बर्फ भी पेड़ जलाती, बात यही प्रभु में नजराती।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं असिआउसा सर्वदुष्टान् स्तम्भय स्तम्भय अंधय अंधय मूकय मूकय मोहय मोहय कुरु कुरु ह्रीं दुष्टान् ठः ठः ठः स्वाहा।

विधि

पूर्व दिशा की ओर मुख करके किसी एकान्त स्थान में बैठकर 8 या 21 दिन तक प्रतिदिन मुट्ठी बाँधकर इस मंत्र का 1100 बार जाप करने से सभी तरह के दुष्ट-क्रूर व्यंतरों के कष्टों से मुक्ति होती है।

ॐ ह्रीं कर्मचौर विध्वंसकाय श्रीजिनाय नमः।

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष देशे।
पूतस्य निर्मल रुचे-र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकाया:।।14।।

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेन्द्र, योगिन: = योगीजन सदा निरन्तर, परमात्मरूपं = परमात्मा स्वरूप, त्वां = आपको, हृदयाम्बुज कोषदेशे = हृदय रूपी कमल के मध्य में, अन्वेषयन्ति = खोजते हैं, यदि वा = ठीक ही है, पूतस्य = पवित्र, निर्मलरुचे: = निर्मल कान्ति वाले, अक्षस्य ननु = कमल बीजों का निश्चय से, सम्भवपदं = उत्पत्ति स्थान, कर्णिकाया: = कर्णिका के, अन्यत् = बिना, वा किं = क्या दूसरा और हो सकता है।

भावार्थ

हे स्वामिन्! पवित्र निर्मल कांतियुक्त कमल का बीज कमल कर्णिका में ही पैदा होता है वैसे ही निर्मल पवित्र परमात्मा हृदयकमल की कर्णिका से ही पैदा होता है। इसीलिए योगीजन हृदयकमल पर ध्यान करते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भंसणभय झवणाणं अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं।

(शत्रु भय नाश के लिए अष्टांक महानिमित्तधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

तुं जोगिणो जिण सया परमप्परूवं,
अण्णेसयन्ति हिदयंबुज कोस देसे।
पूदस्स णिम्मल रुचिं जदि वा किमण्णं,
दक्खस्स संभवपदं णणु कण्णिकाया।।14।।

यंत्र

अंग्रेजी

Hey Master! The seeds of pure nectarous lotus are produced in the lotus serum (chord). Similarly, the pure holy spirit is born in the heart (hridaykhand). The is why Yogis (ascetics) meditate through their heart.

मंत्र

ॐ नमो (महाराति?) कालरात्रि (त्रये?) नम: स्वाहा।

गुण

शत्रु क्रोध छोड़कर बैरभाव तज देता है और निर्मल विचार वाला बन जाता है अथवा उसका नाश होता है।

पद्यानुवाद

हृदय कमल पर ध्याते हैं, वे उर में प्रभु पाते हैं-2
निर्मल भाव बनाते हैं-ऽऽऽ
सबसे सुंदर हृदय कमल, यही जगह प्रभु की निर्मल-2
दिल में प्रभु ध्याये हो-3, वो कर्म मिटाए रे-ऽऽ

हे स्वामिन्! ध्यानी योगीश्वर! तुमको खोजे हृदय कमल,
उर में ही राजित रहता है, शुद्धातम चैतन्य विमल।
महा सरोवर में खिलते हैं, सुरभित सुन्दर बहुत कमल,
लेकिन बीज, कमल कणिका में, होता है यह बात अटल।।

योगीजन नित तुमको ध्यावें, पावन निर्मल ध्यान लगावें।
नहीं खोजते मंदिर-मस्जिद, अपने उर में तुमको पावें।।
हे प्रभु! तेरी परम सुवास, हृदय कमल में निर्मल वास।
अन्य जगह नहिं तेरी कोई, ऐसा हमको है विश्वास।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो मेरु, महामेरु, ॐ नमो गौरी महागौरी, ॐ नमो काली, महाकाली, ॐ नमो इंदे महाइंदे, ॐ नमो जये, महाजये (ॐ नमो विजये महाविजये) ॐ नमो पण्णसमिणि महापण्णसमिणि अवतर अवतर देवि अवतर (अवतर) स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र का 8000 बार जाप करके मंत्र सिद्ध करें। तथा आईना को उक्त मंत्र से मंत्रित कर सफेद-स्वच्छ-पवित्र कपड़े पर रखें फिर उसके सामने किसी कुआंरी कन्या को सफेद वस्त्र पहिनाकर बिठावें पश्चात उसससे जो बात पूछें उसका वह सच्चा उत्तर देगी।

ॐ ह्रीं हृदयाम्बुजान्वेषिताय श्रीजिनाय नम:।

चोरी गत द्रव्य दायक

ध्यानाज्–जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म–दशां व्रजन्ति।
तीव्रानला–दुपल–भाव–मपास्य लोके,
चामीकरत्व–मचिरादिव धातु भेदाः।।15।।

अन्वयार्थ

जिनेश! = हे जिनेन्द्र भगवान्!, भवतःध्यानात् = आपके ध्यान से, भविनः = संसारी प्राणी, क्षणेन = एक क्षण में, देहं = शरीर को, विहाय = छोड़कर, परमात्मदशां = परमात्म अवस्था को, व्रजन्ति = प्राप्त होते हैं, इव लोके = जैसे लोक में, तीव्रानलात् = तीव्र अग्नि के सम्बन्ध में, धातुभेदाः = धातु युक्त पाषाण भेद, उपलभावं = स्वकीय पाषाण पर्याय को, अपास्य = छोड़कर, अचिरात् = शीघ्र ही, चामीकरत्वं = सुवर्ण पर्याय को, व्रजन्ति = प्राप्त हो जाता है।

भावार्थ

हे भगवन्! धातु सहित पाषाण अग्नि के संयोग से शीघ्र ही स्वर्णता को प्राप्त हो जाता है वैसे ही संसारी प्राणी आपके ध्यान से शरीर छोड़कर परमात्मा बन जाता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खर धणप्पयाणं विउव्वणपत्ताणं।
(अक्षय धन प्राप्ति हेतु विक्रिया ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

झाणज्जिणेस! भवदो भविणो खणेण,
देहं विहस्स परमप्पदसं वजन्ति।
तिव्वानला उवल भाव अपस्स लोए,
चामीकरत्त अचिराइव धाउ भेदा।।15।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Metallic rock combines with fire soon turns into gold, in the same manner the worldly creature, diverting its attention from the body, through meditation become God!

मंत्र

ॐ नमो गंधारि (रयै?) नमः श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं हुं स्वाहा।

गुण

चोरी गई वस्तु वापिस मिल जाती है।

पद्यानुवाद

पत्थर को जब अग्नि मिले, तभी शुद्धमय स्वर्ण खिले–2
ऐसा कहते लोग भले–ऽऽऽ
ध्यान दीप जब हृदय जले, उसको तन में प्रभु मिले–2
क्षण में ही ध्यानी–हो–3, प्रभु पद पा जाये रे–ऽऽ

महा अग्नि से पत्थर जलकर, राख शीघ्र हो जाता है,
हे प्रभु! अपनी पर्यय तजकर, दूजी पर्यय पाता है।
वैसे ही भवि प्राणी करते, अग्निमयी जब तेरा ध्यान,
क्षण भर में पर्याय छोड़कर, पा लेते परमातम धाम।।

जो प्रभु करता तेरा ध्यान, करता तन से वही प्रयाण।
वह परमात्म अवस्था पाता, बन जाता वह खुद भगवान।।
पाषाणों में स्वर्ण मिला हो, अग्नि का संयोग हुआ हो।
तो वह स्वर्ण शुद्ध हो जाता, स्वर्ण वही जो अलग हुआ हो।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं एकाहिक द्व्यहिक चातुर्थिक महाज्वर क्रोध ज्वर, शोक ज्वर, भय ज्वर, कामज्वर, कलितरव, महावीरान् बंध बंध ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

विधि

इस अनादि निधन महामंत्र का मन में स्मरण करते हुए नूतन श्वेत वस्त्र के छोड़ में गाँठ बाँधे, उसको गूगल तथा घी की धुनी देवे, तदुपरान्त उस वस्त्र को ज्वर पीड़ित रोगी को उड़ावे मंत्रित गाँठ रोगी के शिर के नीचे दबाने से सब तरह के ज्वर दूर होते हैं और रोगी को सुख की नींद आती हैं।

ॐ ह्रीं जन्ममरणरोग हराय श्रीजिनाय नमः।

नोकर्म
भावकर्म
द्रव्यकर्म
राग
द्वेष
कलह

गहन वन पर्वत भय विनाशक

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्?
एतत् स्वरूप-मथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः।।16।।

अन्वयार्थ

जिन = हे जिनेश्वर देव! भव्यैः = भव्य प्राणियों के द्वारा, यस्य = जिस शरीर के, अन्तः त्वं = मध्य में आप, सदैव = निरंतर, विभाव्यसे = ध्यान किए जाते हैं, तत् शरीरं अपि = उस शरीर को भी आप, कथं नाशयसे = कैसे नष्ट कर देते हैं, अथ= अथवा, मध्यविवर्तिनः = मध्यस्थ, एतत्स्वरूपं = यह स्वभाव ही है अर्थात् यह वस्तु का स्वरूप ही है, यत्= कि, महानुभावाः = महापुरुष, विग्रहं = कलह (शरीर) को, प्रशमयन्ति = नाश करते हैं। (दूसरे पक्ष में 'विग्रह' शरीर के राग-द्वेष नाश कर देते हैं)

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे महापुरुष जहाँ भी जाते हैं वहाँ के कष्टों को दूर कर देते हैं वैसे ही आपको जो हृदय में बुलाते हैं तो आप उनके शरीर (जो कष्टों का पिटारा है उसको ही) को ही नष्ट कर देते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहणवणभवणासयाणं विज्जाहराणं।
(गहन वन भय नाश हेतु विद्याधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

अन्तो सयेव जिण! जस्स विभव्वसे तुं,
भव्वं कहं तदवि णासयसे सरीरं।
एदं सरूवअह मज्झ विवत्तणो हि,
जं विग्गहं पसमयन्ति महाणुभावा।।16।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh God! Where ever the great men go, suffering are removed. Likewise, calling you at the core of the heart removes the pains of physical human bodies.

मंत्र

ॐ नमो गीरी (गौर्याये?) इन्द्रे (इन्द्रायै) वज्रे (वज्रायै) ह्रीं नमः स्वाहा।

गुण

पर्वत पर भी उपसर्ग नहीं होता तथा बीहड़ वन में भी भय का नाश होता है।

पद्यानुवाद

जिस तन से प्रभु ध्यान करें, प्रभु उस तन को नाश करें-2
लगता है आश्चर्य अरे-ऽऽऽ
महापुरुष जहाँ आते हैं, भवि के दुक्ख मिटाते हैं-2
ऐसा स्वभाव-हो-3, प्रभु का बतलाएँ रे-ऽऽ

जिससे तुमको ध्याया जाता, उसका तुम कर देते नाश,
लोक विरुद्ध बात यह भारी, कौन करे तुम पर विश्वास।
महापुरुष जिस तन में रहते, दुख से उसे छुड़ाते हैं,
तन ही महादुखों का डेरा, तन को नाश कराते हैं।।

जिस तन से भी ध्याया जाता, वह ही मिटता देखा जाता।
यह अचरज हमको लगता है, यह विपरीत अचंभा पाता।।
महापुरुषों का यही भाव है, अघ नाशें यह ही स्वभाव है।
तन तो है दुःखों की खान, हे प्रभु तेरा ही प्रभाव है।।

रूप-गंध नहिं वर्ण है, अविनाशी-अविराम।
पार्श्वनाथ भगवान को, करूँ "**विनम्र**" प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं पादौ रक्ष रक्षत, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ब्रह्माण्डं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं एसो पंच णमोयारो शिखां रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष, ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं आत्म रक्षा पर रक्षा हिलि हिलि मातंगिनि स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस महामंत्र का प्रतिदिन जाप करने का कार्माणादि कर्मों का दोष दूर होता है
ॐ ह्रीं विग्रह निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

ॐ ह्रीं देहदेहि कलह निवारकायं क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं
सोऽहं

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि रयं त्व–दभेद बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभाव:।
पानीय – मप्यमृत – मित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष विकार–मपाकरोति।।17।।

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र! = हे जिनेश्वर देव!, इह = इस लोक में, मनीषिभि: = बुद्धिमानों के द्वारा, त्वदभेदबुद्ध्या = आपका अभेद बुद्धि से, ध्यात: = ध्यान किया गया, अयं = यह संसारी, आत्मा = आत्मा, भवत्प्रभाव: = आप जैसे प्रभाव से युक्त, भवति = हो जाता है सो ठीक ही है, अमृतं = यह अमृत है, इति = इस प्रकार, अनुचिंत्यात्मानं = चिंतन मनन या ध्यान किया हुआ, पानीयं अपि = पानी भी, किं नाम विषविकारं = क्या विष के विकार को, नो अपाकरोति = दूर नहीं करता? अपितु करता ही है।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे पानी को अमृत समझ के पीने से वह अमृत हो जाता है वैसे ही अभेद बुद्धि से आपको जो ध्याता है वो आप जैसा प्रभावी हो जाता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठवुद्धि णासयाणं चारणाणं।
(कुण्ठवुद्धि नाशन के लिए चारण ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

अप्पा मणीसिहि अयं तु अभेय बुद्धिं,
झादो जिणिन्द! भवदीह भवप्पहावो।
पाणीय तं अमिद इच्चअणुचिंतमाणं,
किं णाम णो विसवियार अवा कुणेदि।।17।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! As taking water thinking it as elixir, it turns into elixir, likewise the one meditating you with his impenetrable intellect becomes influential like you.

मंत्र

ॐ नमो धृति देव्यै ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं द्रां द्रीं नम: (स्वाहा)।

गुण

यंत्र पास रखने पर विग्रह (वैर–विरोध) शांत होता है और विजय प्राप्त होती है।

पद्यानुवाद

ज्ञानी प्रभु का ध्यान करें, जिनवर जैसी कांति वरें–2
निज में अमृतपान करें–SSS
मंत्रित हो जल मंत्रों से, विषय विकार विनाश करे–2
वैसे प्रभु नाम हो–3, अमृत बन जाये रे–SS

हे प्रभु! महामनीषी! तुमको, निर्विकल्पमय जब ध्याते,
तुम जैसे वैभवशाली बन केवलज्ञानी हो जाते।
निरत चिंतवन अमृत जल क्या, विष को दूर नहीं करता,
तेरे जैसा ध्यान अगर हो, तो क्या मुक्ति नहीं वरता।।

जो अभेद से ध्याता तुमको, वो ही उर में पाता तुमको।
शीघ्र तुम्हीं जैसा हो जाता, वही मिटाता सारे तम को।।
निर्मल जल मंत्रित हो जाता, तब वह अमृत सा हो जाता।
सारे विष को दूर भगाता, ऐसा गुण उसमें भर जाता।।

विशेष मंत्र

ॐ य: य: स: स: ह: ह: व: व: उरुरिल्लय रुह (ह) रुहान्त ॐ ह्रीं पार्श्वनाथ दह दह दुष्ट नागविषं क्षिप ॐ स्वाहा।

विधि

इस मंत्र को 7 बार जल मंत्रित कर जिस जगह सर्प काटा हो उस जगह छिड़कने से तथा उसी मंत्रित जल को पिलाने से सर्प का विष नाश होता है अन्य विषैले जन्तुओं के विष का असर भी दूर होता है।

ॐ ह्रीं आत्मस्वरूपध्येयाय श्रीजिनाय नम:।

सांख्य
बौद्ध
नैयायिक
मीमांसक
पक्षवादी
अन्यमती

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरि-हरादि धिया प्रपन्ना:।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण।।18।।

अन्वयार्थ

विभो = हे भगवन्!, नूनं = निश्चय से, परवादिन: = अन्यमतावलम्बी नैयायिक आदि, वीत तमसं = अज्ञान, अन्धकार से रहित, त्वां = तुमको, एव = ही, हरिहरादिधिया = हरिहर आदि की बुद्धि से, प्रपन्ना: = प्राप्त होते हैं, पूजते हैं, ठीक ही है, ईश! = हे स्वामिन्, किं = क्या, काच कामलिभि: = काँच कम्बला रोग से पीड़ित मानवों के द्वारा, सित: = सफेद, अपि = भी, शंखा: = शंख, विविध वर्ण विपर्ययेण = विविध प्रकार के वर्ण की विपरीतता से, नो = नहीं, गृह्यते = ग्रहण किया जाता है?

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे पीलिया रोग वाले को सफेद मठा भी पीला दिखता है वैसे ही वीतरागता से अनभिज्ञ अज्ञानी लोग आपको ब्रह्मा विष्णु महेश समझकर पूजते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो फणि सत्तिसोसयाणं पण्णसमणाणं।

(सर्पशक्ति नाश के हेतु प्रज्ञाश्रमणों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

तुज्झेव वीद तमसं परवादिणोवि,
णूणं विभुं हरिहरादिधिए पपण्णो।
किं काचकामलिहिं ईस सिदोवि संखो,
णो गिण्हिदे विविह वण्ण विवज्जयेण।।18।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! As a patient suffering from jaundice sees even the white whey as yellow, in the same manner the ignorant people not knowing worldly detachme worship you considering as Brahma, Vishnu and Mahesh.

मंत्र

ॐ नमो उ (सु) मतिदेव्यै विषनिर्णाशिन्यै नम: स्वाहा।

गुण

जिस स्त्री या पुरुष को भयंकर भुजंग ने काटा हो उसके मुख और ललाट पर उक्त मंत्र से मंत्रित जल के छींटे चुल्लू भर पानी में भर कर उस पर मारता रहे जबतक वह निर्विष न हो जाए इस मंत्र से सर्प का विष उतर जाता है।

पद्यानुवाद

भोगी देखे भोग जहाँ, योगी देखे योग वहाँ-2
उपयोगी उपयोग वहाँ-SSS
जैसा चश्मे का रंग हो, वैसा मंजर का रंग हो-2
पीली आँखों को हो-3, पीला नजराए रे-SSS

मिथ्या उदय रहे जिस मनु का, रागी कहते करि संजोग,
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आदी, अन्यमती कहते सब लोग।
रोग पीलिया ग्रस्त खेत रंग, देखे पीला दिखता है,
हे प्रभु! दृष्टि दोष है इसमें, इस बिन क्या हो सकता है।।

अन्यमती हरदम ये जानें, तुमको ब्रह्मा-विष्णु मानें।
निश्चय से उनका अज्ञान, उन जैसा तत्र बुद्धि जानें।।
रोग पीलिया जब हो जाये, श्वेत आँख नहिं श्वेत दिखाये।
हे प्रभु! निश्चय से अज्ञान, जिसमें सत्य नहिं दिख पाये।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ॐ णमो सुअदेवाए भगवईए सव्व सुअमए बारसंग पवयण जणणीए सरसइए सव्ववाइणि सुवण्णवणे ॐ अवतर अवतर देवि मम सरीरं पविस पुव्वं, तस्स पविस सव्वजणभय हरीए अरिहंत सिरिए स्वाहा।

विधि

इस मंत्र को पढ़कर चाक मिट्टी को मंत्रित कर तिलक लगावें। फिर रात्रि के समय सब मनुष्यों के सोने पर हाथ में जल से भरी झारी लेकर एकान्त स्थान में खड़े-खड़े लोगों की वार्ता श्रवण करे। जो बात समझ में आये उसी को सत्य समझे।

ॐ ह्रीं परवादि देवस्वरूपाध्येयाय नम:।

श्री समोशरण
की रचना
णमो अरिहंताणं.
णमो सिद्धाणं.
णमो आयरियाणं.
णमो उवज्झायाणं.
णमो
लोएसव्वसाहूणं.

नेत्र रोग विनाशक

धर्मोपदेश समये स-विधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरु-रप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोध-मुपयाति न जीव लोकः।।19।।

अन्वयार्थ

धर्मोपदेशसमये = धर्मोपदेश काल में (समय), ते=आपके, सविधानुभावात् = सानिध्य के प्रभाव से, जन: आस्तां = मनुष्य तो दूर रहे परन्तु, तरु:अपि = वृक्ष भी, अशोक: = शोक रहित, भवति = हो जाता है, वा= ठीक ही है, दिनपतौ = सूर्य के, अभ्युद्गते = उदय होने पर, किं = क्या, समहीरुह: अपि = वृक्ष सहित भी, जीवलोक: = सारे संसार के प्राणी, विबोधं = बोध को प्राप्त, न उपयाति = नहीं होते हैं? अर्थात् बोध प्राप्त हो जाते हैं।

भावार्थ

हे भगवन्! जब आपके पास रहने वाला वृक्ष शोक रहित हो जाता है तो आपके पास रहने वाला व्यक्ति शोक रहित हो जाये तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदणासयाणं आगास गामीणं।
(नेत्र रोग नाशन हेतु आकाशगामी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

धम्मोवदेस समये सविहाणु भावा,
अत्थं जणो भवदि ते तरु णो असोगो।
अब्भुग्गये दिणपदिं समही रुहोवि
किं वा विबोह उवएदि ण जीव लोओ।।19।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! While the tree growing beside you becomes sorrow less, then a person living near you becomes sorrow less, this is not amazing.

मंत्र

ॐ (नमो भगवते) ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं नम: (स्वाहा)।

गुण

नेत्र पीड़ा दूर होती है। जब आँख आयी हुई हो तब भोज पत्र पर रसोंद से लिख गले में बाँधें।

पद्यानुवाद

सूर्य जगत में आता है-सबका ज्ञान कराता है-2
खुशियों को भर जाता है-ऽऽऽ
प्रभु होते जब पास यहाँ-शोक सभी हों नाश यहाँ-2
''वृक्ष अशोक'' हो-3, सब शोक मिटाए रे-ऽऽ

धर्म उपदेश समय हे भगवन्! निकट आपके जो आता,
मानव तो बहु दूर रहे जब, तरु भी सुखमय हो जाता।
सूर्य उदित होने पर क्या सब, ज्ञान विकास नहीं पाते?,
वृक्ष कमल दल देख दिवाकर, विकसित हो नहिं मुस्काते?।।

होता जब उपदेश तुम्हारा, सबको होता हर्ष अपारा।
तरु भी शोक रहित हो जाता, समवशरण में लगता प्यारा।।
प्रात: सूर्य उदय में आये, अपनी आभा को फैलाये।
वृक्ष सभी जागृत हो जाते, ऐसी रवि महिमा बतलाए।।

विशेष मंत्र

णंहूसाव्वसएलोमोण णंयाज्झावउमोण णंयारिइआमोण णंद्धासिमोण णंताहंरिअमोण, हुलु हुलु कुलु कुलु चुलु चुलु स्वाहा।

विधि

इस प्रभावशाली महामंत्र को श्रद्धापूर्वक जपने से मत्स्यादिकों की हत्या करने वालों के बंधन में फँसी हुई मछलियाँ तथा जलचर जीव मुक्त हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं अशोक प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नम:।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

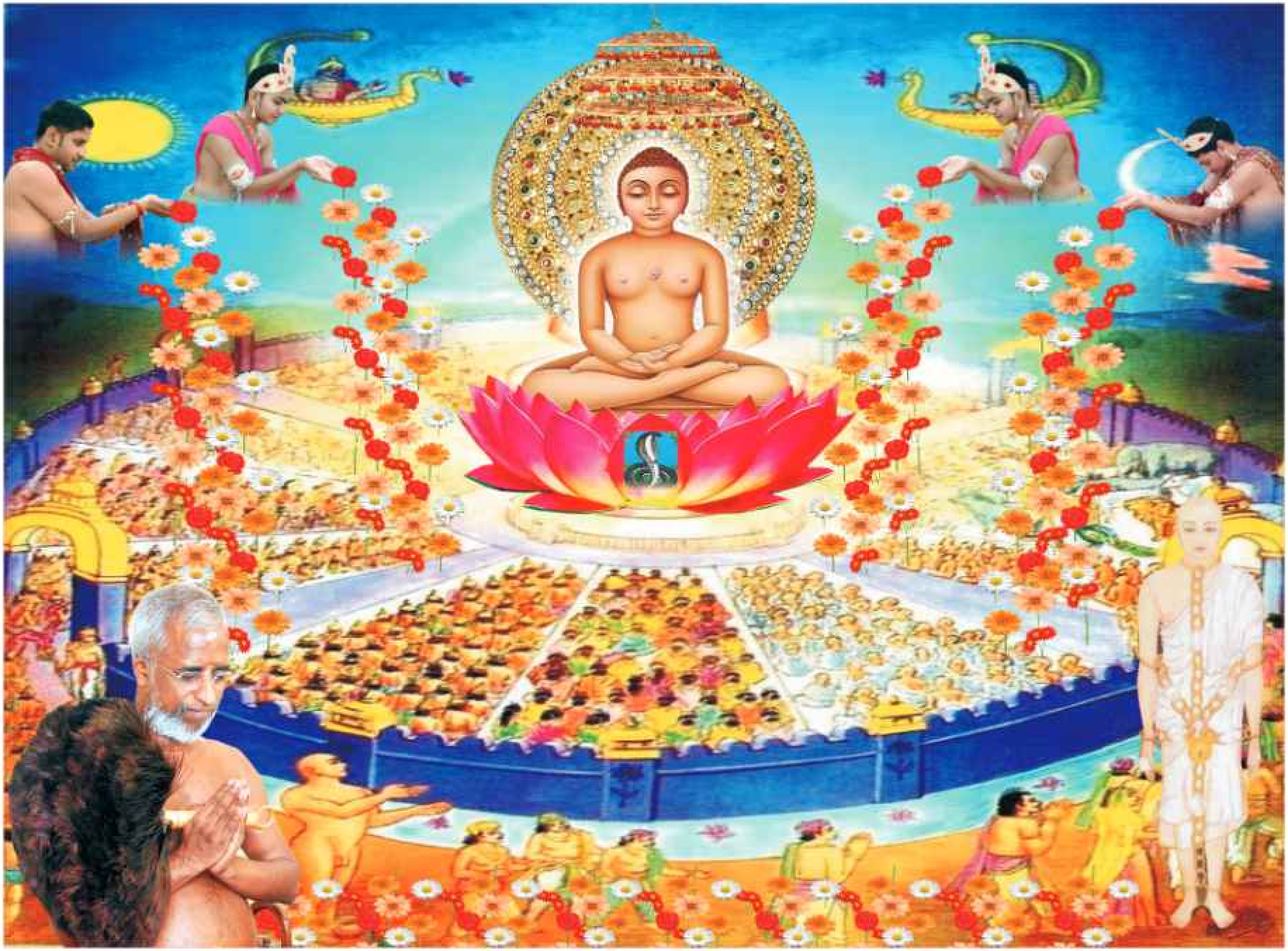

उच्चाटन निरोधक

चित्रं विभो! कथ-मवाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्यविरला सुर पुष्प वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नून-मध एव हि बन्धनानि।।20।।

अन्वयार्थ

विभो! = हे स्वामिन्!, चित्रं = यह बहुत बड़ा आश्चर्य है कि, विष्वक् अविरला = चारों तरफ से अति अधिक व्यवधान रहित, सुरपुष्पवृष्टिः = देवों के द्वारा की हुई पुष्पवृष्टि, अवाङ्मुखवृन्तं = नीचे को डंठल करके, कथं पतति = क्यों गिरती है, यदि वा = अथवा यह कथन ठीक ही है?, हि = क्योंकि, मुनीश = हे मुनियों के नाथ!, त्वद्गोचरे = आपके सान्निध्य में, सुमनसां = फूलों के अथवाअच्छे मन वाले ज्ञानी प्राणियों के, बन्धनानि = फूलों के डंठल (कर्म बंधन), नूनं = निश्चय से, अधः एव गच्छन्ति = नीचे को ही जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! आपके ऊपर फूलों की वर्षा के समय उनके डंठल नीचे होते हैं सो ठीक है जो आपके चरणों में गिरते हैं उनके कर्मबंधन नीचे गिर जाते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिलगहणासयाणं आसीविसाणं।

(उच्चाटन निरोधन हेतु आशीविष ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

चित्तं विभू कह अवंमुह विन्तमेव,
विस्संपडेदि विरलो सुर पुप्फ विट्ठि।
तुं गोचरे सुमणसं जदि वा मुणीस!
गच्छन्ति णूण अह एव हि बंधणाणि।।20।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! While flowers are raining on you, their stems are all downwards this is right, those who bow down in your feet, their karmic bonds fall downwards.

मंत्र

ॐ (भगवत्यै) ब्रह्माणि (ण्यै?) नमः स्वाहा।

गुण

विधिपूर्वक मंत्राराधन से उच्चाटन अर्थात् जिसे साधक नहीं चाहता उसका निराकरण होता है।

पद्यानुवाद

ज्ञानी देव तुम्हें लखते, चरणों में वो आ झुकते-2
जैसे कर्म सभी मिटते-SSS
''पुष्पवृष्टि'' जब देव करें, ऊपर पंखुरी फूल गिरें-2
डंठल हो नीचे-ऋषिजन बतलाएँ रे-SSS

सभी दिशा में खिले पुष्प को, देव स्वयं बरसाते हैं,
डंठल नीचे होकर आते, महिमा तेरी गाते हैं।
हे जिन! तेरे निकट जो बंधन आते वो झुक जाते हैं,
तेरी शक्ति गुणों को लखकर, विनत सुधी हो जाते हैं।।

अचरज होता हमको भाई, देव पुष्प वर्षाते भाई।
डण्ठल नीचे क्यों हो जाता, ये प्रभु! बात समझ न आई।।
अब तक यही समझ में आया, अच्छे मन से तुमको ध्याया।
कर्मों को सब गिरते पाया, हे प्रभु! यह सब तेरी माया।।

अजर-अमर-अक्षय परम, अमृतमय शुभधाम।
उन प्रभु पार्श्वनाथ को, करूँ ''विनम्र'' प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं णमो भगवओ, ॐ (?) पासनाहस्स भय सव्वाओ ई ई, ॐ जिणाणाए मा इह, अहि हवंतु, ॐ क्षां क्षीं ह्रीं क्षूं क्षीं क्षः स्वाहा।

विधि

इस प्रभावक मंत्र से सफेद फूल को 108 बार मंत्रित करके उसे राजप्रमुख को सुँघाने से वह साधने वाले के वश में होता है और अपराध क्षमा करता है।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

भक्ति रूपी सागर
अमृत
वाणी रूपी
अमृत
वाणी रूपी
अमृत
वाणी रूपी
अमृत

शुष्कवनोपवन विकाशक

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवाया:,
पीयूषतां तव गिर: समुदीरयन्ति।
पीत्वा यत: परम-सम्मद्-संग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्।।21।।

अन्वयार्थ

हे स्वामिन्! = हे जिनेन्द्र देव!, गभीर हृदयोदधि संभवाया: = गंभीर हृदय रूपी समुद्र से उत्पन्न हुई, तव गिर: = आपकी वाणी को, पीयूषतां = अमृतमय, समुदीरयन्ति = कहते हैं, स्थाने = उनका यह कथन ठीक ही है, यत: भव्या: पीत्वा = क्योंकि उस अमृतमयी आपकी वाणी का भव्य जीव पान कर, परम संमदसंग भाज: = परम सुख के भागी होते हुए, तरसा = शीघ्र ही, अजरामरत्वं अपि = अजर अमर पदों को भी, व्रजंति = प्राप्त हो जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! आपकी अमृत वाणी पीकर सुखी होने वाले भव्य प्राणी ही अजर-अमर पद पाते हैं-अर्थात् जो पूर्णसुखी हों उन्हें ही अनंतसुख प्राप्त होता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुप्फियतरुवत्तयराणं दिट्ठि विसाणं।
(उपवन विकास हेतु दृष्टि विष ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

ठाणे गहीर हिदओदधि सम्भवाए,
पीजूसतं तव गिरो समुदीरजन्ति।
पित्ता यदो परम संमद संग भाजो,
भव्वा वजन्ति तरसा अजरामरत्तं।।21।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Only those auspicious people who listens to your elixir like preaching get eternity, in other words only those who are entirely happy get infinite pleasure.

मंत्र

ॐ भगवती (त्वं?) पुष्पपल्लवकारिणी नम: (स्वाहा)।

गुण

सूखे हुए वन उपवन के वृक्ष पुन: पल्लवित होने लगते हैं।

पद्यानुवाद

अमृत जैसी वाणी है, सबको ही सुखदानी है-2
"दिव्यध्वनि" कल्यानी है-ऽऽ
ज्ञानी पीकर हुए प्रखर, पाते पद जो अजर अमर-2
पारस की वाणी हो-3, भव पार कराए रे-ऽऽ

हृदयरूप गंभीर जलधि में, वाणी जन्मी अमृत सम,
पीकर लोग जिनेश्वर! उसको सभी मिटाते अपने गम।
जन्म जरा मृत रोग हटाकर, अजर अमर हो जाते हैं,
तेरी दिव्य ध्वनि को सुनकर, सिद्ध रूप भवि पाते हैं।।

महाहृदय से निकली वाणी, सुनकर तृप्त हुआ ये प्राणी।
हे प्रभु! अमृत सी लगती है, परम पियूष कही जिनवाणी।।
पीकर उत्तम अनुभव करता, तब वह शाश्वत सुख को वरता।
अजर-अमर पद पा जाता है भव से वह ही पार उतरता।।

विशेष मंत्र

ॐ अरिहंत सिद्ध आयरिण उवज्झाय सव्व साहू (णं?) सव्वधम्मतित्थयरायणं ॐ नमो भगवईए सुअ देवाए शान्तिदेवाए सव्वपवयणदिवयाण दसण्हं दिसापालाणं चउण्हं लोगपालाणं, ॐ ह्रीं अरिहंतदेवाणं नम:।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को 108 बार जपने से सब कार्यों की सिद्धि होती है जय जय होती है और हिंसक जानवर सर्प चौरादिकों का भय दूर होता है।

ॐ ह्रीं अजरामर दिव्यध्वनि प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नम:।

मधुरफल प्रदायक

स्वामिन्! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं वि-दधते मुनि-पुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्धभावाः।।22।।

अन्वयार्थ

स्वामिन्! = हे भगवन्!, मन्ये = मैं ऐसा मानता हूँ कि, सुदूरं = नीचे को बहुत दूर तक, अवनम्य = नम्रीभूत होकर, समुत्पतन्तः = ऊपर को जाते हुए, शुचयः = पवित्र उज्ज्वल, सुरचामरौघाः = देवों के द्वारा ढोरे गये चौंसठ चंवरों का समूह, वदन्ति ये = कहते हैं कि जो भव्यप्राणी, अस्मै मुनिपुंगवाय= इन श्रेष्ठ मुनि को, नतिं= नमस्कार, विधदते= करते हैं, ते= वे, नूनं = निश्चय से, शुद्धभावाः = निर्मल भाव धारी होकर, ऊर्ध्वगतयः = ऊर्ध्वगमन करने वाले, भवन्ति= होते हैं, खलु = सत्य है अर्थात् स्वर्ग मोक्ष को प्राप्त होते हैं,

भावार्थ

हे प्रभु! नीचे से ऊपर ढुरते हुए चमर ये बता रहे हैं जो नीचे झुककर प्रभु को प्रणाम करते हैं वे ही ऊर्ध्वगति वाले होकर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरुपत्तणासयाणं उग्ग तवाणं।
(मधुर फल प्रदान हेतु उग्रतपधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

सामी! सुदूर अवणम्म समुप्पतन्तो,
अण्णे वदन्ति सुचयो सुरआमरोहा।
जेसिं णदिं विदहते मुणि पुंगवस्स,
ते णूण उड्ढगदयो खलु सुद्ध भावा।।22।।

यंत्र

अंग्रेजी

O Lord! The chanwar (whisk) coming from dwon to upwards are showing that who offer salutation bowing down in the feet of Lord, only those going upward get liberation.

मंत्र

ॐ नमो पद्मावत्यै मल्व्र्यूं नमः स्वाहा।

गुण

वन पवन के जिन वृक्षों में किसी कारण से फल लगना बंद हो जाते हैं उनमें पुनः मधुर फल पैदा होने लगते हैं।

पद्यानुवाद

चौंसठ चंमर ढुराते हैं, देव नम्र हो जाते हैं-2
भक्ति श्रेष्ठ दिखाते हैं-ऽऽऽ
शुद्ध भाव मन में लाते-वे चरणों में झुक जाते
ऊर्ध्वगामी बन-हो-3, वह शिवपुर जाये रे-ऽऽऽ

नीचे से ऊपर फहराते, चँवर ढुराते सारे देव,
ऐसा ऋषि कहते हैं यह फल, मिलता उन्हें करे वृष सेव।
जो चरणों में झुक जाता है, वह ऊपर उठ जाता है,
स्वर्ग मोक्ष का स्वामी बनता, भव सागर तिर जाता है।।

चरण कमल में झुक-झुक जाते, फिर पावन ऊपर उठ जाते।
ऐसे चौंसठ चँवर बताते, प्रभु की शोभा खूब बढ़ाते।।
यही मानता हूँ मैं प्रभुवर, पाते वही सुखों का सरवर।
जो जितने नीचे झुक जाते, वो उतने ऊपर उठ जाते।।

विशेष मंत्र

ॐ हल्थुमले विणुमुहुमल (ले) ॐ मलिय ॐ सतुहमाणु सीसधुणता जेगया, आयास पायाल गंत ॐ अलिंजरेसे सव्वंजरे स्वाहा।

विधि

इस मंत्र को 7 बार जपते हुए मुख के सामने अपनी दोनों हथेलियों को मसल कर अच्छे आदमी के पास मिलने जाने से लाभ होता है तथा राजा की ओर से सम्मान मिलता है।
ॐ ह्रीं चामर प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नमः।

राज्य सम्मान दायक

श्यामं गभीर-गिर-मुज्ज्वल हेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्-त्वाम्।
आलोकयन्ति - रभसेन नदन्त - मुच्चैश्,
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्।।23।।

अन्वयार्थ

इह = इस लोक में, श्यामं = श्याम वर्ण, गभीरगिरं = गम्भीर वाणी से युक्त, उज्ज्वल हेमरत्न = निर्मल स्वर्ण और रत्नों से जड़ित, सिंहासनस्थं = सिंहासन पर बैठे हुए, त्वां = आपको, भव्य शिखण्डिन: = भव्यरूपी मयूर, चामीकराद्रिशिरसि = सुमेरु पर्वत की चोटी पर, उच्चै: = ऊँचे रूप से, नदन्तं = गर्जना करते हुए, नवाम्बुवाहं = नवीन बादल के, इव = समान, रभसेन = आनंदविभोर होकर, आलोकयन्ति = देखते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे सुमेरु पर्वत पर गर्जना करते हुए काले बादल छा जाते हैं वैसे ही स्वर्णमयी सिंहासन पर आपका श्यामल शरीर कांतिमान हो रहा है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधणहरणाणं दित्ततवाणं।
(बंधन मुक्ति हेतु दीप्त तप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

सामं गहीर गिरि उज्जल हेम रण्णं,
सिहासणत्थ इह भव्व सिहंडिणं तु।
आलोगजन्ति रभसेण णदन्त उच्चं,
चामीकरादिद सिरसीव णवम्बुवाहम्।।23।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh God! Like the mount Sumer covered by the darkened clouds glow, similarly your body is glowing on the golden throne.

मंत्र

ॐ नमो श्रीं क्लीं झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्र: नम: (स्वाहा)।

गुण

राज दरबार में जय, सम्मान तथा हर जगह मान्यता होती है।

पद्यानुवाद

मेरु शिखर पर आये हों, काले बादल छाये हों-2
गर्जन करते आये हों-ऽऽऽ
त्यों ही स्वर्णिम "सिंहासन", उस पर श्यामवर्णमय तुम
शोभित होते हो-हो-3 मन सभी लुभाएँ रे-ऽऽ

स्वर्णमयी मेरु पर्वत पर, गरजें काले मेघ फुहार,
देख मयूर खुशी से नाचें, शोभा जिसकी अपरंपार।
वैसे सिंहासन सोने पर राजित पार्श्वनाथ भगवान्,
भक्त मयूर लखें जब उनको, हर्षित हों गाते गुणगान।।

रत्नमयी सुन्दर सिंहासन, उस पर श्याम वर्ण के भगवन्।
भव्यजनों को अति सुखकारी, देख स्व-सुख की होती गर्जन।।
स्वर्णिम पर्वत मेरु बताया, उस पर काला बादल छाया।
भव्य मयूर देख खुश होता, हे प्रभु! दृश्य यही मन भाया।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति! चण्डि! कात्यायनि! सुभगदुर्भगयुवति जनानां (मां कर्षयआकर्षय ह्रीं रं रं र्व्यूं संवोषट् देवदत्ताय हृदयं घे घे।

विधि

इस मंत्र को 7 दिन तक प्रतिदिन 108 बार जपने से इच्छित स्त्री का आकर्षण होता है।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्योपशोभिताय श्रीजिनाय नम:।

शत्रुविजित राज्य प्रदायक

उद्गच्छता तव शिति - द्युति - मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छवि - रशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि।।24।।

अन्वयार्थ

उद्गच्छता = अतिशय प्रभा से दैदीप्यमान, तव = आपके, शितिद्युतिमण्डलेन = नील वर्ण की कान्ति के प्रभा पुंज से, अशोक तरु: = अशोक वृक्ष, लुप्तच्छदच्छवि: = कांतिहीन पत्रों वाला, बभूव = हो गया था, यदि वा = अथवा वीतराग! = हे वीतराग स्वामी! तव सान्निध्यत: अपि= आपके सान्निध्य को प्राप्त कर, क: = कौन, सचेतन: = चेतन पुरुष, नीरागतां = वीतरागता को, न = नहीं, व्रजति = प्राप्त होता है? अर्थात् प्राप्त होता है।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे आपके प्रभाव से भामण्डल भी प्रभावशाली हो गया वैसे ही जो पुरुष आपके पास आये उसका आभामण्डल भी प्रभावशाली हो जाता है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो रज्जदावयाणं तत्ततवाणं।
(राज्य प्राप्ति हेतु तप्ततप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

उग्गच्छदा तव सिदीज्जुदि मंडलेण,
लुत्तच्छदं छवि अशोगतरू अहेसि।
साणिज्झदोवि जदि वा तव वीदराग!
णीरागदं वजइ को ण सचेदणोवि।।24।।

यंत्र

अंग्रेजी

O Lord ! As the bhamandal (aura) becomes effective with your influence, similarly the person who visits you has his aura influenced too.

मंत्र

ॐ ह्रीं भ्रां भ्रीं षोड्शभुजे (जावै?) पद्मे (द्दिमन्वै) प्रों (प्रीं?) हूं ह्रीं नम: (स्वाहा)।

गुण

हाथ से गया हुआ अपना राज्य तथा स्थान पुन: प्राप्त होता है।

पद्यानुवाद

सात भवों को दर्शाता, भामण्डल वह कहलाता-2
महाकांति को दिखलाता-ऽऽ
वीतरागता लखता जो, वीतरागमय हो जाता-2
प्रभु की महिमा को, हो-3 सब देव सुनाएँ रे-ऽऽ

श्याम प्रभामण्डल अति तेरी, कांतिहीन तरु हुआ अशोक,
हे प्रभु! रहे सामने तुम छवि, तरु अशोक तब करता शोक।
वीतरागता निकट रहे तो, राग रहित वह हो जाता,
कौन पुरुष ऐसा नहिं होता? जिसे नजर भव ना आता।।

हे प्रभु! भामण्डल सुखकारी, महिमा कांतिमान अति प्यारी।
तरु अशोक की कांति दबाता, अपनी महिमा तेज प्रकाशी।।
वीतरागता जो पा जाता, उसका तेल अधिक बढ़ जाता।
राग-द्वेष फीका पड़ जाता, विजयी होती वीतरागता।।

प्रातिहार्य संयुक्त हैं, चार चतुष्टय धाम।
पार्श्वनाथ गुणधाम हैं उन्हें ''विनम्र'' प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं भैरवरूप धारिणि! चण्डशूलिनि! प्रतिपक्षसैन्यं चूर्णय चूर्णय धर्म्मय धर्म्मय भेदय भेदय ग्रस ग्रस पच पच खादय खादय मारय मारय हूँ फट् स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को 108 बार चारों ओर लकीर फेरने से दुश्मन की सेना मैदान छोड़कर भाग जाती है साधक की जय होती है और हिम्मत बढ़ती है।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य प्रभास्वते (श्री) जिनाय नम:।

असाध्य रोग नाशक

भो भो प्रमाद-मवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्-नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते।।25।।

अन्वयार्थ

देव! = हे देव!, मन्ये = मैं मानता हूँ कि, अभिनभः = चारों तरफ आकाश में, नदन् = शब्द करती हुई, ते = आपकी, सुर दुन्दुभिः = देव दुन्दुभि द्वारा, जगत्-त्रयाय = तीन लोक के भव्य जीवों को, एतत् = यह, निवेदयति = सूचित कर रही है कि, भो-भो = रे रे प्राणियो!, प्रमादं = प्रमाद को, अवधूय = छोड़कर, आगत्य = यहाँ आकर, निर्वृतिपुरीं-प्रतिसार्थवाहं = मोक्षपुरी के प्रति मुखिया अर्थात् मुक्तिपुर में ले जाने वाले, एनं = इन पार्श्व प्रभु की, भजध्वं = भजो-सेवा करो।

भावार्थ

हे भगवन्! आकाश गुँजाती दुंदुभि लोगों को बुलाते हुए ये कह रही है कि सब लोग यहाँ आओ और ऐसा वैभव प्राप्त करो।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडलमलणासं महातवाणं।

(असाध रोग नाशन हेतु महातप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

भो! भो! पमाद अवधूय भजद्धूएण,
आगत्त णिव्विदि पुरिं पडिसत्थवाहम्।
एदं णिवेदयदि देव जगत्तियस्स,
मण्णे णदंणहि णहो सुर दुंदुहिं ते।।25।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! The echo of the sound of Dundubhi (a musical instrument) in the sky is saying that everybody should come here and get such a splendid glimpse.

मंत्र

ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावत्यै नमः (स्वाहा)।

गुण

रोग, शोक, और पीड़ा का नाश होता है हर्ष बढ़ता है तथा सर्वप्रकार के रोग शांत होते हैं।

पद्यानुवाद

नभ में शब्द गुँजाती है, सबको पास बुलाती है-2
जो दुंदुभि कहलाती है-ऽऽ
मुक्तिनगर के वैभव को-पालो ये बतलाती है-2
दुंदुभि-भगवन की हो-3 संगति दिलवाए रे-ऽऽ

हे प्रभु! तेरी दुंदुभि प्यारी, गूँज रही शुभमय आकाश,
सूचित करती भव्य जनों को आओ सब जिनवर के पास।
मुक्ति महल यदि जाना तुमको, राग द्वेष तज कर लो ध्यान,
सेवा कर लो भक्ति भाव से, आए पार्श्वनाथ भगवान्।।

नभ में दुंदुभि गुंजन करती, भव्यों का अभिनंदन करती।
सुख पाने आ जाओ भव्यो सबको, यह ही सूचित करती।।
छोड़ प्रमाद यहाँ पर आओ, प्रभु की वाणी हृदय समाओ।
मुक्ति नगर ले जाने वाला, सुख वैभव उत्तम पा जाओ।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति! वद्धगरुडाय सर्वविष विनाशिनि! छिंद छिंद भिंद भिंद गृण्ह गृण्ह एहि एहि भगवति! विधे हर हर हूँ फट् स्वाहा।

विधि

इस मंत्र का शुद्ध पाठ करते हुए जहर चढ़े आदमी के नजदीक जोर जोर से ढोल बजाने से जहर उतर जाता है।

ॐ ह्रीं दुंदुभि प्रातिहार्याय श्रीजिनाय नमः।

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि नादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

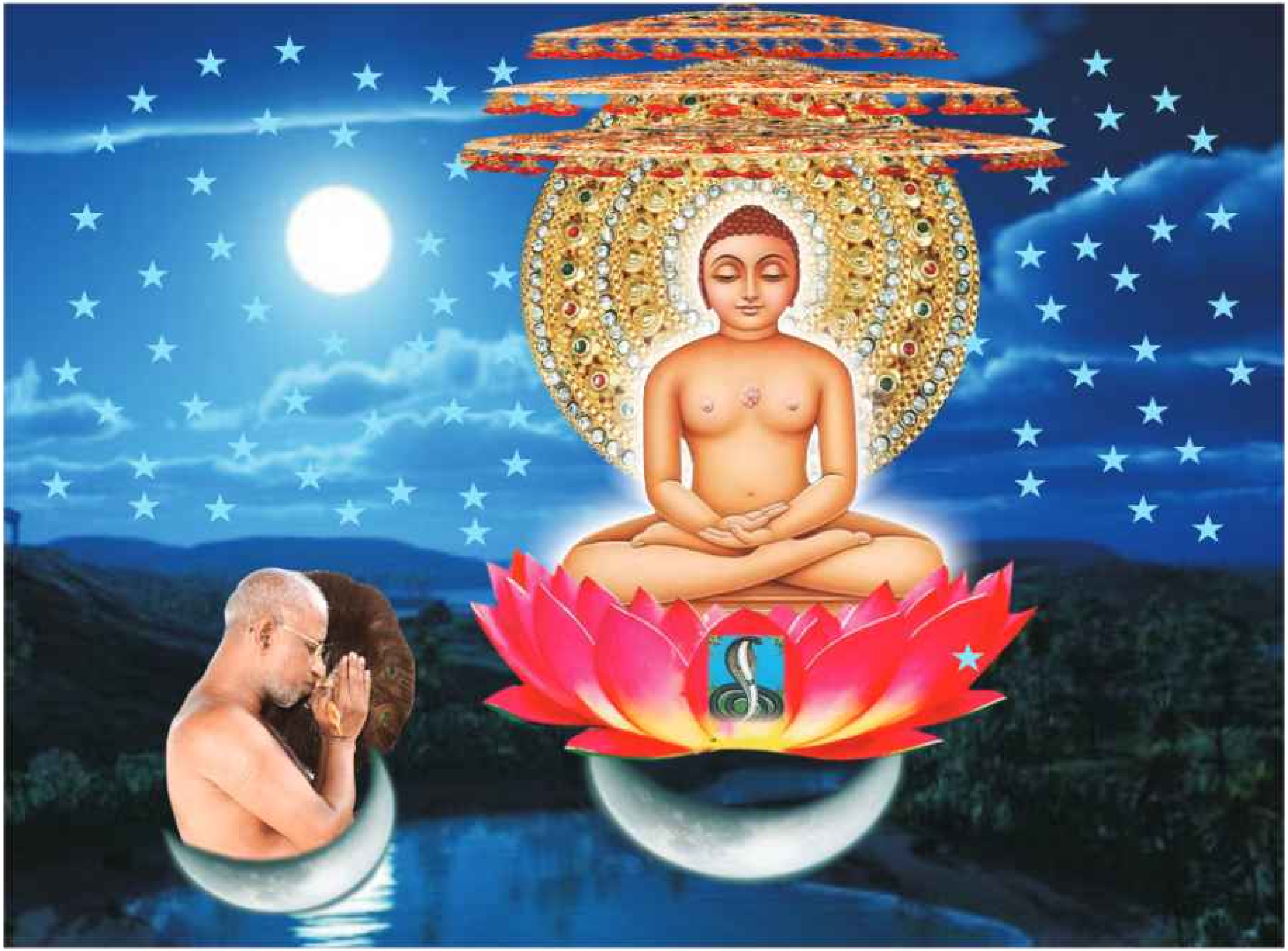

वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकार:।
मुक्ता – कलाप – कलितोरुसितात पत्र–
व्याजात् त्रिधा धृत तनुर्ध्रुव–मभ्युपेत:।।26।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, भवता = आपके द्वारा, भुवनेषु = तीनों लोकों के, उद्योतितेषु = प्रकाशित हो जाने पर, विहताधिकार: = नष्ट हो गया है अधिकार जिसका ऐसा, तारान्वित: = ताराओं से युक्त, अयं = यह, विधु: = चन्द्रमा, मुक्ताकलाप–कलितोरु सितात पत्रव्याजात = मोतियों के समूह से युक्त तेजस्वी ऐसे तीन छत्रों के छल से, त्रिधाधृततनु: = तीन–तीन के शरीर को धारण करके, ध्रुवं = निश्चय से, अभ्युपेत: = आपकी शरण में आया है।

* तोल्ल

भावार्थ

हे प्रभुवर! आपके ऊपर तीन छत्र तीन चन्द्रमा की तरह दिख रहे है और मोतियों की झालर की तरह तारे, जो तीनों लोक पर विजय बता रहे हैं कि आपने तीनों लोक को प्रकाशित किया है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयंपदाईणं घोरतवाणं।

(विजय प्राप्ति हेतु घोर तप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

उज्जोदि एसु भवदा भुवणेसु णाह!
तासण्विदो विधु अयं विहताहियारो।
मुत्ता कलाव कलिदो उसिदाद पत्तो,
वाजत्तिहा धुयतणुद्धुव अब्भुवेदो।।26।।

यंत्र

अंग्रेजी

O Lord! The there chhatras over you are looking like the three moons and skirting of pearls looking like stars which are signifying your victory over three lokas (worlds), lighting up the three folks.

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्र: पद्मे (पद्मावै) नम: स्वाहा।

गुण

राज्यसभा में साधक की सम्पत्ति तथा उसके कहे हुए वचन सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं।

पद्यानुवाद

तीन छत्र प्रभु के ऊपर, जिनमें मोती की झालर–2
जैसे तीन चन्द्र सुंदर–ऽऽ
तीन लोक का ज्ञान कहें, बहुत बड़ा सम्मान कहें–2
छत्रों की महिमा हो–3 क्षत्रिय बतलाएँ रे–ऽऽ

अपनी आभा से परकाशित, करते हैं, त्रयलोक महान्,
चन्द्रकांति का काम रहा क्या, जहाँ विराजे हैं भगवान।
तीन छत्र त्रयचन्द्र समां हैं, मोती को तारागण जान,
सूर्य प्रताप रोकने हेतु, देवों ने यह किया सुकाम।।

लोकालोक ज्ञान में आये, हे प्रभु! परम ज्ञान जब पाए।
अंधकार सारा मिट जाये, गुण की विजय ध्वजा फहराए।।
तव शुभ तीन छत्र आ जाएँ, प्रभु के सिर पर थान बनाएँ।
मोती की आभा फैलाकर, शोभा प्रभु की खूब बढ़ाएँ।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे महाविद्ये येन येन केनचित मम पापं कृतं कारितम् अनुमतं वा तत् पापं तमेव गच्छतु ॐ ह्रीं श्रीं प्रत्यङ्गिरे महाविद्ये स्वाहा।

विधि

प्रात:काल एकान्त स्थान में पूर्व दिशा की ओर मुख करके तथा संध्या समय पश्चिम की ओर मुख करके दोनों हाथ जोड़कर अञ्जुलि मुद्रा से 108 बार मंत्र का जाप करने से दूसरों की विद्या का छेद होता है।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्याय विराजिताय श्रीजिनाय नम:।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यश
प्रताप
कांति

वैर विरोध विनाशक

स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन,
कान्ति प्रताप यशसामिव संचयेन।
माणिक्य – हेम – रजत प्रविनिर्मितेन,
सालत्रयेण भगवन्–नभितो विभासि।।27।।

अन्वयार्थ

भगवन् = हे स्वामिन्!, प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन = परिपूर्ण किया है, तीन जगत् के पिण्ड को जिन्होंने ऐसे, स्वेन = अपनी, कान्ति प्रताप यशसां = कान्ति प्रताप और यश के, संचयेन इव = समूह के समान, माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन = माणिक्य, सुवर्ण और चाँदी के द्वारा निर्मित, शालत्रयेण = तीन परकोटे के द्वारा, अभित: = चारों तरफ, विभासि = शोभित होते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! समवशरण में मणियों की भूमि, माणिक्य, स्वर्ण, चाँदी के बने कोट द्वार आपकी कांति, यश, प्रताप को बता रहे हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खलदुट्ठणासयाणं घोरपरक्कमाणं।
(वैर विरोधनाशन हेतु घोर पराक्रम ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

सेणप्पपूरिय जगत्तय पिण्डितेण,
कांतिप्पदाव जससां इव संचयेण।
माणिक्क हेम रजदप्पविणिम्मितेणं,
सालत्तयेण भगवं णहदो विहेसि।।27।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! The samausharan, the land of beads, rubies, goldmiths, gold and silver walls and doors, is signifying your achievement, radiance and majesty.

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती बल पराक्रमाय नम: (स्वाहा)।

गुण

दुश्मन पराजय को प्राप्त होता है और वैर–विरोध छोड़कर शत्रु शांत होता है।

पद्यानुवाद

चाँदी माणिक स्वर्णमयी, कोट बने त्रयवर्णमयी–2
समवशरण है शरणमयी–ऽऽ
कांति प्रताप दिखाता है–प्रभु का यश बतलाता है–2
धर्म सभा में–हो–3 सब भव्य दिखाएँ रे–ऽऽ

रत्नमयी भू–समवशरण की, स्वर्ण कमल राजित भगवान्,
कनकमयी त्रय कोट आपकी, महिमा अनुपम अद्भुत जान।
तीन लोक में पुण्य महाफल, यशोगान शुभकीर्ति महान,
ऐसे पार्श्वनाथ जिनवर को, करता हूँ अति नम्र प्रणाम।।

समवशरण सुंदर इस जग में, राजित है सारा इस नभ में।
स्वर्ण–रजतमय तीन कोट हैं, प्रभुवर हैं उसके अन्दर में।।
यश जिनवर का फैल रहा है, वर्तुल रूप में बिखर रहा है।
महाकांति के हैं अधिनायक, ये प्रताप सब बोल रहा है।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं आयरियाणं, ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं, ॐ ह्रीं णमो णाणाय, ॐ ह्रीं णमो दंसणाय, ॐ ह्रीं णमो चारित्ताय, ॐ ह्रीं णमो तवाय, ॐ ह्रीं णमो त्रैलोक्यवशंकराय ह्रीं स्वाहा।

विधि

इस महामंत्र का श्रद्धापूर्वक उच्चारण करते हुए जल मंत्रित कर रोगी को पिलाने तथा उस पर छींटा देने से उसकी पीड़ा एवं दृष्टि दोष (नजर) दूर हो जाती है।

ॐ ह्रीं त्रयविराजिताय श्रीजिनाय नम:।

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यश: कीर्ति प्रसारक

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न रचिता-नपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सु-मनसो न रमन्त एव।।28।।

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर!, नमत् त्रिदशाधिपानां = विनय से नम्रीभूत इन्द्रों के, रत्नरचितान् = रत्नों से जड़ित, मौलिबन्धान् अपि = मुकुट की मणियों को भी, उत्सृज्य = छोड़कर, दिव्यस्रज: = स्वर्ग से आये हुये देवों के मुकुटों की दिव्य पुष्प मालाएँ, भवत: पादौ श्रयंति = आपके चरणों का आश्रय लेतीं हैं, यदि वा = यह कथन सत्य है क्योंकि, सुमनस: = अच्छे मन वाले प्राणी, त्वत्संगमे = आपके समीप में ही, रमन्त: एव = रमण करते हैं, परत्र = परलोक में अन्य कुदेवादिक स्थानों में, न रमन्त: = रमण नहीं करते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! इन्द्रों की मालाएँ, मुकुटों के मणि, नमन करते समय चरणों में गिर जाती हैं सो ठीक है, आपका समागम पाकर, विद्वान पुरुष अन्य कहीं रहना पसंद नहीं करते।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवद्दववज्जणाण घोर गुणाणं।
(उपद्रव निवारणार्थ घोर गुण ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

दिव्वस्सजो जिण णमो तिदसाहिपाणं,
उस्सिंज्ज रण्ण रचिदाणवि मोलिबंधा।
पादे सयन्ति भवदो जदि वा परत्थ,
तुं संगमे सुमणसो ण रमन्त एव।।28।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! While bowing before you the gems of the heavens being fallen into your feet are seen, that is why after meeting you, scholars do not like being anywhere else.

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्रों (क्रौं?) वषट् स्वाहा।

गुण

संसार में द्वितीया के चन्द्रमा की तरह निरंतर यश और कीर्ति बढ़ती है और जगह-जगह विजय प्राप्त होती है।

पद्यानुवाद

देव प्रभु को झुक जाएँ, गिरें चरण में मालाएँ-2
प्रेम चरण से दिखलाएँ-ऽऽ
गुल, विद्वान वहीं रहते, प्रभु के चरण जहाँ पड़ते-2
झुकता जो प्रभु को हो-3, वो उठता जाए रे-ऽऽ

दिव्य पुष्प की मालाएँ सुर, मुकुटों में जगमग करतीं,
हे प्रभु! तव चरणों को पाकर, छोड़ मुकुट पद को वरतीं।
तुमको पाकर कोई सुधीजन, जाता नहीं अन्य स्थान,
जहाँ प्रेम उत्तम मिलता है, प्राणी वहीं करे विश्राम।।

नमस्कार इन्द्रादिक करते, रत्न मुकुट में शोभा वरते।
उनमें जड़ित पुष्पमालाएँ, जिनवर के चरणों गिर पड़ते।।
प्रभु चरणों से प्रेम हुआ है उसने भव दुख छोड़ दिया है।
अच्छे मन वाले ये प्राणी, जिसने प्रभु पद प्रेम किया है।।

इन्द्र विनम्र करें नमन, करके प्रभु गुणगान।
पार्श्व जिनेश महान हैं, उन्हें "विनम्र" प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं अरिहन्त सिद्ध आयरिय उवज्झाय साहू चुलु चुलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

इस प्रभावक मंत्र का श्रद्धापूर्वक एक लाख बार जप पूरा करने से तीनों लोकों में जय प्राप्त होती है, प्रताप बढ़ता है, पराधीनता नाश होती है तथा मनोरथ पूर्ण होते हैं।

ॐ ह्रीं पुष्पमाला निषेवित चरणाम्बुजाय अर्हते नम:।

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधे-र्विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव - निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्म विपाक शून्यः।।29।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे भगवान्!, त्वं = आप, जन्मजलधेः = संसार समुद्र से, विपराङ्मुखः = विमुख होने पर, अपि = भी, यत् = जो, निजपृष्ठलग्नान् = अपने पीछे लगे हुए अपने, सुमतः = अनुयायी भव्य प्राणियों को, तारयसि = पार करते हैं, हि तव = निश्चय से आपके लिए, युक्तं हि = युक्त ही है क्योंकि, पार्थिव निपस्य = घड़ा अपने पीछे लगे हुए प्राणियों को समुद्र से तारता है, सतस्तवैव = उसी प्रकार, विभो = हे पृथ्वी पतियों के राजा! तीन लोक के अधिपति, तुम भी अपने भक्तों को संसार से पार करते हो, चित्रं = आश्चर्य है कि घट तो विपाक युक्त होता है तब प्राणियों को तारता है परन्तु आप, यदसि कर्म विपाक शून्यः= कर्म के विपाक से रहित हो फिर भी संसारी प्राणियों को तारते हो।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे अधोमुखी घड़ा लोगों से विमुख होकर सबको नदी पार करा देता है वैसे ही आप सबसे विमुख होकर भव्यों को भव पार करा देते हो।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवाणुप्पियाणं घोर गुणबंभयारीणं।
(आकर्षण हेतु घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

तुं णाह जम्म जलहिं विपरांग मुहोवि,
जत्तारयस्स सुमदो णिय पिट्ठलग्गा।
जुत्तं हि पत्थिव णिपस्स सदो तवेव,
चित्तं विभुं! जदसि कम्म विवाग सुण्णो।।29।।

यंत्र

अंग्रेजी

O Lord ! As the picture with the head downwards being attached to none helps all to cross over the river. Likewise you being detached to all, help creatures to get over the worldly life. (get salvation)

मंत्र

ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं ह्रूं फट् स्वाहा।

गुण

सर्वजन प्रसन्न होते हैं। जिसको प्रसन्न करना है उसे उक्त मंत्र से मंत्रित सुपारी इलायची या लौंग खिलावे।

पद्यानुवाद

अधोमुखी घट, जल में हो, पार कराए नदियों को-2
वैसे ही प्रभु आप अहो-ऽऽ
भव में वीतरागमय हो, सबको पार कराते हो-2
महती महिमा को हो-सब मुनिगण गायें रे-ऽऽ

भव में कमल समां रहते भी, भविजन तारन हारे हो,
ऐसी महिमा के तुम ईश्वर, हर प्राणी को प्यारे हो।
अचरज है बहु उत्तम इसमें, राग द्वेष से रहते दूर,
फिर भी कर्म बंध बिन हो तुम, ध्यान लीन हो चेतन शूर।।

तेरी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावहिं पार।
घड़ा पार करवाता सरवर, प्रभुवर करवाते संसार।।
जो भी तेरे चरणों आता, तुमको अपने उर से गाता।
अपने सारे दुःख भूलकर, भवसागर से वह तिर जाता।।

विशेष मंत्र

ॐ तेजोर्ह सोम सुधा हंस स्वाहा
ॐ अर्हं ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा।

विधि

भोजपत्र पर इस मंत्र को लिखे और मोमबत्ती पर लपेटे फिर मिट्टी के कोरे घड़े में पानी भरकर उसमें उसे डालने से दाहज्वर नाश होता है।

ॐ ह्रीं संसार सागर तारकाय श्रीजिनाय नमः।

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्न भयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

असंभव कार्य साधक

विश्वेश्वरोऽपि जन पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर प्रकृति-रप्यलिपिस्त्वमीश!।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकास हेतु:।।30।।

अन्वयार्थ

जनपालक! = हे जनपालक!, त्वं = आप, विश्वेश्वर = तीन लोक के स्वामी हैं, अपि = फिर भी, दुर्गत: किं = दरिद्र क्यों हो, ईश त्वं = हे स्वामी आप, अक्षर प्रकृति: अपि = अक्षर स्वभाव वाले होकर भी, अलिपि: = लेखन क्रिया की क्षमता से रहित, किं = क्यों हो? वा अथवा, अज्ञानवति = अज्ञान वान् होने पर, अपि = भी, त्वयि सदैव = आप में निरन्तर, कथंचित् = किस प्रकार से, विश्व विकास हेतु: = विश्व को प्रकाशित करने में कारणभूत, ज्ञान किं = ज्ञान क्यों, स्फुरति = स्फुरायमान रहता है।

भावार्थ

हे जीवों के रक्षक! अक्षरज्ञान रहित फिर भी ज्ञानी हो, दरिद्र होने पर भी त्रिलोकस्वामी हो, इन्द्रिय मन से अज्ञान होने पर भी आपका ज्ञान तीनों लोक को प्रकाशित करने वाला है।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुव्वबल पदाईणं आमोसहि पत्ताणं।
(अपूर्वबल प्रदायक आमर्षौषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

विस्सेसरोवि जणपालग! दुग्गदो तुं,
किं अक्खरप्पयडि सं अलिवी तुं ईस।
अण्णाणवं अवि सयेव कहंचि देव,
णाणं तुई फुरदि विस्स विगास हेऊ।।30।।

यंत्र

अंग्रेजी

O the protector of creatures! Though illiterate and without writing skills, yet knowledgeable, even being poor, you are master of the trilok (three worlds), even being ignorant of the sensuous mind, your knowledge is capable to light up the three lokas (three worlds).

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्लूं प्रीं (प्रों?) हूं नम: स्वाहा।

गुण

अपरिपक्व (कच्चे) मिट्टी के घड़े द्वारा कुएँ से पानी निकाला जाता है।

पद्यानुवाद

लिखते नहिं पढ़ते नहिं हो, ज्ञान रहित दारिद्री हो-2
फिर भी सबके रक्षक हो-ऽऽ
अज्ञानी, असहायी हो, पर तुम केवलज्ञानी हो-2
सारी दुनियाँ को-हो-3 प्रभु यहाँ बताएँ रे-ऽऽ

जीवों के रक्षक हे प्रभु! तुम, दवा नहीं धन रंच न लेश,
अक्षर ज्ञान समुद्र है लेकिन लेखन क्रिया नहीं शुभ भेष।
इस ढंग से अज्ञानी लगते ज्ञान आपमें भरा विशेष,
सब पदार्थ दरशाने वाला, दिखा आप में दर्श अशेष।।

मालिक जग के फिर भी निर्धन, अक्षर ज्ञान है नहिं लेखन।
अज्ञानी पर जान रहे सब, यही विरोधाभास है भगवन्।।
कठिनाई से जाने जाते, हो आकार रहित बतलाते।
फिर भी केवलज्ञान प्रकाशित, तारन हारे प्रभु सब गाते।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईणाणं, लोग पज्जोअगराणं, मम शुभाशुभ दर्शय दर्शय ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनी मुण्डे स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र को शयन करते वक्त 108 बार जपने से स्वप्न में किए हुए कार्य का संभावित शुभाशुभ फल मालूम पड़ता है।

ॐ ह्रीं अद्भुत गुणविराजित रूपाय श्रीजिनाय नम:।

शुभाशुभ प्रश्न दर्शक

प्राग्भार संभृत नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभि-रयमेव परं दुरात्मा।।31।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्!, रोषात् = पूर्वोपार्जित राग-द्वेष-क्रोध के कारण, शठेन = मूर्ख, कमठेन = कमठ के द्वारा, यानि= जो, प्राग्भारसम्भृतनभांसि = सम्पूर्ण रूप से आकाश को व्याप्त करने वाली, रजांसि = रज को (धूलि), उत्थापितानि = आपके प्रति उड़ाई थी परन्तु, तै: तव छाया = उस धूलि के द्वारा आपकी छाया को, अपि न = भी नहीं, हता = ढक सका, तु हताश: = परन्तु नष्ट हो गई है आशा जिसकी अर्थात् निराश होकर, अयं दुरात्मा = वह दुष्ट कमठ, एव = ही, अमीभि:ग्रस्त: = उस कर्म रूपी धूलि के द्वारा मलीन हो गया। जकड़ा गया।

भावार्थ

हे भगवन! कमठ के द्वारा आपके ऊपर धूल और पत्थर बरसाए आपकी समता से वो हताश हुआ, कई दु:खों को प्राप्त हुआ पर आपका वो कुछ भी नहीं बिगाड़ सका।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठविण्णत्तिदावयाणं खेल्लोसहि पत्ताणं।

(इष्टानिष्ट दर्शनार्थ क्षेलौषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

पब्भार संभिद णहंसि रजंसि रोसा,
उत्थापिताणि कमठेण सठेण जाणि।
छाहावि ते तव ण णाह! हदा हदासो,
गत्थो तु ईहि इणमेव परं दुरप्पा।।31।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Kamath rained dust and stones on you, he became irritated with your samata (equanimity), passed through a number of sorrows and miseries, but he could not cause you harm in any way.

मंत्र

ॐ नमो भगवति चक्रधारिणि भ्रामय भ्रामय मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय स्वाहा।

गुण

पूछे गये शुभाशुभ प्रश्न का फल ज्ञात होता है।

पद्यानुवाद

प्रभु थे ध्यान तपस्या में, धूल उड़ा दी थी नभ में-2
कमठ दुष्ट ने क्रोधित में-ऽऽ
उसे कर्मरज ने जकड़ा, प्रभु ने समता को पकड़ा-2
समता जो धारे हो, मंजिल वह पाये रे-ऽऽ

दुष्ठ कमठ ने पार्श्व प्रभू पर, ताकत भरके डाली धूल,
लेकिन हे प्रभु! उसने ही खुद, बंधन कर डाले प्रतिकूल।
तन की तो बहुदूर बात है, धूल न छाया छू पायी,
कर्म रजोमय धूल उसी पर, गिरी बनी भव दुखदायी।।

हे प्रभु! बैरी कमठ जु आया, करि उपसर्ग बहुत हर्षाया।
धूलि आपके ऊपर फैंकी, धूलि न छू पाई तव छाया।।
दुष्टभाव से कार्य किया यह, विफल मनोरथ वहाँ हुआ वह।
भव-भव में दु:ख पावे भारी, कर्मबंध से मलिन हुआ वह।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं पार्श्वयक्षदिव्यरूपाय महा (घ?) वर्ण एहि एहि आं क्रों ह्रीं नम:।

विधि

इस मंत्र को श्रद्धापूर्वक जपने से दुष्ट दुश्मनों का पराजय होता है तथा उपद्रव शान्त होते है।

ॐ ह्रीं रजोवृष्ट्यक्षोभ्याय श्रीजिनाय नम:।

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रववर्जिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्ज–दूर्जित घनौघ – मदभ्र भीम–
भ्रश्यत्तडिन् मुसल मांसल घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर वारि कृत्यम्।।32।।

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर! दैत्येन यत् = उस कमठ जीव दैत्य के द्वारा जो, गर्जदूर्जित घनौघं = भयंकर गर्जना वाले मेघों का समूह है जिसमें ऐसी, अदभ्रभीम = अत्यन्त भयंकर, भ्रश्यत्तडित्–मुसलमांसल घोर धारं = चमकती एवं कड़कती हुई बिजली के साथ घोर शब्द करती हुई मूसलाधार है जिसमें ऐसी, दुस्तरवारि = अथाह पानी की, मुक्तं अथ = वर्षा की थी अथवा, तेन = उस मूसलाधार वर्षा के द्वारा, तस्य = उस दैत्य ने अपने लिए, एव = ही (कठोर), दुस्तर वारि कृत्यम् = तीक्ष्ण तलवार का काम, दध्रे = किया अर्थात् व्रण कर लिया।

भावार्थ

हे भगवन! कमठ ने मेघ गर्जाये, बिजली गिराई, मूसलाधार पानी गिराया इससे उसने खुद को दुखी किया आपका कुछ भी न बिगाड़ पाया।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठमदणासयाणं जल्लोसहि पत्ताणं।
(अष्टमद नाश हेतु जल्लौषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार है)

श्लोक (प्राकृत)

जं गज्ज दुज्जिद घणोह मदब्भ भीमं,
भस्सं तडिं मुसल मंसल घोरहारम्।
देच्चेण मुत्तअह दुत्थर वारि दद्धे,
तेणेव तस्स जिण दुत्थर वारि किच्चिम।।32।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Kamath made the clouds to thunder, made the lightning to fall, made the torrential rains to fall, but he made himself sad and could not cause you any harm.

मंत्र

ॐ नमो भगवते मम शत्रून् बंधय बंधय ताडय ताडय, उन्मूलय उन्मूलय छिंद छिंद भिंद भिंद स्वाहा।

गुण

दुष्ट पुरुष का बल निर्बल होता है शत्रु की सांघतिक शस्त्रविद्या का जोर नष्ट होता है तथा अपनी दुष्टता को छोड़ देता है।

पद्यानुवाद

बिजली गरज रही भारी, बरसे मेघ प्रलयकारी–2
जलवृष्टि अति भयकारी–ऽऽ
कमठ ने दुख उपजाया था, खुद ही दुक्ख बढ़ाया था–2
प्रभु ने सब सहकर–हो–3 सारे गुण पाये रे–ऽऽ

पानी मूसलाधार गिराकर, गर्जाए बादल अतिभीम,
मगर तुम्हारा कुछ नहिं बिगड़ा, बिजली कड़की महा असीम।
स्वयं कमठ ने घाव किए तन, लेकर भावमयी तलवार,
बंध हुआ कर्मों का भारी, सहना पड़ी जगत में मार।।

मूसलधार सलिल वर्षाया, बिजली का आतंक दिखाया।
महा भयंकर गर्जन वाले, मेघों की ऊपर करि छाया।।
कमठ ने ऐसा कृत्य दिखाया, निज असि से खुद घाव बनाया।
लेकिन प्रभु को डिगा न पाया, ऐसा श्री गुरु ने बतलाया।।
देवों के जो देव हैं, अजर–अमर शिवधाम।
सर्वजयी प्रभु पार्श्व को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ भ्रम भ्रम केशि भ्रम केशि भ्रम माते भ्रम माते भ्रम विभ्रम विभ्रम मुह्य मुह्य मोहय मोहय स्वाहा।

विधि

इस मंत्र को जपते हुए जमीन पर न गिरे हुए सरसों के दाने मंत्रित कर घर की चौखट पर डालने से उस घर के लोग गहरी निद्रा में निमग्न हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं कमठ दैत्य मुक्तवारिधाराक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद् भय दवक्त्र विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्त-मपीरितो यः,
सोऽस्याभवत् प्रतिभवं भवदुःख हेतुः।।33।।

अन्वयार्थ

ध्वस्तोर्ध्व केश विकृताकृतिमर्त्यमुण्डप्रालम्बभृत् = इधर -उधर बिखरे हुए तथा ऊपर को उठे हुए विकराल केशों के समूह से विकृत आकृति चिह्नों से ऐसे मनुष्य के मुण्डों की मालाओं को धारण करने वाला और, भयद वक्त्र विनिर्यदग्निः= जिनके भयंकर मुखों से अग्नि निकल रही है ऐसे, यः = जो, प्रेतव्रजः = भूत पिशाचों का समूह, भवन्तं = आपके प्रति, ईरितः = भेजा था, सः = वह प्रेतों का समूह, अपि = भी, अस्य = उस कमठ जीव दैत्य को, प्रतिभवं = भव भव में, भव दुःख हेतुः = संसार दुःख का कारण, अभवत् = हुआ था।

भावार्थ

हे प्रभु! नर कपालों की माला वाले भूत पिशाचों द्वारा उपसर्ग किया, मुख से आग उगली पर वो असुर दैत्य आपको छू भी नहीं पाया। स्वयं अपना संसार बढ़ाया।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो असणिपातादि वारयाणं सव्वोसहि पत्ताणं।

(अतिवृष्टि अनावृष्टि निवारण हेतु सर्वौषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

झत्थुड्ढ एस विकिदाकदि मच्चमुंडं,
पालंभभिद् भय दवक्क विण्णिज्ज अग्गी!
पेदव्वजं पडि भवंत अपीर दो जो,
अस्सेव हो पडिभवं भव दुक्ख हेदू।।33।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! You were subjected to misfortunes by the ghosts and vampires wearing the chanin made of skulls of men, spitting fire from the mouths, however agitated monsters could not even touch you.

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादि तीर्थंकरेभ्यो नमः स्वाहा अथवा
कृः असं असु पसु चंपु शीश्रे वावि अधाशाकु अममुनने पाम।

गुण

अतिवृष्टि, उल्कापात, अनावृष्टि एवं टिड्डीदल को रोक कर संभावित दुर्भिक्ष से जनता की रक्षा होती है।

पद्यानुवाद

दैत्य प्रभु पर दौड़ाए, तप से विचलित हो जाए-2
पर कुछ बिगाड़ न पाए-ऽऽ
दृढ़ता और बढी प्रभु की, पापकर्म झड़ते पाए-2
भारी कमठ ने हो-3 फिर दुक्ख उठाए रे-ऽऽ

ध्यान समय में कमठ दुष्ट ने, भूतों को दौड़ाया था,
लेकिन कमठ आपको विचलित, कभी नहीं कर पाया था।
उन पिशाच को कर्मबंध हो, हे स्वामिन्! दुख हुए अपार,
भव भव में भोगे तन धरकर, उनका बढ़ा स्वयं संसार।।

धारे नरमुण्डों की माला, बिखरे बाल भयंकर हाला।
भूत-पिशाच डिगाने भेजे, अग्नि निकलती मुँह था काला।।
जिनवर को वे हिला न पाए, खोटे कर्म कमठ पर आए।
भव-भव में दुःख उसे हुआ था, ऐसा सभी शास्त्र बतलाए।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः क्लीं क्लीं कलिकुण्डपासनाह ॐ चुरु चुरु मुरु मुरु फुरु फुरु फर फर (फार फार) किलि किलि कल कल धम धम ध्यानाग्निना भस्मी कुरु कुरु पूरय पूरय प्रणतानां हितं कुरु कुरु हूं फट् स्वाहा।

विधि

इस मंत्र का श्रद्धापूर्वक स्मरण करने से राज्यभय, भूत भय, पिशाचभय, डाकिनी शाकिनी हस्ती सिंह सर्प बिच्छू आदि का भय नष्ट होता है।

ॐ ह्रीं कमठ दैत्य प्रेषित भूतपिशाचाद्यक्षोभ्याय श्रीजिनाय नमः।

प्रातःकालीन ध्यान
निजकार्य
मध्यकालीन सामायिक
सायंकालीन सामायिक
सांसारिक कार्य

भूत पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य–
माराधयन्ति विधिवद्–विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल देह देशाः,
पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः।।34।।

अन्वयार्थ

भुवनाधिप! = हे तीनों लोक के अधिपति भगवन्!, ये= जो, जन्मभाजः = संसारी प्राणी, विधुतान्यकृत्याः = छोड़ दिए हैं अन्य कार्यों को जिन्होंने, भक्त्या = भक्ति से, उल्लसत्पुलक पक्ष्मलदेह देशाः = प्रकट हुए रोमांच से व्याप्त हैं शरीर के अवयव, विधिवत् = शास्त्रोक्त विधि से, त्रिसंध्यं तव = त्रिकाल में आपके, पादद्वयं = दोनों चरणों की, आराधयन्ति = आराधना करते हैं, विभो = हे भगवन्!, भुवि = पृथ्वी पर, ते = वे, एव = ही, धन्याः= धन्य हैं।

भावार्थ

हे नाथ! सभी भोग विषयों को छोड़कर जो आपकी भक्ति में रोमांचित हो गये हैं जो त्रिकाल वंदना करते हैं वे इंसान धरती पर धन्य हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भूतवाहावहारयाणं विट्ठोसहि पत्ताणं।
(भूतबाधा निवारण हेतु विष्ठौधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

धण्णा तु एव भुवनाहिव जे तिसंज्झं,
अराहियन्ति विहिवं विहुतण्ण किच्चा।
भत्तोल्लसं पुलग पख्मल देह देसा,
पाद द्वयं तव विभू! भुवि जम्म भाजो।।34।।

यंत्र

अंग्रेजी

O Lord! Abandoning all external pleasures those who are delighted and devoted to your worship, pray to you three times are blessed on the earth.

मंत्र

ॐ ह्रीं नमो भगवति (ते?) भूत पिशाचराक्षस वेतालान् ताडय ताडय मारय मारय स्वाहा।

गुण

भूत, पिशाच, राक्षक, शाकिनी और डाकिनी की पीड़ा तथा शत्रुभय का विनाश होता है।

पद्यानुवाद

भव के छोड़े काम यहाँ, सुबह शाम प्रभु नाम यहाँ–2
पुलकित हो सर्वांग यहाँ–SSS
तेरी भक्ति रचाते हैं–धन्य वही कहलाते हैं–2
उनका ही जीवन–हो–3 भव सफल बताएँ रे–SS

हे प्रभु! जिनने अन्य काम तज, भक्ति की पुलकित मन होय,
तीनों काल स्तवन करके, भक्तिमयी गंगा तन धोय।
चरण कमल में आराधन कर, हर्षित हृदय बसाते हैं,
धन्य–धन्य वे भविजन भव में, स्वर्ण सम्पदा पाते हैं।।

भक्ति से रोमांचित होकर, मन से खुश हो पुलकित होकर।
भव के जल्पों को तज करके, वन्दन करते तन्मय होकर।।
हे प्रभु तीनों संध्या गाते, गुण आराधन में मन लाते।
त्रिकाल प्रभु का ध्यान लगाते, वे भवि भव में धन्य कहाते।।

विशेष मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं ॐ णमो भगवइ महाविज्जाए सत्तट्ठाए मोर हुलु हुलु चुलु चुलु मयूरवाहिनीए स्वाहा।

विधि

पौष कृष्ण 10 (मगसिर कृष्णा 10वीं) के दिन निराहार रहकर इस मंत्र का श्रद्धापूर्वक 1008 बार जाप करें। परदेश गमन, व्यापार तथा लेन देन समय उक्त मंत्र का 7 बार स्मरण करने से लक्ष्मी और अनाज का लाभ होता है।

ॐ ह्रीं त्रिकाल पूजनीयाय श्रीजिनाय नमः।

राग
कषाय
माया
द्वेष
राग
माया
कषाय
द्वेष
मोह
राग

मृगी उन्मादअपस्मार विनाशक

अस्मिन्-नपार भव वारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे,
किं वा विपद्-विषधरी सविधं समेति?॥35॥

अन्वयार्थ

मुनीश! = हे मुनीश!, मन्ये अस्मिन् = मैं ऐसा मानता हूँ कि इस, अपार भव वारिनिधौ = अपार संसार समुद्र में आप, न मे श्रवणगोचरतां = मेरे कर्णगोचर नहीं, गतोऽसि = हुये हैं अर्थात् आपका नाम मेरे कर्णगोचर नहीं हुआ क्योंकि, तु = निश्चय से, तव = आपके, गोत्र पवित्र मंत्रे = नाम रूपी पवित्र मंत्र को, आकर्णिते = सुन लेने पर, विपद् विषधरी = विपद् रूपी नागिन, किं = क्या, सविधं = समीपता को, समेति = प्राप्त हो सकती है अर्थात् नहीं हो सकती।

भावार्थ

हे नाथ! मुझे ऐसा लगता है कि हमने आपकी वाणी ही क्या आपका नाम भी नहीं सुना, अन्यथा संसार की अनेक विपत्तियाँ मेरे पास कैसे आतीं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिगीरोअवारयाणं मणबलीणं।

(मिरगी रोग निवारण हेतु मनबल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

अस्सिं अपार भव वारिणिहिं मुणीस!
मण्णे ण मे सवण गोचरदं गदोसि।
आकण्णिदे तु तव गुत्त पवित्त मंत्ते,
किं वा विपं विसधरी सविहं समेदि॥35॥

यंत्र

अंग्रेजी

Hey Nath! It seems to me as if I have never your voice and name too earlier, otherwise how so much worldly misfortunes befall on me?

मंत्र

ॐ नमो भगवती (ते?) मिगियाण्दे अपस्मारे (मृगुन्मदापस्मदापस्मरादि?) रोगे (ण) शांति कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

मृगी, उन्माद, अपस्मार और पागलपन आदि असाध्य रोग शांत होते हैं।

पद्यानुवाद

फिरें भटकते वो प्राणी-सुनें न जो जिनवर वाणी-2
जिनवाणी है कल्याणी-ऽऽ
नाम तुम्हारा जप जाये, उस पर नहीं विपति आये-2
प्रभु का शुभ नाम हो-3 पावनता लाए रे-ऽऽ

नाम तुम्हारा हे प्रभु! मेरे, कानों में नहिं पड़ा कभी,
पड़ता तो फिर मुझको होते, दुखभारी क्यों यहाँ अभी।
निश्चय से तव नाम मालिका, विषमय नागिन छाती है,
मैंने नाम नहीं सुन पाया, यह दुखधार बताती है॥

जिसने तेरा नाम सुना है, उसने उर में तुम्हें गुना है।
हे प्रभु! सुना नहीं तव नाम, उसको भव में दुःख घना है॥
हमने तुमको सुना नहीं है इसीलिए सुख मिला नहीं है।
नाम तुम्हारा गर सुन लेते, तो फिर गर्दिश कहीं नहीं है॥

विशेष मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं ज्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ णमो सिद्धाणं भ्म्ल्व्र्यूं, ॐ णमो आयरियाणं स्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ णमो उवज्झायाणं ह्म्ल्व्र्यूं नमः, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं छ्म्ल्व्र्यूं नमः देवदत्तस्य (अमुकस्य) संकटमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

सुन्दर चौकी पर इस मंत्र को लिखकर श्री पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा को पधरावे, पश्चात् चमेली के फूलों को चौकी पर चढ़ाते हुए 500 बार मंत्र का जाप करे। यह जप खड़े रहकर करना चाहिए। इससे सर्व संकटों का नाश होता है और सर्वत्र जय जयकार होता है।

ॐ ह्रीं आपन्निवारकाय श्रीजिनाय नमः।

के प्रति अश्रद्धा रखने वाला व्यक्ति।

सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव!
मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्।।36।।

अन्वयार्थ

मुनीश! = हे मुनीश्वर!, मन्ये = मैं मानता हूँ कि, मया = मैंने, जन्मान्तरे = भव भवान्तरों में, अपि = भी अर्थात् कभी भी, ईहितदानदक्षं = इच्छित फल को देने में समर्थ ऐसे, तव = आपके, पाद युगं महितं न = चरण कमलों की पूजा नहीं की, देव! = हे देव!, तेन = इसीलिए, अहं = मैं, इह जन्मनि = इस जनम में, मथिताशयानां = हृदय भेदी, पराभवानां = आपदाओं का (तिरस्कारों का), निकेतनं = घर, जातः = हुआ हूँ।

भावार्थ

हे भगवन! मैं ऐसा मानता हूँ कि परभव में इच्छित फल देने वाले आपके चरणों की कभी पूजा नहीं की इसीलिए आज मैं बहुत दु:ख उठा रहा हूँ।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बालवसीयरण कुसलाणं वचिबलीणं।

(वशीकरण हेतु वचन बल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जम्मं तरेवि तव पाय जुगं ण देव!
मण्णे मए महिद ईहिद दाण दक्खं।
ते णेह जम्मणि मुणीस! पराभवाणां,
जादो णिकेतणअहं महिदासयाणं।।36।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh Lord! believe that I have never worshipped your desired fulfilling feet earlier, that is why I am facing too much sadness now a days.

मंत्र

ॐ ह्रीं अष्टमहानाग कुल विष शांति कारिणि (ण्वै?) नमः स्वाहा।

गुण

इस मंत्र के प्रभाव से काला नाग पकड़ें तो काटे नहीं और इसी मंत्र से कंकड़ों को मंत्रित कर सर्प के ऊपर फेंके तो वह कीलित हो जाता है। तथा उसका विष असर नहीं करता है।

पद्यानुवाद

चरणों में झुक जाते हैं, जो पूजा कर जाते हैं-2
इच्छित फल वो पाते हैं-ऽऽ
भाव सहित नहिं पूजन की, इसीलिए हूँ बहुत दुखी-2
प्रभु की पूजन से-हो-3 भव-भव सुख पाये रे-ऽऽ

इच्छित फल के दाता पद द्वय, तेरे पूज न पाए हम,
हे प्रभु! ऐसा मान रहा हूँ, वरना क्यों रह जाते गम।
उर भेदी यह तिरस्कार इस भव में क्यों हमको मिलता,
अगर पूजता चरण कमल को, तो इस अघ में क्यों जलता।।

ऐसा लगता हमको भगवन्, बहुत गुजारे व्यर्थ हैं जनम।
मन वांछित फल देने वाले, पूजे नहीं पवित्र दो चरण।।
हे प्रभु! तेरे चरण पूजता, तो फिर भव में नहीं डूबता।
संक्लेश परिणाम न होते, आती मुझमें नहीं मूढ़ता।।

जिनवर की पूजन हमें, देती है निर्वाण।
उन प्रभु पारसनाथ को, करूँ **"विनम्र"** प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवते चंद्रप्रभाय चन्द्रेन्द्रमहिताय नयन मनोहराय ॐ चुलु चुलु गुलु गुलु नीलभ्रमरि मनोहरि सर्वजन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

दीपमालिका के दिन पीली गाय के शुद्ध घृत का दीपक जलाकर नये मिट्टी के बर्तन में काजल बनावें। पश्चात् कार्य पड़ने पर काजल आँख में लगाने से सब आदमी वश में होते हैं।

ॐ ह्रीं सर्वपराभव हरणाय श्रीजिनाय नमः।

मोह
शोक
दु:ख
मृत्यु
बुढ़ापा

भूप मिलन तथा सम्मानदायक

नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन,
पूर्वं विभो सकृदपि प्र–विलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्था:,
प्रोद्यत्प्रबन्ध गतय: कथ–मन्यथैते।।37।।

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्!, नूनं = निश्चय से, मोहतिमिरावृतलोचनेन = मोहरूपी अन्धकार से आच्छादित नेत्र वाले मैंने, पूर्वं सकृत् अपि = पूर्व में एक बार भी, न प्रविलोकितोऽसि = अवलोकन नहीं किए गये हो, अन्यथा = नहीं तो यदि एक बार भी आपके भाव विभोर होकर दर्शन कर लेता तो, हि = निश्चय से, प्रोद्यत्प्रबन्धगतय: = अत्यन्त कर्म बन्ध के कारण या अति तीव्र पाप कर्म का उदय है जिसमें ऐसे, एते मर्माविध:= ये मर्म भेदक, अनर्था: = जन्म, जरा, मृत्यु, दु:ख, शोक आदि अनर्थ, माम् कथं = मुझको कैसे, विधुरयन्ति = दु:ख देते? अर्थात् नहीं देते।

भावार्थ

हे भगवन! मोहांधकार में पड़कर एक बार भी आपका वास्तविक दर्शन नहीं किया वरना इतने दु:ख, कर्म हमें कैसे सताते।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वराज पयवसीयरण कुसलाणं कायवलीणं।
(सभी राज्यपद वशीकरण हेतु काय बल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

णूणं ण मोह तिमिराविद लोयणेण,
पुव्वं विभू सगिद विप्प विलोगिदोसि।
मम्मा विहू विहुरयन्ति हि मामणत्था,
पोज्जप्पबन्ध गदयो कह मण्णहेदे।।37।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh God! Being caught by the 'darkness of infatuation' I never saw the real you even for a single time, otherwise the sorrowful karmas would not have caused me so many troubles.

मंत्र

ॐ नमो भगवति (ते) सर्वराजा प्रजा वश्य (श्र?) कारिणि (णे?) नम: स्वाहा।

गुण

यंत्र को पास में रखकर उक्त मंत्र से 7 कंकरों को मंत्रित कर क्षीरवृक्ष के नीचे उन्हें ऊपर उछालकर अधर झेले पश्चात् नगर के चौराहे पर डालने से राजा से मिलाप होता है, श्रेष्ठ पुरुषों से सम्मान प्राप्त होता है।

पद्यानुवाद

अंधेपन में दर्श किया, सुख का अमृत नहीं पिया–2
हरदम रहा जिया दुखिया–ऽऽऽ
सच्चा दर्शन हो जाता, इतने दुख फिर क्यों पाता–2
तेरा ही दर्शन–हो–3 सब दुक्ख मिटाए रे–ऽऽऽ

गहन तिमिर मिथ्यात्व उदय से, अवलोकन नहिं तुम्हें किया,
निश्चिय से हे स्वामिन्! मेरा मान रहा है स्वयं हिया।
दर्शन होते अगर तुम्हारे, कर्म बन्ध क्यों बढ़ जाता,
बहुत अनर्थों की जड़ दुख है, उर पर कैसे चढ़ पाता।।

नहीं किया है निश्चय दर्शन, उर से किया न प्रभु अवलोकन।
एक बार यदि कर लेता मैं, इतना होता दु:ख क्यों सघन?।।
हे प्रभु! उर से करता दर्शन, उसको सुख मिलता अन्तर्मन।
फिर भव दु:ख नहीं हो पाता, ऐसा कहते गुरुजन भगवन्।।

विशेष मंत्र

ॐ अमृते! अमृतोद्भवे! अमृतवर्षिणी! अमृत श्रावय श्रावय सं सं क्लीं क्लीं (हूँ हूँ?) ब्लूँ ब्लूँ (ह्राँ ह्राँ?) द्रीं द्रीं (ह्रीं ह्रीं ?) द्रावय द्रावय ह्रीं स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र से जल को मंत्रित कर आचमन करने से भूत, ग्रह तथा शाकिनी आदि के उपद्रवों का नाश होता है।
ॐ ह्रीं सर्वम (सर्वा?) नर्थमथनाय श्रीजिनाय नम:।

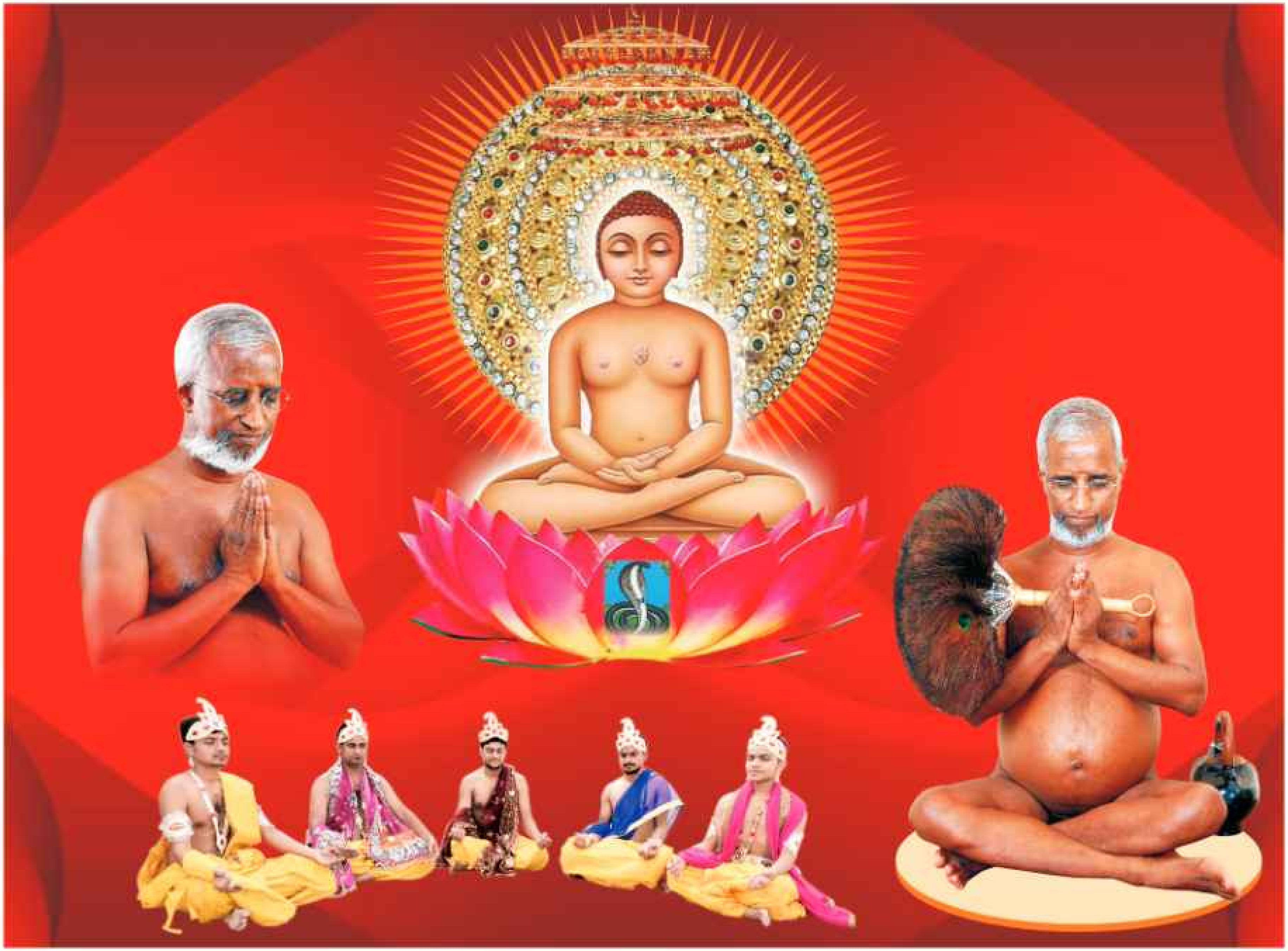

असह्य कष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षतोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव! दु:खपात्रं,
यस्मात्क्रिया: प्रतिफलन्ति न भाव शून्या:।।38।।

अन्वयार्थ

जनबान्धव! = हे जगत् जन के बान्धव! हे भगवन्! मैं, मया = मुझ अज्ञानी ने, आकर्णित: अपि = आपके नाम को सुना भी, महित: अपि = आपकी पूजा भी की है, निरीक्षितोऽपि = आपके दर्शन भी किये हैं परन्तु, नूनं = निश्चय से, भक्त्या चेतसि = भक्तिपूर्वक चित्त में, न = नहीं, विधृतोऽसि = धारण किया है, तेन = इसलिए ही, दु:खपात्रं = दु:खों का पात्र, जात:अस्मि = हुआ हूँ, यस्मात् = क्योंकि, भावशून्या = भाव शून्य, क्रिया: = क्रियायें, न प्रतिफलन्ति = फलदायक नहीं होती हैं।

भावार्थ

हे नाथ! मैंने आपके दर्शन, पूजन किये नाम भी लिया फिर भी मैं दुखी हो रहा हूँ सो ठीक ही है क्योंकि भावहीन क्रियायें सफल नहीं होती।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सहकट्ठणिवारयाणं खीरसवीणं।
(असह्य कष्ट निवारण हेतु क्षीरस्रावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

आकण्णिदोवि महिदोवि णिरिक्खिदोवि,
णूणं ण चेदसि मए विहुदोसि भत्तिं।
अस्सिम चतेण जण बांधव! दुक्खपत्तं,
जम्हा दु कज्ज पडि फलन्ति ण भाव सुण्णा।।38।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh Lord! visited you, look at you, chanted your name, worshipped you, and yet I'm still sad, so it is rightly said that emotionless actions do not bear success.

मंत्र

ॐ जानवा (जनेवा?) न्यारपाप हारिण्यै भगवत्यै खड् गारी देव्यै नम: स्वाहा।

गुण

नहरुवा, जनेवा, उदर तथा हृदय की पीड़ा नष्ट होती है। होली की राख को उक्त मंत्र से 21 बार मंत्रित कर रोग दूर न होने तक प्रतिदिन उससे झाड़ें।

पद्यानुवाद

पूजा, दर्शन ध्यान किया, नाम जपा गुणगान किया–2
फिर भी दुख में रहा जिया–ऽऽ
भक्ति बिना सब कार्य किये, इसीलिए फल नहीं मिले–2
भावों बिन भक्ति–हो–3 नहिं फलित बताएँ रे–ऽऽ

दर्शन किया, हमेशा पूजा, नाम सुना दिन में त्रय बार,
नहिं मालुम क्या बात रह गई छूटा पिण्ड नहीं दुखधार।
मुझको लगता है यह भगवन्! आडम्बर मय करते काम,
भक्ति बिना अंधे होकर क्या, क्रिया दूर करती दुखधाम।।

नाम सुना पूजा भी कर ली, दर्शन किये भक्ति भी कर ली।
फिर भी मुझको दु:ख हुए हैं, लगता है कुछ गल्ती कर ली।।
भाव शून्य थीं क्रिया हमारी, इसीलिए नहिं दु:ख निवारी।
भक्तिभाव से प्रभु उर धरता, तो मिल जाती सुख फुलवारी।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं ऐं अर्हं क्लीं ब्लें श्रीं र्यूं नमिऊण पासनाह दु:खारिविजयं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

इस चिंतामणि मंत्र का श्रद्धापूर्वक सवा लाख बार जप करने से चिंतित कार्यों की तत्काल सिद्धि होती है।
ॐ ह्रीं सर्व दु:खहराय श्रीजिनाय नम:।

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनमाश्रयाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

सर्व ज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य पुण्य वसते! वशिनां वरेण्य!
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुःखांकरोद्दलन तत्परतां विधेहि।।39।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्!, दुःखिजनवत्सल! = दुखी: जनों के बान्धव:!, हे शरण्य = शरणागत प्रतिपालक!, कारुण्य पुण्य वसते! = हे दया की पवित्र भूमि! वशिनां वरेण्य= जितेन्द्रियों में श्रेष्ठ! महेश! = महेश्वर! भक्त्या = भक्ति पूर्वक, नते = नमस्कार करने वाले, मयि = मुझ पर, दयां = दया को, विधाय = करके, दुःखांकरोद्दलन तत्परतां = दुःखों के अंकुरों का नाश करने में तत्परता, विधेहि = कीजिए।

भावार्थ

हे प्रतिपालक! दुखनाशक! दयाशील! जितेन्द्रिय! तेरे चरणों में विनम्र नमन है मेरे दुखों को शीघ्र नाश करने में शीघ्रता कीजिये।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वजर संतिकरणाणं सप्पिसवीणं।
(सभी ज्वर शांति हेतु सर्पिस्रावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

तुं णाह! दुक्खि जण वच्छल! हे सरण्ण!
कारुण्ण पुण्ण वसदे! वसिणं वरेण्ण।
भत्तिं णदे मयि महेस! दयं विहस्स,
दुक्खं करोद्दलण तप्परदं विहेहि।।39।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh Mentor! Pain reliever! Compassionate! Winner of the senes! i bow to your feet with reverence and pray you to get me soon relieved of my sorrows.

मंत्र

ॐ नमो भगवते (अमुकस्य) सर्व ज्वर शांति कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

सर्वज्वर तथा सन्निपात दूर होता है। भूर्जपत्र पर यंत्र लिखकर रोगी के कंठ में धूप देकर बाँध देवें।

पद्यानुवाद

शरणागत प्रतिपालक तुम! करुणामय दुखहारक तुम!-2
मुझ पर दया दिखाओ तुम!-ऽऽऽ
भक्ति में अति नम्र हुआ, भव से पार कराओ तुम।
जल्दी हे भगवन्! हो-3 दुख दूर भगाओ रे-ऽऽऽ

हे प्रभु! प्रेमी दुखियों के तुम, शरणागत करुणामय आप,
इन्द्रिय विजयी श्रेष्ठ जिनेश्वर! तुम्हें कौन छू सकता पाप।
हुआ विनम्र तुम्हारी भक्ति, दया करो मेरे भगवान,
सभी दुखों को शीघ्र नाशकर, मुझको वर दो शिवमय थान।।

हे प्रभु! तुम हो दीनदयाल! शरणागत भवि को प्रतिपाल।
मेरे दुःख के बीज निवारो, जोड़ूँ कर मैं नवाऊँ भाल।।
शरण तुम्हारी है उपकारी, भव्यजनों के दुःख निवारी।
नमन करूँ त्रय योग भक्ति से, दया करो मुझ पर त्रिपुरारी।।

विशेष मंत्र

ॐ क्ष्म्ल्व्र्यूं क्लीं जये विजये जयंते अपराजिते, ज्म्ल्व्र्यूं जंभे, भ्म्ल्व्र्यूं मोहे, म्म्ल्व्र्यूं स्तम्भे, ह्म्ल्व्र्यूं स्तम्भिति (अमुकं) मोहय मोहय मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

इस मंत्र के जाप से स्त्री पुरुष का परस्पर में आकर्षण होता है। मनुष्य साधे तो स्त्री और स्त्री साधे तो पुरुष वश में होता है।
ॐ ह्रीं जगज्जीवदयालवे श्रीजिनाय नमः।

अनंतज्ञान
अनंतदर्शन
अनंतसुख
अनंतशक्ति
अगुरुलघुत्व
सूक्ष्मत्व
अव्याबाधत्व
अवगाहनत्व

विषम ज्वर विनाशक

नि:संख्य सार शरणं-शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि।।40।।

अन्वयार्थ

भुवनपावन! = हे तीन लोक को पवित्र करने वाले भगवान्! नि:संख्यसारशरणं = संख्यारहित सार भूत पदार्थों का स्थान, शरणं = सबके रक्षक, शरण्यं = शरणागत के प्रतिपालक, सादितरिपु = कर्म शत्रुओं को जीतने वाले जो भगवान् की शरण में जाते हैं उनके कर्म नष्ट हो जाते हैं, प्रथितावदानं = विख्यात है महिमा जिसकी ऐसे, त्वत्पादपंकजं = आपके चरण कमलों को, आसाद्य अपि = प्राप्त करके भी, प्रणिधानवन्ध्य: आपके गुणों का श्रद्धा भक्ति से चिन्तन नहीं किया इसीलिए, वन्ध्य: अस्मि = निष्फल रहा, मैं अभागा रहा, चेत्= और उससे, हा = खेद के साथ, हतोऽस्मि = मैं नष्ट हुआ जा रहा हूँ।

भावार्थ

हे भगवन्! आपके चरणों को पाकर, दर्शन को पाकर भी मैं अभागा पुण्यहीन, फलहीन, ध्यान सेवा रहित होकर नष्ट हो रहा हूँ ये कर्म हमें दु:ख ही दु:ख दे रहे हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हसीय बाह विणासणाणं महुसवीणं।

(विषम ज्वर विनाशन हेतु मधुर स्रावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

णिसंकख सार सरणं सरणं सरण्ण,
आसाज्ज सादिद रिपुप्पहदावदाणं।
तुं पाय पंकयअविप्पणिहाण बन्धं,
अस्सिम च चेदभुव पावण हा हदोम्हि।।40।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Approaching your feet, visiting you with devotion and yet i, the unfortunate, in auspicious, fruitless, leaving meditation and service, am deteriorating. These karmas are responsible for my pains.

मंत्र

ॐ नमो भगवते झ्ल्व्यूं नम: स्वाहा।

गुण

इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि विषम ज्वर दूर होते हैं।

पद्यानुवाद

कर्म सताते जाते हैं, विघ्न डालते जाते हैं-2
जब शुभकर्म रचाते हैं-ऽऽ
पावन गुणमय प्रतिपालक, रक्षा करो मेरे रक्षक-2
किस्मत का मारा-प्रभु हमें बचाओ रे-ऽऽ

पावन भुवन! सभी प्राणी के त्राता! प्रतिपालक! हो आप,
कर्म शत्रु को नाशन हारे, महाशक्तिमय मेरी जाप।
चरण कमल तेरे द्वय पाकर, नहीं कर रहा हूँ मैं ध्यान,
निष्फल जन्म जा रहा मेरा, बहुत अभागा दुख बदनाम।।

सबके रक्षक सबसे पावन, हैं विख्यात परम महिमावन।
कर्मशत्रु को जिनने जीता, जिन प्रभु की भक्ति मनभावन।।
ऐसे प्रभु चरणों को पाकर, चिंतन गुण का किया न आकर।
निष्फल जीवन मेरा प्रभुवर, रहा अभागा बनकर पामर।।

रक्षक शरण पुनीत हैं पावन-निर्मल धाम।
गुणमय है प्रभु! पार्श्व जिन! तुम्हें "विनम्र" प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवते भ्म्ल्व्यूं नम: स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र के जाप जपने से सब प्रकार के विषम ज्वर दूर होते हैं।

ॐ ह्रीं सर्वशांतिकराय श्रीजिनचरणाम्बुजाय नम:।

अस्त्र शस्त्र विघातक

देवेन्द्र वन्द्य! विदिताखिल वस्तुसार!
संसार तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा हृद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु राशे:||41||

अन्वयार्थ

देवेन्द्रवंद्य! = हे देवेन्द्रों के द्वारा पूज्य भगवान्! विदिताखिल वस्तुसार! = सर्व वस्तु के सार को जान लिया है जिसने, संसारतारक! = हे संसारतारक जिनेश्वर!, विभो = हे स्वामिन्!, भुवनाधिनाथ = हे त्रिलोकीनाथ देव! भयद व्यसनाम्बुराशे: = भयंकर दु:खों समुद्र से, करुणा हृद! = हे करुणा सागर, अद्य = आज, सीदन्तं = दु:खो से पीड़ित, माम्= मुझको, त्रायस्व देव! = सुरक्षित करो नाथ और, पुनीहि = पवित्र करो।

भावार्थ

हे प्रभु! भयंकर दुखों के सागर में डूबते हुए मुझे बचाओ और पवित्र करो आप तो सर्वज्ञाता दया के सागर हो।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वप्पलाहकारयाणं अमिय सवीणं।

(अस्त्र-शस्त्र विनाशन हेतु अमृतस्रावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

देविंद वंद विदिदाहिल वत्थुसार!
संसार तारग विभू भुवणाहि णाह!
तायं तु देव! करुणा हिद! मं पुणीहि,
सीदन्त अज्ज भयदव्वसणम्बु रासिं||41||

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Kindly save me from drowning in the sea of extreme pains and sorrows and purify me. You are omniscient and the sea of compassion.

मंत्र

ॐ नमो भगवते बंभयारि नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नम: (स्वाहा)।

गुण

संग्राम में तीर, तलवार, बरछा, भाला तथा अन्य अस्त्र शस्त्र साधक को घायल नहीं कर पाते।

पद्यानुवाद

भव को जाननहारे तुम! भव से तारण हारे तुम-2
दयासिंधु! गुणसागर तुम-ऽऽ
दुखी मुझे भव पार करो, पावन कर उद्धार करो-2
सच्चे तुम साथी हो-3 सब स्वार्थ दिखाएँ रे-ऽऽ

इन्द्रों से तुम बन्दनीय प्रभु! तत्त्व रहस्य सभी ज्ञाता,
हे प्रभु! भव में खेवटिया तुम, तीन लोक तुमको गाता।
दया सरोवर! भुवनेश्वर जिन! मेरी तड़पन दूर करो,
मुझे बचाओ दुख सागर से, पावनता को शीघ्र वरो।।

हे जग तारक! नाथ त्रिलोकी! इन्द्रों द्वारा पूज्य हे योगी!
हे सर्वज्ञ! जिनेश्वर! स्वामिन्! वस्तुसार निज आतम भोगी।।
भव दुख से अब मुझे बचाओ, पीड़ित हूँ मम कृपा दिखाओ।
पावन करके करो सुरक्षा, भव से मुझको पार लगाओ।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नम: स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र का जाप करने से बैरी के अस्त्र शस्त्रादि कुंठित हो जाते हैं।

ॐ ह्रीं जगन्नायकाय श्रीजिनाय नम:।

स्त्री संबंधी सर्वरोग नाशक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्य! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि।।42।।

अन्वयार्थ

नाथ! = हे नाथ! त्वदेकशरणस्य मे = तेरी ही है एक शरण जिसको ऐसे मुझे, संततसंचितायाः = निरंतर संचित की हुई, भवदंघ्रिसरोरुहाणां = आपके चरण सरोज की, भक्तेः = भक्ति का यदि, किमपि फलं = कुछ भी फल, अस्ति तत् = है तो, शरणस्य शरण्य! = हे आश्रित के आश्रय दाता भगवन्!, अत्र = इस, भुवने = भव में और, भवान्तरे = भवान्तरों में, अपि = भी, त्वमेव = आप ही, स्वामी = मेरे स्वामी, भूयाः = होवें।

भावार्थ

हे स्वामिन्! आपकी सेवा व भक्ति का फल मुझे मिले तो इस लोक व परलोक में सिर्फ आपकी ही शरण मिले, आप ही मेरे स्वामी हो।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो इत्थिरत्तरोअणासयाणं अक्खीणमहाणसाणं।
(स्त्री रोग निवारणार्थ अक्षीण महानस ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जंअत्थि णाह! भवदंघ्रि सरोरुहाणं,
भत्तिं फलं किमवि सन्तद संचिदाए।
तम्मे तुयेग सरणस्स सरण्ण भूया,
सामी! तुमेव भुवणेत्थ भवन्तेरवि।।42।।

यंत्र

अंग्रेजी

O my Master! If i get the result of my devotion and services to you, its my humble desire to get your shelter only whether in this world or any world, only you are my Master.

मंत्र

ॐ नमो भगवते स्त्री प्रसूत रोगादि शांति कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

स्त्रियों का प्रदर रोग दूर होता है, बहता हुआ रुधिर रुक जाता है तथा गर्भ का स्तंभन होता है।

पद्यानुवाद

जिसको तेरी मिले शरण, उसका मिटता जन्म-मरण-2
भव भयनाशक प्रभू चरण-SSS
तेरे पद हों मम उर में, मेरा हृदय रहे पद में
जन्मों-जन्मों तक हो-3 ये फल मिल जाए रे-SS

हे प्रतिपालक! तीन लोक नृप! आप शरण! हे त्राता! एक,
श्रुति का फल बस इतना चाहूँ, मिले चरण द्वय हमें हमेशा।
आप हमेशा मेरे हो हम, सेवक तुम पद रहे सदा,
मुक्ति न पा लूँ तब तक भूलो, आप न यह वरदान कदा।।

हे प्रभु! तेरी पूजन करता, प्रतिदिन तेरे गुण को वरता।
प्रतिफल में मैं कुछ नहिं चाहूँ, चाहूँ वह मैं तुमसे कहता।।
भव-भव में तुम स्वामी रहना, मुझको तेरे सेवक बनना।
तुमको मैं आदर्श बनाकर, बनूँ आप सा बस ये कहना।।

विशेष मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं असिआउसा भूर्भुवः स्वः चक्रेश्वरी देवी सर्वरोगं भिंद भिंद ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि

श्रद्धापूर्वक इस मंत्र का प्रतिदिन 108 बार जाप करने से स्त्री संबंधी सर्व कठिन रोगों का नाश होता है और सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

ॐ ह्रीं अशरणशरणाय श्रीजिनाय नमः।

बंधन मोचक एवं वैभव वर्धक

इत्थं समाहित धियो विधिवज् जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत् पुलक कञ्चु कितांगभागा:।
त्वद्बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्ध लक्ष्या:,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्या:।।43।।

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र = हे जिनेन्द्र भगवान! ये = जो, भव्या: = भव्यजन, इत्थं = इस प्रकार, समाहितधिय: = सावधान बुद्धि वाले, त्वद् बिम्ब निर्मल-मुखाम्बुज बद्धलक्ष्या = आपके बिम्ब के निर्मल मुख कमल के प्रति बाँधा है लक्ष्य जिन्होंने ऐसे, सान्द्रोल्लसत्पुलक कञ्चुकितांगभागा: = अत्यन्त उल्लसित घोर पुलक से व्याप्त है अंग भाग जिनका ऐसे प्राणी, विभो = हे स्वामिन्!, विधिवत् = विधिपूर्वक, तव = आपका, संस्तवं = स्तोत्र, रचयन्ति = रचते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! जो भव्यजन, प्रखरबुद्धियुत् उमंगपूर्वक, निर्मल मन से आपका स्तवन रचाते हैं वे चंद्रमा की तरह शोभित होकर, स्वर्गसुखों को भोगकर असीम सुख को प्राप्त कर लेते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधमोअगाणं सव्वसिद्धायदणाणं।

(बंधन विमोचन व वैभव वर्धन हेतु सर्व सिद्धायतनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

इत्थं समाहिद धिए विहिवं जिणिंद,
सन्दोल्लसं पुलय कंचु कितंग भागा।
तुं बिंब णिम्मल मुहम्बुज बद्धलक्खिं,
जे संथवं तव विभू! रचयन्ति भवा।।43।।

यंत्र

अंग्रेजी

O God! Those devotees with pure heart using their wisdom and intellect enthusiastically eulogize you, they are embellished like the moon and enjoy golden pleasures of life ultimately.

मंत्र

ॐ नमो सिद्धि (ह्रुं?) महासिद्धि (ह्रुं?) जगत्सिद्धि (ह्रुं?) त्रैलोक्यसिद्धि महिताय कारागार बंधन मम रोगं छिंद छिंद स्तम्भय स्तम्भय जृंभय जृंभय मनोवांछित (तं?) सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

गुण

बंदी बंधनमुक्त हो जाता है रोग शांत होते तथा इष्टकार्यों की सिद्धि होती है।

पद्यानुवाद

गुण का लक्ष्य बनाते हैं, पुलकित मन कर जाते हैं-2
भव्य सुधी कहलाते हैं-ऽऽ
यह स्तोत्र रचाते हैं-धन्य वही बतलाते हैं-2
पुण्य का योग-हो-3 ये योग बनाए रे-ऽऽऽ

हे जिन! जो भविजन तव भक्ती, शुद्ध चित्त हो करते हैं,
पुलकित मन कर ध्याकर उर से, चेतन में नित धरते हैं।
तेरा मुख नीरज अति सुंदर, देख स्वयं होता कल्याण,
भव्य पढ़े, करि याद चित्त में उनको मिले शुभम् स्थान।।

हे सर्वज्ञ! महान जिनेश्वर! भव्याम्बुज को आप दिवाकर।
महिमा जिनकी अतुल अजूबी, भवि पर खिल जावे गुण गाकर।।
इक टक तुमको देखा जिसने, अपने हृदय समाया उसने।
कण-कण रोमांचित हो उठाता, प्रभु की छवि आती जब उर में।।

विशेष मंत्र

ॐ नमो भगवति! हिडिम्बवासिनी! अल्लनल्लमांसप्पियेन हयलमंडलपइट्ठिए तुह रणमत्ते परहणदुट्ठे आयासमंडि पायालमंडि सिद्धमंडि जोइणिमंडि सव्वमुइमंडि कज्जल पडउ स्वाहा।

विधि

अँधियारी अष्टमी के दिन ईशान की ओर मुख करके इस मंत्र का जाप करे। काले धतूरे के तेल का दीपक जलाकर नारियल की खोपड़ी में काजल पाड़े। उस काजल से कपाल पर त्रिशूल का निशान बनाने तथा नेत्रों में लगाने से सब प्रकार के भय नष्ट होते है और चित्त की उद्विग्नता समाप्त होती है।

भक्ति का फल स्वर्ग मोक्षसंपदा

जन नयन–'कुमुदचन्द्र प्रभास्वरा:
स्वर्ग संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित–मल निचया
अचिरान् मोक्षं प्रपद्यन्ते।।44।।

अन्वयार्थ

जननयन कुमुदचन्द्र! = लोक के नयन रूपी कुमुदों को आनन्द देने के लिए चन्द्रमा के समान भगवन्, ते = आपका स्तोत्र रचने वाले, प्रभास्वरा: = अनेक प्रकार से दैदीप्यमान भव्य प्राणी, स्वर्गसम्पद: = स्वर्गीय सम्पदा को, भुक्त्वा = भोग करके, विगलितमलनिचय: = अष्ट कर्म रूपी मल समूह को नष्टकर अर्थात् जिनके कर्म रूपी मल समूह नष्ट हो गया है ऐसे, ते = वे, अचिरात् = शीघ्र ही, मोक्षं = मोक्ष को, प्रपद्यन्ते = प्राप्त कर लेते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! जो भव्यजन कुमुद रुपी नेत्रों को आनन्द देने वाला आपका यह गुणगान करते हैं, वे स्वर्ग की सम्पदा को भोग कर शीघ्र ही मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खय सुहदायगस्स वड्ढमाणबुद्धिरिसिस्स।
(अक्षय सुख दायक वर्धमान बुद्धि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

श्लोक (प्राकृत)

जण णयण 'कुमुयचंदो' पहस्सरा
सग्ग संपदोभुत्ता।
ते विगलिद मल णिचओ
अइरा मोक्खं पपद्दन्ते।।44।।

यंत्र

अंग्रेजी

Oh God! Those who gentalmens sing this praise of your the prayer give amussment to the real lotus eyes, they get heaven and then also get the pleasure and have salvation too.

मंत्र

ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नम: (स्वाहा)।

गुण

लक्ष्मी की प्राप्ति और व्यापार में लाभ होता है।

पद्यानुवाद

गाते हैं स्तोत्र यहाँ, खुशियाँ पाते यहाँ वहाँ–ऽऽ
जाते हैं वो जहाँ जहाँ–2
स्वर्ग सुखों को पाते हैं–इक दिन शिवपुर जाते हैं–
गुण को जो गाये–हो–3 सब कर्म मिटाए रे–ऽऽऽ

सब प्राणी के नेत्र पुष्प के कुमुद–कमल का करें विकास,
शोभा चन्द्र समां है जिनकी, स्वर्ग सम्पदा दे सम वास।
हर्षित मन से इस थुति को उर, धरते प्रतिदिन गाते हैं,
उत्तम भोग स्वर्ग में पाकर, मुक्ति महल को पाते हैं।।

जो भवि भक्ति भाव थुति करते, वे अपवर्ग–स्वर्ग सुख वरते।
अष्ट कर्म की धूल उड़ाकर, अजर–अमर अविरामी बनते।।
कुमुदचन्द्र गुरु ने यह गाया, जिस स्तोत्र में है फरमाया।
नाम रखा कल्याण मंदिर, पार्श्वनाथ जीवन प्रकटाया।।

पार्श्वप्रभु महिमा अगम, शिवसुख के करतार।
उनके चरण "विनम्र" मैं, नमहूँ बारम्बार।।

उपसंहार

पद्यानुवाद गुरु ने हमको सिखाया, आशीष दे खुशदिली हमको बनाया।
उनके चरण हृदय में रखकर नमूँ मैं, होकर विनम्र उर से वंदन करूँ मैं।।
अल्प बुद्धि से लिख दिया, कल्याणों का धाम, गुरु विराग आशीष दो, करूँ विनम्र प्रणाम।
अल्पज्ञान से जो लिखा, शोध पढ़ें श्रीमान्, सरस्वती आशीष दे, करूँ विनम्र प्रणाम।।

विशेष मंत्र

ॐ नट्ठट्ठमयट्ठाणे, पणट्ठकम्मट्ठनट्ठसंसारे।
परमट्ठनिट्ठिअट्ठे, अट्ठगुणाधीसरं वंदे।।

विधि

राई, नमक, नीम के पत्ते, कड़वी तुमड़ी का तेल तथा गूगल इन पाँचों चीजों को एकत्रित कर उक्त मंत्र से मंत्रित करे, पश्चात् पिछले पहर प्रतिदिन 300 बार हवन करने से योग, दुश्मन तथा कष्टों का नाश होता है।

ॐ ह्रीं परमशांतिविधायकाय श्रीजिनाय नम:।

कल्याणमन्दिर स्तोत्र पूजा

पूर्व-पीठिका
स्रग्धराछन्द

श्रीमद्गीर्वाणसेव्यं प्रवलतरमहा-मोहल्लातिमल्ल।
कान्तं कल्याणनाथं, कठिनशठमनो-जातमत्तेभसिंहम्।।
नत्वा श्रीपार्श्वदेवं, कुमुदविधुकृतो, रम्यकल्याणधाम्न।
स्तोत्रस्योच्चै विशालं, विधिवदनुपम, पूजनं कथ्यतेऽत्र।।

अनुष्टुप छन्द

पंचवर्णेन चूर्णेन, कर्त्तव्यं कमलं वरं।
वेदवार्धिकरं वेद्यां, कर्णिकामध्ययं बुधै:।।
धौतवस्त्रधर: प्राज्ञ: श्लेष्मादिव्याधिवर्जित:।
बाह्याभ्यन्तर-संशुद्धो, जिनपूजा-विधानवित्।।
गुरोराज्ञां विधायोच्चं, शिरस्या-दरतस्तत:।
पृष्ट्वा सङ्घपतिं पूजा-प्रारम्भ: त्रियेतेऽञ्जसा।।
आदौ गन्धकुटीपूजां, विधायामल-वस्तुभि:।
पञ्चानामर्हदादीनां, ततोऽर्चा परमेष्ठिनाम्।।
ततो गत्वा गुरोरग्रे, भारती-मुनि-पूजनं।
कृत्वेलाशुद्धिकार्यं च, क्रमेणागमकोविदै:।।
ततोऽम्लानां च सामग्री, कृत्वा सद्गी: बुधोत्तम:।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, कुर्यान्मन्त्र-पुरस्सरम्।।
एतत्पद्यसप्तकं पठित्वा स्वस्तिकस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

स्थापना (अनुष्टुप छन्द)

प्राणतस्व: समायातं, फणिलाञ्छन-संयुतम्।
वामामातृसुतं पार्श्वं, यजेऽहं तद्गुणाप्तये।।

ॐ ही श्रीं क्लीं महावीजाक्षरसम्पन्न! श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदय अवतर अवतर संवौषट्! इत्याह्वाननम्।

ॐ ही श्री क्लीं महावीजाक्षरसम्पन्न! श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:। इति स्थापनम्।

ॐ ही क्लीं महावीजाक्षरसम्पन्न! श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदयसमीपे सन्निहितो भव भव वषट्! इति सन्निधिकरणम्। परिपुष्पाञ्जलि क्षिपाम: ।

अष्टकम्
शिखरणि छंद

वियद्गङ्गासिन्धु-प्रमुखशुचितीर्थाम्बुनिवहै:।
शरच्चन्द्राभासै:, कनकमय-भृङ्गार-निहितै:।।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

स्फुरद्गन्धाहूत-प्रचुर-फणिसंरुद्ध-तरुजै।
रसै: कर्पूरास्यै र्निविडभवसन्तापहरणै:। यजेऽहं ।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

अखण्डै: शालीयै-रपगत-तुषै-रक्षतमयै:।
प्रपुञ्जै रानन्द-प्रणयजनकै र्नेत्रमनसाम्।।
यजेऽह पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् निर्वापामीति स्वाहा।

मरुद्दारूद्भूतै-र्विकचरसी-जातबकुलै:।
लवङ्गारामोद-भ्रमरमिलितै: पुष्पनिचयै:। यजेऽहं।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथा कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

सदन्नैरापूर्णं - प्रवरघृतपक्वान्नसहितै:।
रसाढ्यैर्नैवेद्यं-रतुलकाञ्चनपात्रविधृतै।।यजे.।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हविर्जातैः रम्यै-र्विदलितदिशाकीर्णतमसैः
प्रदीपैः माणिक्यै र्विशदकलधौतार्चिरमलैः।।यजेऽहं।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुकर्पूरोत्पत्रै - रमरतरु - सच्चन्दनभवैः।
सुधूपौघैः-श्लाघ्यै-र्मिलदलिगणागुञ्जितरवैः।।यजेऽहं।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सुपक्वैः नारङ्ग क्रमुकशुचिकूष्माण्डकरकैः।
फलै र्मोचाम्राद्यै र्विबुधशिवसम्पद्वितरणैः।।यजेऽहं।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

जलै र्गन्धद्रव्यै र्विशदसदकैः पुष्पचरुकैः।
सुदीपैः सद्धूपैः र्बहुफलयुतैरर्घ्यनिकरैः।
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निवपामीति स्वाहा।

जयमाल
(उपजाति छन्द)

शताब्दजीवी समशत्रुमित्रो, हरित्प्रभाङ्गो हतमारदर्पः।
सपादचापद्वयतुङ्गकायो, यस्तं सदा पार्श्वजिनं नमामि।।

(भुजंग छंद)

निराभूषशोभं, परिध्वस्तलोभं,
चिदानन्दरूपं, नतानेकभूपं।
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं,
त्रिषड्दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।

शिवं सिद्धकार्यं, वरानन्ततुर्यं,
रमानाथमीशं, जितानङ्गपाशम्।।स्तुवे.।।
शतेन्द्रार्च्यपादं, स्फुरद्दिव्यनादं,
गणाधीशमाद्यं, लसद्देववाद्यम्।।स्तुवे.।।
हरं विश्वनेत्रं, त्रिशुभ्रातपत्रं,
क्षुधाबह्निनीरं, द्विधासङ्गदूरम्।।स्तुवे.।।
दिशाचेलवन्तं, वरं मुक्तिकान्तं,
निरस्तारिमोहं, पुरु सौख्यगेहम्
स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं,
त्रिषड् दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्।।
जराजन्ममुक्तं, वरानंदयुक्तं,
हतक्रोधमानं, कृतज्ञानदानम्।।स्तुवे.।।
अविद्यापहारं, सुविद्यागभीरं,
स्वयंदीप्तिमूर्तिं, जगत्प्राप्तकीर्तिम्।।स्तुवे.।।
यतिवरवृषचन्द्रं, चित्कलापूर्णचन्द्रं।
विमलगुणसमृद्धं, नम्रनागामरेन्द्रम्।।
जिनपतिमहिधारं, दुःखसन्तापहारं।
भजति नमति सारं, सौख्यसारं लभेत।।

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जयमालायेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

सर्वजीवदयायुक्तः, सर्वलौकान्तिकार्चितः।
पार्श्वदेवः श्रियं दद्यात्, नित्यं पूजाविधायिनाम्।।

।। इत्याशीर्वादः।।

(शालिनी छंद)

काशीदेशे वाराणसी-पुरेशो, यो बालत्व प्राप्तवैराग्यभाव:।
देवेन्द्राद्यै: कीर्तितं तं जिनेन्द्र, पूर्णार्घ्येन प्रार्चये वार्मुखेन।।
ॐ ह्रीं सर्वगुणसम्पन्नाय क्लींमहाबीजाक्षरसहिताय श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यम्।

समुच्चय जयमाल

(मालिनी छंद)

शतमखनुतपादं, शान्तकर्मारिचक्रं,
शमदमयमगेहं, शङ्करं सिद्धकार्यम्।
सरसिजदलनेत्रं, सर्वलौकान्तिकार्च्यं,
सकलगुणनिधानं, संस्तवे पार्श्वदेवम्।।

(वनवासिकाछन्द: अयस श्रीछन्द: अथवा सान्द्रपदछन्द:)

भवजलनिधि-पततामुत्तरणं, देवमनन्तगुणं जनशरणं।
चिद्रूपं बहुगुणसमुदायं, उत्तमगुणगण-हतभवपाशं।।
रम्यारम्य-गुणस्तवनीयं, कर्मबन्ध-निर्बन्धमजेयं।
दुष्टोपद्रव नाशन-वीरं, सुध्येयं, जितमन्मथशूरं।।
गरिमाक्रोधमहानल-कुशदं, हृदि मृग्यं महतामतिविशदं।
कर्मदाहतीव्राग्नि-मतुल्यं, गतपरमात्मपदं गतशल्यं।।
संसृतिविषहरणामृत-कूपं, पदनतनाग-नरामर-भूपं।
तुङ्गाशोक-महीरुह-सरितं, तद्गमदवष्टियतं सुरमहितं।।
योजनमितदिव्यध्वनिसुनदं, सुरचामर-वीज्यं हतविपदं।
पीठत्रय-नायकमघमथनं, हरितविभावलय गुणसदनं।।
दानवारिदुन्दुभि-सद्ध्वानं, श्वेतातपवारण-गुणमानं।
मणिहेमार्जुन-शालत्रितयं, पदनतभक्त-जनावनसुदयं।।
पृष्ठलग्न-जनतारण-दक्षं, विस्मयनीयं हतमदकक्षं।
हतकमठोत्थापित-बहुधूलिं, जित मुसलोपम-जलधारालिं।।

हतपैशाचिक विप्लवजालं, नतधर्मिष्ठजनं गुणमालं।
पूतनामधेय शिवभाजं, वरपवित्रपादं जिनराजं।।
दर्शनीयमपहत घनपापं, भक्तिहीन-भविमध्यमरूपं।
भक्तिनम्रजन-वत्सलवन्तं, भूरिभाग्य-दायकमरिहन्तं।।
लोकलोक पदार्थविवेद्यं, पदनतसुकृति-जनंरभिवन्द्यं।
जन्मजरा-मरणच्युतदेवं, 'कुमुदचन्द्र' यतिकृतपदसेवम्।।

(धत्ता)

विश्वादिसेनान्वयव्योमतिग्मं, सद्धव्यवारांनिधिधर्मचन्द्रं।
देवेन्द्र सत्कीर्तित-पादयुग्मं, श्रीपार्श्वनाथंप्रणमामिभक्त्या।।
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं क्रूरकमठोपद्रवजिनाय श्रीपार्श्वनाथाय समुच्च जयमालायेर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शार्दूल विक्रीडित छंद

य: प्राग्विप्र इभोऽनु द्वादशदिवि, स्वर्गी तत: खेचर:।
पश्चादच्युतकल्पजो निधिपति:, ग्रैवेयके मध्यमे।।
इन्द्रोऽभूत्तत ईशतां शुभवच:, आनन्दनामानते।
ग्रीर्वाणस्तत उग्रवंशतिलक: पार्श्वट् स वो रक्षातत्।।
।।इत्याशीर्वाद:, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

(अनुष्टुप छंद)

गुणे वेदाङ्गचन्द्राब्दे शाके फाल्गुनमासके।
कारंजाख्यपुरे नूनं, पूजेयं सुविनिर्मिता।।

इति श्रीवलात्कार-गच्छीयभट्टारकेन श्री महेवेन्द्रकीर्तिना विरचिता।
।। कल्याणमंदिर पूजा समाप्ता ।।

आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज द्वारा रचित एवं संकलित साहित्य

भक्तामर स्तोत्र

तन्मयता की बेला
आचार्य विनम्रसागर

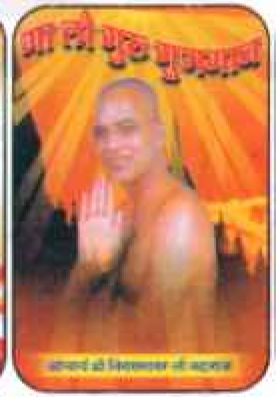

होनी अनहोनी
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

जब मिल जायें रे
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

अनुभूतियों के भँवर
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

आस्था के स्वर
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

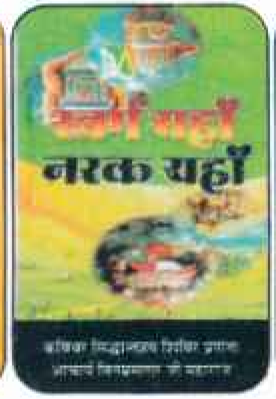
नरक यहीं
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

दैनिक कर्त्तव्य

गुनगुनाता संदेश
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

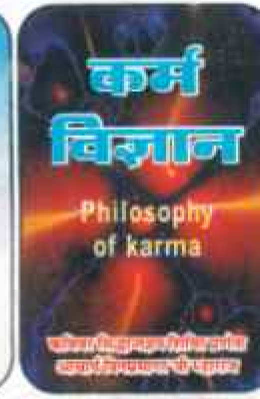
कर्म विज्ञान
Philosophy of karma

बूंद बूंद में सागर
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

जिन सहस्र नाम स्तोत्र
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

भक्ति की छलक
कविवर सिद्धान्तज्ञ शिविर प्रणेता
आचार्य विनम्रसागर जी महाराज

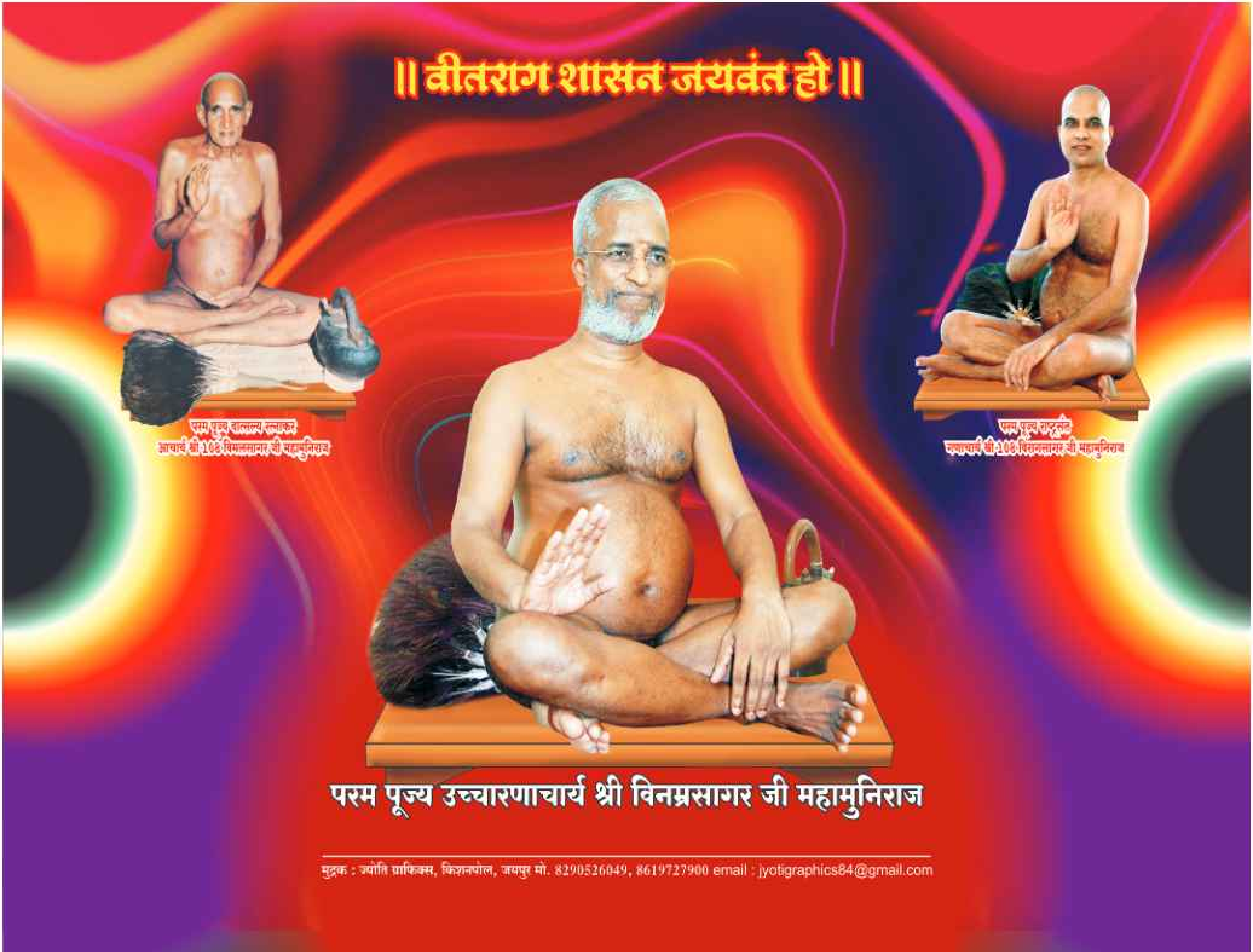
|| वीतराग शासन जयवंत हो ||
परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज
मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900 email : jyotigraphics84@gmail.com